THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

जैन

स्वाध्यायमाला

द्रव्य सहायक—

श्रीमान् कल्याणमलजी भुरालालजी पालड़ेचा
धनोप (वाया–भिणाय, जिला–अजमेर)

प्रकाशक—

अखिल भारतीय साधुमार्गी
जैन संस्कृति रक्षक संघ
सैलाना (म. प्र)

प्रथमावृति
२५००

वीर संवत् २४९१
विक्रम सं. २०२१
सन् १९६५

मूल्य २) रुपये

स्वाध्याय संघ के सदस्यों को १५० प्रतियाँ भेट

मुद्रक—श्री जैन प्रिंटिंग प्रेस, सैलाना (म. प्र.)

निवेदन

हमारे समाज मे आगमो के मूलपाठ का स्वाध्याय करने की रीति चालू है। त्यागी वर्ग के अतिरिक्त उपासको मे से भी कई धर्मप्रिय बन्धु, माताएँ और बहिने दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, सुखविपाक और नन्दीसूत्र आदि आगमो के मूल पाठ का स्वाध्याय तथा स्तोत्र स्तुति का पाठ करती है। कुछ प्रशस्त आत्माओ के तो ऐसा नियम होता है कि प्रति दिन अमुक परिमाण मे मूलपाठ का स्वाध्याय करना ही। यद्यपि ऐसी प्रशस्त आत्माएँ कम ही हैं और बहुत बडा भाग प्रात.काल मे समाचार पत्र पढने या रेडियो न्यूज तथा गायन सुनने का शोकीन हैं, फिर भी धर्मप्रिय आत्माएँ भी हैं। वे आगम स्वाध्याय करती है व उनके लिए पुस्तक का साधन होना आवश्यक है।

स्वाध्याय पाठमाला की विभिन्न स्थानो से कई पुस्तके निकली है और उनका उपयोग हुआ है, फिर भी वर्त्तमान समय मे वैसी पुस्तक अलभ्य होगई और हमारे सामने कई दिनो से मांग आ रही थी, किंतु हम अन्य कामो मे लगने से टालते रहे। किंतु गत जुलाई मे खीचन निवासी स्व श्रीमान् सेठ अगरचंदजी सा. गोलेच्छा की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती हुलासबाई की ओर से उनकी सुपुत्री विदुषी सुश्राविका श्रीमती लीलाबाई एव पौत्र श्री पूर्णचन्द्रजी (कोयम्बटूर) की प्रेरणा हुई। उन्होने बहुश्रुत श्रमण श्रेष्ठ प. मुनिराज श्री समर्थमलजी म सा के विद्वान् सुशिष्य पं श्री घेवरचंदजी म वीरपुत्र द्वारा पूर्व की संशोधित प्रति मुझे भेजी और उस पर से मुद्रण प्रारंभ हुआ। किंतु उस संशोधित प्रति का पूरा उपयोग नही हो सका।

प्रूफ देखने का ध्यान रखा गया, किंतु कार्य की अधिकता आदि से कुछ खास अशुद्धियाँ दिखाई दी। उनका शुद्धि पत्र दिया गया है।

इस पुस्तक की १५० प्रतियाँ श्रीमान् सेठ कल्याणमलजी भुरालालजी पालडेचा धनोप (वाया–भिणाय, जिला–अजमेर) निवासी ने अग्रिम क्रय करके जैन स्वाध्याय संघ के सदस्यो को भेट स्वरूप प्रदान की। अतएव धन्यवाद।

स्वाध्याय एक आभ्यन्तर तप है। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होकर सम्यग्ज्ञान मे वृद्धि होने का साधन है। इससे धर्म मे स्थिरता होती है। भावपूर्वक किये हुए स्वाध्याय से आत्मा पवित्र होती है। अतएव मन की अस्थिरता को दूर कर शात भाव से अर्थ मे ध्यान रखते हुए स्वाध्याय करना चाहिए।

साधुमार्गी जैन सघ, सम्यग्ज्ञान का प्रचार करने के लिए आगम साहित्य का प्रकाशन कर रहा है। अबतक छोटी बडी १५ पुस्तको का प्रकाशन कर चुका है और अब भगवती सूत्र भाग २ का कार्य चालू किया है। यदि संघ को धर्मप्रिय उदार महानुभावो का सहयोग प्राप्त होता रहा और अनुकूलता रही, तो यह विशेषरूप से सेवा करता रहेगा।

वीर सं २४९१
चैत्र कृ १ वि. सं. २०२१
ता. १८–३–६५

मानकलाल पोरवाड़–अध्यक्ष
रतनलाल डोशी–प्रधान मन्त्री
बाबूलाल सराफ–मन्त्री
जशवंतलाल शाह–मन्त्री

शुद्धि पत्र

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	६	न इक्कमे	नाइक्कमे
३३	१०	विसोहिया	विसुत्तिया
३३	१२	असस‌ओ	य सस‌ओ
३४	२१	सव्विंदिय	सव्विंदिय
३५	५	घट्टिताणि य	घट्टियाणिय
३५	१२	हिंगुलुए	हिंगुलए
३६	१	भत्त-सेस	भुत्तसेसं
३७	७	सजाण	सजयाण
३९	१९	पडिच्छिन्नम्मि	पडिच्छन्नम्मि
४०	१२	सम्ममालोय	सम्ममालोइयं
४१	१५	कारण-ममुपण्णे	कारणमुपण्णे
४२	५	चिट्ठत्ताण	चिट्ठित्ताण
४४	९	विविन्न	विवण्ण
४५	५	[illegible]	पुइय
४६	२	सपन्न	सपन्नं
४८	३	सत्ति मे	सतिमे
५०	२[illegible]	आ दी	आसंदी
५२	२	उउपसन्ने	उउप्पसण्णे
"	२०	तु	ति
५५	२	वेइलोयाइं	वेलोइयाइ
५५	२२	त	व
५५	२३	मव्वुकसघ	सव्वुक्कसं
५६	११	आसाहु	असाहु
५७	७	आयारपण्हिी णाम अट्ठम	सुवक्कसुद्धी णाम सत्तम
५९	२	सुव्व	सव्वं
५९	१५	अरह	अरइ

प्राकृत भारती
जयपुर

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६०	१	खिप्पमप्पाण वीय,	खिप्पमप्पाण, वीय
६६	१४	ण	त
६८	१७	सपवडिज्जइ	सपडिवज्जइ
६८	१९	हियाणुसामण	हियाणुसाम्मण
७२	३	अणोहाणुप्पेहिणा	ओहाणुप्पेहिणा
७२	१५	वहु	वहु
७३	२०	दाढुद्धियं	दाढुड्ढिय
७३	२१	इवेव	इहेव
७४	७	उविंतिवाया	उवतवाया
७४	२१	अप्पावही	अप्पोवही
७५	१०	सवच्छर	सवच्छर
७५	१२	संपिक्ख	सपेहए
७७	१२	रहम्म	रहम्से
७७	१४	उरूणा	उरुणा
७९	७	चेवडा	चवेडा
७९	१९	निच्चे	निच्च
९२	१९	भुज्जई	भुजइ
९४	२२	उवज्जइ	उववज्जई
९७	१२	भवय	भयव
९८	२०	इणमव्वी	इणमव्ववी
१०२	१४	नमि रायरिससि	णमी रायरिसी
१०३	३	पढवि	पुढवी
१०६	१	आणगारस्स	अणगारस्स
११६	२	विउव्ववी	विउव्वी
११६	१६	तहोमुयारो	तहेमुचारो
११७	१	आसासय	असासय
११९	९	तणुव	तणुय

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११९	९	मत्तो	मुत्तो
१२१	१५	जीवय	जीविय
१२८	४	उप्पजई	उपज्जइ
१३४	२२	माहिसी	महिसी
१३५	४	देवे	देवो
"	१८	वायण	वयण
१३७	२१	सकुमालो	सुकुमालो
"	२२	हु सी	हुसी
१३८	९	समत्तण	समणत्तणं
"	२१	दुक्खभायणिय	दुक्खभयाणिय
"	२२	चउरते	चाउरते
१४३	६	सिद्धि	सिद्धि
"	१६	अणुसर्द्धि	अणुसिद्धि
१४६	१५	अ णगारियं	अणगारिय
१५१	१६	गयमा	गोयमो
"	१७	झोसोयरो	झसोयरो
१५३	६	रेवययम्मि	रेवययम्मि
"	२१	पासिए	प्पसाहिए
१५५	७	तद्दव्वणिसरो	तद्दव्वऽणिस्सरो
१६४	२०	परिभायम्मि	परिभोयम्मि
१६५	१	दुहवो-वि	दुहओ वि
१६६	२	ुत्ता	वुत्ता
१६८	१६	अलोलुय	अलोलुय
१६९	२१	[illegible]	सुक्को
१७१	१०	चउथीइ	चउत्थीइ
१७६	१४	खलकिज्ज	खलुकिज्जं
१७८	[illegible]	नांयव्वा	[illegible]

प्राकृत भारती अकादमी
क्रमांक ....

पृष्ट	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	१७	आहरपच्च	आहारपच्च
१८७	६	पच्चखाणेण	पच्चवक्खाणेण
१८६	१६	भते !	ण भते !
१६२	२०	सागरोवउत्ते	सागारोवउत्ते
१६६	१३	इगिय	इगिय
२००	१३	ोसेण	दोसेण
२०४	१६	समोयओ	समो य जो
२२८	१६	मुहत्त	मुहुत्त
२३३	१४	जलयरायण	जलयराण
२३८	६	पढम्मि	पढमम्मि
२३६	१४	चेवरूवी	चेवारूवी
२४७	२२	चडुलिय	चडुलिय
२४६	२३	अगलसेढीमित्ते	अगुलसेढीमित्ते
२५३	६	सजयासजय	सजयासजय
२५३	१४	गब्भवक्कतिमणुस्साण	गब्भवक्कतियमणुस्साण
२६१	२	सद्दीत्ति	सद्दोत्ति
२६४	१०	खओसमेण	खओवसमेण
२६४	१३	निरिक्खय	निरिक्खिग
२६८	१६	अकिरियाईण	अकिरियावाईण
२६६	१	अगट्ठायाए	अगट्ठयाए
२७१	४	अज्जयणसए	अज्झयणसए
२७१	१२	नायधम्मकहासु	नायाधम्मकहासु
२७२	१८	अगुओगदारा	अणुओगदारा
२७८	६	मासाण	आसाण
२८४	१८	अब्भणुणाए	अब्भणुण्णाए
२८६	६	आयामणभूमिए	आयावणभूमिए
"	२०	सोलम	सोलसम

पृष्ट	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९१	२२	उज्भियधम्ममयं	उज्भियधम्मियं
२९९	९	अज्भयण्णस्स	अज्भयणस्स
"	१५	वत्तीस्सओ	वत्तीसओ
३१२	२०	मतिश्रुतावघयो	मतिश्रुतावधयो
३२६	१	जगत्स्त्रितयो	जगत्त्रितयो
३२७	१८	परस्तात्	पुरस्तात्
३२८	२३	कान्तम	कान्तम्
३३०	१४	वद्धक्रमः	वद्धक्रमः
३३२	९	षेष	शेष
"	१८	प्रपयति	प्ररूपयति
३३५	११	सितीऽपि	सतोऽपि
३३७	८	निजप्टप्ठलग्नान्	निजपृष्टलग्नान्
"	१९	मदभ्रमीम	मदभ्रभीमं
३३८	२१	विश्रुतोऽसि	विश्रृतोऽसि
३३९	३	विधेय	विधाय
"	२१	प्राभास्वरा	प्रभास्वरा
३५३	२	वलतीर	बलती
३६६	१८	पलेटी	लपेटी
३७५	२३	वयासी	वयासी
३७६	१८	त ा	तथा

इम प्रकार अशुद्धियाँ रहगई है। कई अशुद्धियाँ दृष्टिदोप से और कई छपाई के समय होगई। इसके सिवाय कही कही मात्रा और अनुस्वार बरावर नही उठे हैं। कृपया पहले अपनी प्रति शुद्ध करके फिर स्वाध्याय करे।

टाइप सम्बन्धी असुविधा से अनेक स्थानो पर ट्ठ के स्थान पर ट्ठ, ड्ढ के स्थान पर ड्ढ किया है। वास्तव मे इन दो रूपो मे एक ही उच्चारण के सयुक्त अक्षर हैं।

विषयानुक्रमणिका—

१	सुखविपाक सूत्र	पृ.	१
२.	उववाईसूत्र की २२ गाथाएँ		११
३	पुच्छिस्सुण		१३
४.	मोक्षमार्ग		१६
५.	दशवैकालिक सूत्र		२०
६.	उत्तराध्ययन सूत्र		७६
७.	नन्दी सूत्र		२४१
८	अणुत्तरोववाइयदसा सूत्र		२८३
९.	चउसरणपइण्णा		३०१
१०	वैराग्यकुलकम्		३०७
११.	सुभाषित		३०९
१२.	तत्त्वार्थसूत्र		३१२
१३.	भक्तामर स्तोत्र		३२३
१४	कल्याणमन्दिर स्तोत्र		३३२
१५.	रत्नाकर पंचविंशति		३४०
१६	प्रार्थना पचविंशति		३४२
१७.	चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम्		३४४
१८	मेरी भावना		३४७
१९.	लघु साधु-वंदना		३४९
२०	बड़ी साधु-वदना		३५०
२१.	वृहदालोयणा		३६०
२२.	वहुश्रुत श्रीसमर्थ गुणाष्टक ५		३८१

अस्वाध्याय

निम्न लिखित चौतीस कारण टालकर स्वाध्याय करना चाहिये।

आकाश सम्बन्धी १० अस्वाध्याय	कालमर्यादा
१ वडा तारा टूटे तो	एक प्रहर
२ उदय अस्त के समय लाल दिशा	जबतक रहे
३ अकाल मे मेघगर्जना हो तो	दो प्रहर
४ " बिजली चमके तो	एक प्रहर
५ " बिजली कडके तो	दो प्रहर
६ शुक्ल पक्ष की १-२-३ की रात	प्रहर रात्रि तक
७ आकाश मे यक्ष का चिन्ह हो	जबतक दिखाई दे।
८-९ काली और सफेद धूअर	जबतक रहे
१० आकाश मण्डल धूलि से आच्छादित हो	"

औदारिक सम्बन्धी १० अस्वाध्याय

११-१३ हड्डी, रक्त और मास। ये तिर्यञ्च के ६० हाथ के

भीतर हो। मनुष्य के हों, तो १०० हाथ के भीतर हो। मनुष्य की हड्डी यदि जली या धुली न हो तो १२ वर्ष तक।

१४ अशुचि की दुर्गन्ध आवे या दिखाई दे तब तक

१५ श्मशान भूमि– सौ हाथ से कम दूर हो तो

१६ चन्द्रग्रहण–खंड ग्रहण मे ८ प्रहर, पूर्ण हो तो १२ प्रहर

१७ सूर्य ग्रहण " १२ " १६ "

१८ राजा का अवसान होने पर, जबतक नय। राजा घोषित न हो।

१९ युद्ध स्थान के निकट जब तक युद्ध चले।

२० उपाश्रय मे पचेन्द्रिय का शव पडा हो, जब तक पडा रहे।

२१–२५ आषाढ, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और चैत्र की पूर्णिमा दिन रात

२६–३० इन पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा "

३१–३४ प्रात, मध्यान्ह, सध्या और अर्द्ध रात्रि १–१ मुहूर्त।

उपरोक्त अस्वाध्याय को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए। खुले मुँह नही बोलना तथा दीपक के उजाले मे नही वाचना चाहिए।

नोट——मेघ गर्जनादि में अकाल, आर्द्रा नक्षत्र से पूर्व और स्वाति के बाद का माना गया है।

श्री जैन स्वाध्यायमाला

श्री सुखविपाक सूत्र

(१) तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे णाम णयरे होत्था। रिद्धित्थिमियसमिद्धे गुणसिलए चेइए। सुहम्मे अणगारे समोसढे। जंबू जाव पज्जुवासइ एव वयासी–जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं दुहविवागाण अयमट्ठे पण्णत्ते। सुहविवागाण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? तएण से सुहम्मे अणगारे जबू अणगार एवं वयासी–एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं सुहविवागाण दस अज्झयणा पण्णत्ता। तजहा–१ सुबाहू २ भद्दणदी य ३ सुजाए ४ सुवासवे ५ तहेव जिणदासे ६ धणवई य ७ महब्बले ८ भद्दणदी ९ महचदे १० वरदत्ते।

जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? तएणं से सुहम्मे अणगारे जबू अणगारं एवं वयासी–एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएणं हत्थिसीसे

णामं णयरे होत्था । रिद्धित्थिमियसमिद्धे । तत्थण हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए एत्थण पुप्फकरडए णामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे, रम्मे, णदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । तत्थ ण कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था दिव्वे ।

तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था । महया हिमवते, रायवण्णओ । तस्स ण अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे यावि होत्था । तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइं तसि तारिसगसि वासभवणसि सीहं सुमिणे जहा मेहजम्मण तहा भाणियव्व । णवर सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिसगसयाइ करेति अब्भुग्गयमूसियपहसिय विव भवण । एवं जहा महब्बलस्स रण्णो । णवरं पुप्फचूला पामोक्खाण पचण्ह रायवरकण्णासयाण एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ तहेव पचसयाइ दाओ जाव उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणमत्थेहिं जाव विहरइ। तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे । परिसा णिग्गया । अदीणसत्तू जहा कोणिए णिग्गए । सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेण णिग्गए । जाव धम्मो कहिओ, राया परिसा य पडिगया ।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे ५ उट्ठाए उट्ठेइ जाव एव वयासी-सद्दहामि णं भंते ! णिग्गयं पावयण जाव जहा ण देवाणुप्पियाण

अतिए बहवे राईसरसत्थवाहपभइओ मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया। णो खलु अहं तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइं दुवालसविहं गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह।

तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पंचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तेण कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णाम अणगारे जाव एव वयासी,—
अहो ण भते! सुबाहुकुमारे १ इट्ठे इट्ठरूवे २ कते कतरूवे ३ पिये पियरूवे ४ मणुण्णे मणुण्णरूवे ५ मणामे मणामरूवे सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे, बहुजणस्सवि य ण भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ सोमे जाव सुरूवे। साहुजणस्सवि य ण भते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे। सुबाहुणा भंते! कुमारेण इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णागया? को वा एस आसी जाव किं णामए वा किं गोत्तए वा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयण सोच्चा जेण इमेयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया।

एवं खलु गोयमा! तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जंबूद्दीवे

दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णयरे रिद्धित्थिमियसमिद्धे वण्णओ। तत्थ ण हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णाम गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए। तेणं कालेण तेणं समएणं धम्मघोसे णाम थेरे जाइसपण्णे जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धि संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्सवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गह उग्गिण्हइ उग्गिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

तेण कालेण तेण समएण धम्मघोसाण थेराण अतेवासी सुदत्ते णाम अणगारे उराले जाव तेउलेसे मास मासेण खममाणे विहरइ। तएण सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ। जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसं थेर आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिह अणुपविट्ठे। तएण से सुमुहे गाहावई सुदत्त अणगार एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करित्ता सुदत्तं अणगार सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वंदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेण विउलं असण पाण खाइम साइमं पडिलाभिस्सामि त्ति कट्टु तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे।

तए ण तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायग-

सुद्धेण पडिग्गाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे ससारे परित्तीकए। मणुस्साउए णिबद्धे। गिहंसि य से इमाइं पच दिव्वाइ पाउभूयाइ। त जहा–१ वसुहारा वुट्ठा २ दसद्धवण्णे कुसुमे णिवाइए ३ चेलुक्खेवे कए ४ आहयाओ देवदुदुहिओ ५ अतरा वि य ण आगाससि अहो दाण अहो दाण घुट्ठे य। तए ण हत्थिणाउरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ ४ धण्णे ण देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई जाव त धण्णे ण देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई।

तए ण से सुमुहे गाहावई बहूइ वासाइ आउय पालेइ पालित्ता कालमासे काल किच्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे। तए ण सा धारिणी देवी सयणिज्जसि सुत्तजागरा उहीरमाणी उहीरमाणी तहेव सीहं पासइ। सेसं त चेव जाव उप्पि पासाए विहरइ। त एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा कुमारेणं इमे एयारूवा माणुस्सरिद्धि लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया। पभू ण भते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए? हता पभू। तएण से भगवं गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

तए ण से समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ णयराओ पुप्फकरंडयाओ उज्जाणाओ कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ। तए ण से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए ण

से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणं भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथरेइ संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पण्णे–धण्णा णं ते गामा-गर-णगर जाव सण्णिवेसा जत्थं णं समणे भगवं महावीरे विहरइ। धण्णा णं ते राइसर जाव सत्थवाह पभइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, धण्णा णं ते राइसर जाव सत्थवाह पभइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणंति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा, राया

णिग्गया। तए णं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा णिग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिगया।

तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठे। जहा मेहो तहा अम्मा-पियरो आपुच्छइ। णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबभयारी। तए ण से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमतवोविहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइ वासाइं सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाइ छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे।

से ण ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिइ, लभिहित्ता केवलंबोहि बुज्झिहिइ बुज्झिहित्ता तहारूवाण थेराण अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ। से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्ण-परियाग पाउणिहिइ, पाउणिहित्ता आलोइयपडिक्कते समाहि-पत्ते कालमासे काल किच्चा सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। से ण ताओ देवलोगाओ माणुस्सं जाव पव्वज्जा। बंभलोए। तओ माणुस्स। महासुक्के। तओ माणुस्सं। आणए देवे। तओ माणुस्स तओ आरणे। तओ माणुस्स (तओ) सव्वट्ठसिद्धे।

से ण तओ अणतर चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढे जहा दढपइण्णे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वा-

हिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ । एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, त्तिबेमि ।

॥ इइ सुहविवागस्स पढमं अज्झयण सम्मत्तं ॥१॥

(२) बिईयस्स उक्खेवो । एव खलु जबू ! तेण कालेण तेणं समएणं उसभपुरे णाम णयरे थूभकरडग उज्जाण । धण्णो जक्खो । धणवहो राया, सरस्सई देवी । सुमिणदसण, कहण, जम्म बालत्तणं, कलाओ य जोव्वणे पाणिगहण, दाओ पासाया य भोगा य जहा सुबाहुस्स णवर भद्दणंदी कुमारे । सिरीदेवी पामोक्खाणं पचसया । सामिस्स समोसरण सावगधम्म पडिवज्जे पुव्वभव पुच्छा । महाविदेहवासे पुडरीगिणि णगरीए विजए कुमारे जगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिबद्धे, इह उववण्णे । सेस जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमतं करेहिइ । एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण सुहविवागाण बिईयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ।

॥ इइ सुहविवागस्स बीय अज्झयण सम्मत्त ॥२॥

(३) तईयस्स उक्खेवो । वीरपुरे णामं णयरे । मणोरमे उज्जाणे वीरकण्हे जक्खे, मित्ते राया, सिरीदेवी सुजाए कुमारे । बलसिरी पामोक्खाणं पचसयाकण्णा । सामी समोसरिए । पुव्वभव पुच्छा । उसुयारे णयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे

पडिलाभिए, मणुस्साउए णिवद्धे इह उववण्णे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।५।

।। इइ सुहविवागस्स तईयं अज्झयण सम्मत्त ।३।

(४) चउत्थस्स उक्खेवो । विजयपुरे णयरे । णंदणवणे उज्जाणे । असोगो जक्खो । वासवदत्ते राया । कण्हसिरी देवी । सुवासवे कुमारे। भद्दा पामोक्खाण पंचसया जाव पुव्वभव पुच्छा । कोसंबी णयरी । धणपालो राया । वेसमणभद्द अणगारे पडिला-भिए, इह उववण्णे जाव सिद्धे ।

।। इइ सुहविवागस्स चउत्थ अज्झयण सम्मत्त ।।४।।

(५) पंचमस्स उक्खेवो । सोगंधिया णयरी । णीलासोगे उज्जाणे सुकालो जक्खो । अपडिहय राया, सुकण्हादेवी, महचंदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो । तित्थ-यरागमण । जिणदासो पुव्वभवपुच्छा । मज्झमिया णयरी मेह-रहे राया । सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

।। इइ सुहविवागस्स पंचम अज्झयणं सम्मत्त । ५।।

(६) छट्ठस्स उक्खेवो । कणगपुरे णयरे । सेयासोए उज्जाणे । वीरभद्दो जक्खो । पियचंदे राया । सुभद्दादेवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरीदेवी पामोक्खाण पंचसया । तित्थयरागमणं धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभव पुच्छा । मणिवइयाणयरी । मित्तेराया, संभूइविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।।६।।

।। इइ सुहविवागस्स छट्ठ अज्झयणं सम्मत्त ।।६।।

(७) सत्तमस्स उक्खेवो । महापुरे णयरे । रत्तासोगे

उज्जाणे। रत्तपाओ जक्खो। बले राया सुभद्दादेवी। महाबले कुमारे, रत्तवई पामोक्खाण पचसया। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभव पुच्छा। मणिपुरे णयरे। णागदत्ते गाहावई, इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ इइ सुहविवागस्स सत्तमं अज्भयण सम्मत्त ॥७॥

(८) अट्ठमस्स उक्खेवो। सुघोसे णयरे। देवरमणे उज्जाणे। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। रत्तवई देवी। भद्दणदी कुमारे। सिरीदेवी पामोक्खाण पचसया जाव पुव्वभव पुच्छा। महाघोसे णयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे। पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ इइ सुहविवागस्स अट्ठमं अज्भयणं सम्मत्त ॥८॥

(९) णवमस्स उक्खेवो। चपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवई देवी। महचदे कुमारे जुवराया। सिरीकता पामोक्खाण पंचसया जाव पुव्वभव पुच्छा। तिगिच्छा णयरी। जियसत्तुराया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ इइ सुहविवागस्स णवमं अज्भयण सम्मत्तं ॥९॥

(१०) जइ ण भंते! दसमस्स उक्खेवो। एव खलु जबू! तेण कालेण तेणं समएण साइए णाम णयरे होत्था। उत्तरकुरू उज्जाणे, पासामिओ जक्खो। मित्तणंदी राया। सिरीकता देवी। वरदत्ते कुमारे वीरसेणा पामोक्खाणं पचदेवी सया। तित्थयरागमणं सावगधम्म पुव्वभव पुच्छा। सयदुवारे णयरे। विमल-

वाहणे राया। धम्मरुइ अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिवद्धे इह उववण्णे। सेस जहा सुबाहुस्स चिंता जाव पवज्जा कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे। तम्रो महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्जिहिइ ५। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण सुहविवागाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। सेवं भंते, सेवं भंते त्तिबेमि।

॥ इइ सुहविवागस्स दसम अज्झयण सम्मत्त ॥

णमो सुयदेवयाए। विवागसुयस्स दो सुयखधा दुहविवागे य सुहविवागे य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिजति। एव सुहविवागे वि सेस जहा आयारस्स ॥१०॥

॥ इति सुखविपाक सूत्रम् ॥

... भारती प्रका... क्रमांक 9758 ... जयपुर

उववाइ सूत्र

की

बाईस गाथाएँ

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ? ।
कहिं बोंदि चइत्ताण, कत्थ गतूण सिज्झइ ॥१॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोंदि चइत्ताण, तत्थ गतूण सिज्झइ ॥२॥
ज सठाण तु इह भवे, चयंतस्स चरिमसमयंमि ।
आसी य पएसघण, त संठाण तहिं तस्स ॥३॥
दीह वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।

तत्तो तिभागहीणं, सिद्धाणोगाहणा भणिया ।४।
तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया ।५।
चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोधव्वा ।
एसा खलु सिद्धाण, मज्झिमओगाहणा भणिया ।६।
एक्का य होइ रयणी, साहिया अगुलाइं अट्ठ भवे ।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया ।७।
ओगाहणाए सिद्धा, भवत्तिभागेण होइ परिहीणा ।
संठाणमणित्थथं, जरामरणविप्पमुक्काण ।८।
जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणता भवक्खयविमुक्का ।
अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ।९।
फुसइ अणते सिद्धे, सव्वपएसेहिं णियमसो सिद्धो ।
ते वि असखेज्जगुणा, देसपएसेहिं जे पुट्ठा ।१०।
असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दसणे य णाणे य ।
सागारमणागार, लक्खणमेय तु सिद्धाण ।११।
केवलणाणुवउत्ता, जाणति सव्वभावगुणभावे ।
पासति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठिअणंताहिं ।१२।
णवि अत्थि माणुसाणं, त सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं मोक्ख, अव्वाबाह उवगयाणं ।१३।
जं देवाण सोक्ख, सव्वद्धापिडियं अणंतगुण ।
ण य पावइ मुत्तिसुह, णताहिं वग्गवग्गूहिं ।१४।
सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिडिओ जइ हवेज्जा ।
सोऽणतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा ।।१५।।

जह णाम कोइ मिच्छो, णगरगुणे बहुविहे वियाणतो ।
ण चएइ परिकहेउ, उवमाए तहिं असंतीए ।१६।
इय सिद्धाणं सोक्ख, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्म ।
किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ।१७।
जह सव्वकामगुणिय, पुरिसो भोत्तूण भोयण कोई ।
तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ।१८।
इय सव्वकालतित्ता, अतुल णिव्वाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमव्वाबाह, चिट्ठति सुही सुहं पत्ता ।१९।
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परंपरगयत्ति ।
उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य ।२०।
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबधणविमुक्का ।
अव्वाबाह सुक्ख, अणुहोति सासय सिद्धा ।२१।
अतुलसुहसागरगया अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता ।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठति सुही सुह पत्ता ।२२।

पुच्छिस्सुणं

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिया य ।
से केइ णेगतहियधम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए ।१।
कहं च णाणं कह दसण से, सील कह णायसुयस्स आसी ?
जाणासि ण भिक्खु जहातहेण, अहासुय बूहि जहा णिसत ।२।
खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंतणाणी य अणतदसी ।

जससिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्म च धिइ च पेहि ।३।
उड्ढ अहेग्रं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पण्णे, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ।४।
से सव्वदसी अभिभूयणाणी, णिरामगधे धिइमं ठियप्पा ।
अणुत्तरे सव्वजगसि विज्ज, गथा अतीते अभए अणाऊ ।५।
से भूइपण्णे अणिएयचारी, ओहतरे धीरे अणंतचक्खू ।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिन्दे व तम पगासे ।६।
अणुत्तरं धम्ममिण जिणाण, णेया मुणी कासव आसुपण्णे ।
इदे व देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिवि णं विसिट्ठे ।७।
से पण्णया अक्खयसागरे वा, महोदही वा वि अणंतपारे ।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के(भिक्खू),सक्के व देवाहिवई जुइमं ।८।
से वीरिएण पडिपुण्णवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए वासी मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ।९।
सयं सहस्साण उ जोयणाण, तिकडगे पडगवेजयते ।
से जोयणे णवणवइसहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेग ।१०।
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, ज सूरिया अणुपरिवट्टयति ।
से हेमवण्णे बहुणदणे य, जसि रइं वेदयंति महिंदा ।११।
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवण्णे ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरिवरे से जलिए व भोमे ।१२।
महीइ मज्झमि ठिए णगिदे, पण्णायते सूरिए सुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरिवण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ।१३।
सुदसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे णायपुत्ते, जाइजसो दसणणाणसीले ।१४।

गिरिवरे वा णिसहाऽऽययाण, रुयए व सेट्ठे वलयायताण ।
तओवमे से जगभूइपण्णे, मुणीण मज्भे तमुदाहु पण्णे ।१५।
अणुत्तर धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तर भाणवरं भियाइ ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्क, सखिंदुएगतवदातसुक्क ।१६।
अणुत्तरग्गं परम महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धि गए साइमणंतपत्ते, णाणेण सीलेण य दसणेण ।१७।
रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवण्णा ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठ, णाणेण सीलेण य भूइपण्णे ।१८।
थणिय व सद्दाण अणुत्तरे उ, चदो व ताराण महाणुभावे ।
गधेसु वा चदणमाहु सेट्ठ, एवं मुणीण अपडिण्णमाहु ।१९।
जहा सयभू उदहीण सेट्ठे, णागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रसवेजयते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ।२०।
हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मियाण सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, णिव्वाणवादी णिह णायपुत्ते ।२१।
जोहेसु णाए जह वीमसेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ।२२।
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयति ।
तवेसु वा उत्तम बभचेर, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते ।२३।
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
णिव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी ।२४।
पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे ।
तरिउं समुद्द च महाभवोघ, अभयकरे वीर अणतचक्खू ।२५।
कोह च माणं च तहेव माय, लोभ चउत्थं च अज्भत्थदोसा ।

एयाणि वता अरहा महेसी. ण कुव्वइ पाव ण कारवेइ ।२६।
किरियाकिरिय वेणइयाणुवाय, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाण ।
से सव्ववाय इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए सजमदीहरायं ।२७।
से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणव दुक्खखयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववार ।२८।
सोच्चा य धम्म अरहतभासियं, समाहिय अट्ठपदोवसुद्ध ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्सति ।२९।

मोक्ष मार्ग

कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेण मइमया ?
जं मग्ग उज्जु पावित्ता, ओह तरइ दुत्तर ।१।
तं मग्ग णुत्तर सुद्धं सव्वदुक्खविमोक्खणं ।
जाणासि णं जहा भिक्खू, तं णो बूहि महामुणी ।२।
जइणो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा ।
तेसिं तु कयरं मग्ग, आइखेज्ज कहाहि णो ।३।
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा ।
तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे ।४।
अणुपुव्वेण महाघोर, कासवेण पव्वेइयं ।
जमायाय इओ पुव्वं, समुद्द ववहारिणो ।५।
अतरिंसु तरतेगे, तरिस्संति अणागया ।
तं सोच्चा पडिवक्खामि, जतवो तं सुणेह मे ।६।

पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी ।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ।७।
अहावरा तसा पाणा, एव छक्काय आहिया ।
एयावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई ।८।
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं मइमं पडिलेहिया ।
सव्वे अक्कतदुक्खा य, अओ सव्वे न हिंमया ।९
एयं खु णाणिणो सार, जं न हिंसइ किंचण ।
अहिंसा समयं चेव, एयावंतं वियाणिया ।१०।
उड्ढ अहे य तिरिय, जे केइ तसथावरा ।
सव्वत्थ विरइं कुज्जा, संति णिव्वाणमाहिय ।११।
पभू दोसे णिराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणई ।
मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अतसो ।१२।
संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसण चरे ।
एसणासमिए णिच्च, वज्जयते अणेसण ।१३।
भूयाइं च समारभ, तमुद्दिस्सा य ज कडं ।
तारिसं तु न गिण्हेज्जा, अण्णपाणं सुसजए ।१४।
पूइकम्मं न सेविज्जा, एस धम्मे वुसीमओ ।
जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो त न कप्पए ।१५।
हणतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइदिए ।
ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु णगरेसु वा ।१६।
तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए ।
अहवा णत्थि पुण्णति, एवमेयं महब्भय ।१७।
दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तस-थावरा ।

तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थि त्ति णो वए ।१८।
जेसिं तं उवकप्पंति, अण्णपाणं तहाविहं ।
तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थित्ति णो वए ।१९।
जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं ।
जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ।२०।
दुहओ वि ते ण भासंति, अत्थि वा णत्थि वा पुणो ।
आयं रयस्स हेच्चा णं, णिव्वाणं पाउणंति ते ।२१।
णिव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा ।
तम्हा सया जए दंते, णिव्वाणं संधए मुणी ।२२।
वुज्झमाणाण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा ।
आघाइ साहु तं दीवं, पइट्ठेसा पवुच्चइ ।२३।
आयगुत्ते सया दंते, छिण्णसोए अणासवे ।
जे धम्मं सुद्धमक्खाइ, पडिपुण्णमणेलिसं ।२४।
तमेव अविजाणंता अबुद्धा बुद्धमाणिणो ।
बुद्धा मोत्ति य मण्णंता, अंत एते समाहिए ।२५।
ते य बीओदगं चेव, तमुद्दिस्सा य जं कडं ।
भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयण्णाऽसमाहिया ।२६।
जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही ।
मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाहमं ।२७।
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया ।
विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ।२८।
सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई ।
उम्मग्ग-गया दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ।२९।

जहा आसाविणी नावं जाइअधो दुरूहिया।
इच्छइ पारमागतु, अतरा य विसीयइ ।३०।
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोयं कसिणमावण्णा, आगंतारो महब्भयं ।३१।
इम च धम्ममायाय, कासवेण पवेइयं।
तरे सोय महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए ।३२।
विरए गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा।
तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्व परिव्वए ।३३।
अइमाण च मायं च, त परिण्णाय पडिए।
सव्वमेय णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मणी ।३४।
संधए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे।
उवहाणवीरिए भिक्खू कोहं माण ण पत्थए ।३५।
जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ।३६।
अह ण वयमावण्ण, फासा उच्चावया फुसे।
ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएण व महागिरी ।३७।
सवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसण चरे।
णिव्वुडे कालमाकखी, एव केवलिणो मयं ।।त्तिबेमि।३८।
।। इति सूत्रकृतागे मोक्षमार्गनामक एकादशमध्ययनम् ।।

दशवैकालिक सूत्र

॥ दुमपुप्फिया पढमं अज्झयणं ॥

धम्मो मगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवावि तं णमसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।१।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ।२।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ।३।
वयं च वित्ति लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु रीयते पुप्फेसु भमरा जहा ।४।
महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
णाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ।५। त्ति बेमि ।

॥ इति दुमपुप्फियानामं पढमज्झयणं समत्तं ॥

॥ सामण्णपुव्वयं दुइअं अज्झयणं ॥

कहण्णु कुज्जा सामण्णं, जो कामे ण णिवारए ।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ।१।
वत्थ-गन्ध-मलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छंदा जे ण भुंजति, ण से चाइति वुच्चइ ।२।
जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठीकुव्वइ ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चइ ।६।

समाइ पेहाए परिव्वयंतो,
सिया मणो णिस्सरइ वहिद्धा ।
ण सा महं णो वि अहपि तीसे,

इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ।४।
आयावयाहि, चय सोगमल्लं,
कामे कमाहि, कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहिसि संपराए ।५।
पक्खंदे जलियं जोइ, धूमकेउं दुरासयं
णेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।६।
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ।७।
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं णिहुओ चर ।८।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि णारीओ ।
वाया विद्धोव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।९।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं ।
अंकुसेण जहा णागो, धम्मे संपडिवाइओ ।१०।
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ।११। त्ति बेमि ।
॥ इति सामण्णपुव्वयं नाम अज्झयणं समत्तं ॥

॥ खुड्डियायारकहा तइयं अज्झयणं ॥३॥

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताईणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं, णिग्गंथाण महेसीणं ।१।
उद्देसियं कीयगडं, णियागं अभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य, गंधमल्ले य वीयणे ।२।

सण्णिही गिहिमत्ते य, रायपिंड किमिच्छए ।
संवाहणा दंतपहोयणा य, संपुच्छणा देह-पलोयणा य ।३।
अट्ठावए य णालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं पाणहा पाए, समारम्भ च जोइणो ।४।
सेज्जायर-पिण्ड च, आसंदी पलियंकए ।
गिहंतरणिसेज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य ।५।
गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीववत्तिया ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य ।६।
मूलए सिंगवेरे य, उच्छुखण्डे अनिव्वुडे ।
कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ।७।
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमा-लोणे य आमए ।
सामुद्दे पंसु-खारे य, काला लोणे य आमए ।८।
धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे ।
अंजणे दंतवणे य, गायब्भंगविभूसणे ।९।
सव्वमेयमणाइण्ण णिग्गंथाण महेसिण ।
संजमम्मि य जुत्ताण, लहुभूयविहारिणं ।१०।
पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचणिग्गहणा धीरा, णिग्गंथा उज्जुदंसिणो ।११।
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ।१२।
परीसहरिउदंता, धूयमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ।१३।
दुक्कराइं करेत्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ।

केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झंति णीरया ।१४।
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडा ।१५। त्ति बेमि।

॥ खुड्डियायारकहा नाम तइयमज्झयणं समत्त ॥

। छज्जीवणिया नामं चउत्थं अज्झयणं ॥४॥

सुय मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खाय, इह खलु छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेय मे अहिज्जिउं अज्झयण धम्मपण्णत्ती ।

इमा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती । तं जहा—१ पुढविकाइया २ आउकाइया ३ तेउकाइया ४ वाउकाइया ५ वणस्सइकाइया ६ तसकाइया । पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ-परिणएण । आऊ चित्तमतमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ-परिणएण । तेऊ चित्तमतमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ-परिणएण । वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएण । वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ-परिणएण । त जहा—अग्ग-बीया, मूल-बीया, पोर-बीया, खंध-बीया बीयरुहा, सम्मुच्छिमा, तणलया वणस्सइकाइया, स बीया,

चित्तमतमक्खाया अणेग-जीवा, पुढोसत्ता, अण्णत्थ सत्थ-परिणएणं। से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा, जहा-अडया,पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, सम्मुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाण, अभिक्कंतं पडिक्कंत संकुचिय पसारियं रुयं, भंत, तसिय, पलाइयं आगइ-गइविण्णाया, जे य कीडपयंगा जा य कुंथु-पिवीलिया, सव्वे वेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया, सव्वे तिरिक्ख-जोणिया, सव्वे णेरइया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिया। एसो खलु छट्ठो जीवणिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।

इच्चेसिं छण्हं जीवणिकायाण णेव सयं दंडं समारम्भिज्जा, णेवण्णेहिं दंडं समारम्भाविज्जा, दंडं समारम्भंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अण्ण न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाण वोसिरामि॥

पढमे भंते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण। सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुम वा, वायरं वा तसं वा, थावर वा, णेव सय पाणे अइवाइज्जा, णेवण्णेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाण वोसिरामि। पढमे भत्ते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं।१।

अहावरे दुच्चे भते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं । सव्वं भंते ! मुसावाय पच्चक्खामि । से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सय मुस वइज्जा णेवण्णेहिं मुस वायाविज्जा, मुसं वयते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । दुच्चे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि. सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ।२।

अहावरे तच्चे भते ! महव्वए अदिण्णादाणाओ वेरमण । सव्वं भते ! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि । से गामे वा, णगरे वा रण्णे वा, अप्पं वा, वहुं वा, अणु वा, थूल वा, चिमत वा, अचित्तमंत वा, णेव सयं अदिण्णं गिण्हिज्जा, णेवण्णेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिण्णं गिण्हंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविह तिवेहेण मणेणं वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्णं ण समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ।३।

अहावरे चउत्थे भते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं । सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि । से दिव्वं वा, माणुस वा, तिरिक्खजोणियं वा णेव सयं मेहुण सेविज्जा णेवण्णेहिं मेहुण सेवाविज्जा मेहुणं सेवंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करतपि अण्ण ण समणुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्कमामि णिंदामि गर-

हामि अप्पाणं वोसिरामि । चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।४।

अहावरे पचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं । सव्वं भंते ! परिग्गह पच्चक्खामि । से अप्प वा बहु वा अणु वा थूल वा चित्तमतं वा अचित्तमंत वा । णेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हतेवि अण्णे ण समणुजाणिज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करतंपि अण्णं ण समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । पचमे भते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ।५।

अहावरे छट्ठे भते ! वए राइ-भोयणाओ वेरमण सव्व भते ! राइ-भोयणं पच्चक्खामि । से असण वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा णेव सय राइ भुजिज्जा, णेवण्णेहि राइं भुजाविज्जा, राइं भुजतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण ण समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । छट्ठे भते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइ-भोयणाओ वेरमण ।

इच्चेयाइ पच महव्वयाइं राइभोयण-वेरमण-छट्ठाइ अत्तहियट्ठयाए उवसपज्जित्ता ण विहरामि ।६।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा,

सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिल वा, लेलु वा ससरक्ख वा कायं, ससरक्खं वा वत्थ, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण वा, किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सिलागए वा, सिलागहत्थेण वा ण आलिहिज्जा, ण विलिहिज्जा, ण घट्टिज्जा, ण भिंदिज्जा अण्ण ण आलिहाविज्जा, ण विलिहाविज्जा, ण घट्टाविज्जा, ण भिंदाविज्जा अण्णं आलिहतं वा, विलिहतं वा, घट्टंत वा, भिंदत वा ण समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करतपि अण्णं ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ।७।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिम वा, महिय वा, करगं वा, हरितणुग वा, सुद्धोदगं वा, उदउल्लं वा कायं, उदउल्लं वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ, ण आमुसिज्जा ण संफुसिज्जा ण आवीलिज्जा, ण पवीलिज्जा, ण अक्खोडिज्जा, ण पक्खोडिज्जा, ण आयाविज्जा, ण पयाविज्जा, अण्ण ण आमुसाविज्जा, ण सफुसाविज्जा, ण आवीलाविज्जा ण पवीलाविज्जा, ण अक्खोडाविज्जा, ण पक्खोडाविज्जा, ण आयाविज्जा, ण पयाविज्जा, अण्ण आमुसतं वा, सफुसंतं वा, आवीलंतं वा, पवीलंतं वा, अक्खोडत वा, पक्खोडंत वा, आयावतं वा, पयावत वा ण समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करंतंपि अण्णं ण समणुजा-

णामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ।२।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, न उंजिज्जा, न घट्टिज्जा न भिंदिज्जा न उज्जालिज्जा, न पज्जालिज्जा, न णिव्वाविज्जा, अण्णं न उंजाविज्जा न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा न उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा न णिव्वाविज्जा, अण्णं उंजंतं वा घट्टंतं वा, भिंदंतं वा, उज्जालंतं वा, पज्जालंतं वा, निव्वावंतं वा, न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अण्णं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ।३।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, बाहिरं वावि पोग्गलं न फुमिज्जा, न वीएज्जा अण्णं न फुमाविज्जा, न वीआविज्जा, अण्णं फुमंतं वा, वीयंतं वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अण्णं

न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ।४।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा बीयपइट्ठेसु वा, रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरियपइट्ठेसु वा, छिण्णेसु वा, छिण्णपइट्ठेसु वा, सचित्तेसु वा सचित्तकोलपडिणिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न णिसीइज्जा, न तुयट्टिज्जा, अण्ण न गच्छाविज्जा, न चिट्ठाविज्जा न णिसीयाविज्जा, न तुयट्टाविज्जा, अण्णं गच्छंतं वा चिट्ठतं वा, णिसीयंत वा, तुयट्टंत वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतपि अण्ण न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ।५।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिह-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पयगं वा, कुंथुं वा, पिवीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कंबलंसि वा, पायपुंछणंसि वा, रयहरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उडगंसि वा, दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणिज्जा,

नो ण सघायमावज्जिजज्जा ।६।

अजयं चरमाणो य, पाणभूयाइं हिंसइ ।
बधइ पावय कम्मं, त से होइ कडुय फल ।१।
अजय चिट्ठमाणो य, पाणभूयाइं हिंसइ ।
वधइ पावय कम्म, त से होइ कडुय फलं ।२।
अजय आसमाणो य, पाणभूयाइ हिंसइ ।
बधइ पावयं कम्मं, त से होइ कडुय फल ।३।
अजय सयमाणो य, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वधइ पावय कम्म, त से होइ कडुय फलं ।४।
अजयं भुंजमाणो य, पाणभूयाइ हिंसइ ।
वंधइ पावय कम्मं, त से होइ कडुय फल ।५।
अजय भासमाणो य, पाणभूयाइं हिंसइ ।
बधइ पावय कम्मं, त से होइ कडुय फलं ।६।
कह चरे कह चिट्ठे, कहमासे कह सए ।
कहं भुजंतो भासतो, पावकम्मं न बधइ ।७।
जय चरे जय चिट्ठे, जयमासे जयं सए ।
जयं भुजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ ।८।
सव्व-भूयप्प-भूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावकम्म न बंधइ ।९।
पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए ।
अण्णाणी कि काही, किंवा नाही सेयपावगं ।१०।
सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ।
उभयंपि जाणइ सोच्चा, जं सेय तं समायरे ।११।

जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणइ ।
जीवाजीवे अयाणतो, कहं सो नाहीइ संजम ?।१२।
जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ ।
जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहिइ सजम ।१३।
जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ ।
तया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ ।१४।
जया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ ।
तया पुण्ण च पावं च, बधं मुक्खं च जाणइ ।१५।
जया पुण्ण च पावं च, बंधं मुक्ख च जाणइ ।
तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ।१६।
जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ सजोगं, सब्भितर-बाहिर ।१७।
जया चयइ सजोगं, सब्भितर-बाहिर ।
तया मुडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारिय ।१८।
जया मुडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारिय ।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।१९।
जया सवरमुक्किट्ठं, धम्म फासे अणुत्तरं ।
तया धुणइ कम्म-रय, अबोहि-कलुसकड ।२०।
जया धुणइ कम्म-रय, अबोहि-कलुसंकड ।
तया सव्वत्तग नाणं, दसणं चाभिगच्छइ ।२१।
जया सव्वत्तग नाणं, दसणं चाभिगच्छइ ।
तया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली २२।
जया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ।

तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।२३।
जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्म खवित्ताण, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।२४।
जया कम्मं खवित्ताण, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ।२५।
सुह-सायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणा पहोयस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ।२६।
तवो-गुण-पहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स, सुल्लहा सुगई तारिसगस्स ।२७।
पच्छा वि ते पयाया, खिप्प गच्छंति अमर-भवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंति य बंभचेरं च ।२८।
इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि ।२९।त्ति बेमि
।। इति छज्जीवणिया णाम चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ।४।

।। पिंडेसणा णामं पंचमज्झयणं ।।५।।

संपत्ते भिक्ख-कालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कम्म-जोगेण, भत्त-पाणं गवेसए ।१।
से गामे वा नयरे वा, गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।२।
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महीं चरे ।
वज्जंतो बीयहरियाइं, पाणे य दगमट्टियं ।३।
ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ।४।

पवडते व से तत्थ, पक्खलंते व सजए ।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइ, तसे अदुव थावरे ।५।
तम्हा तेण न गच्छिज्जा, सजए सुसमाहिए ।
सइ अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ।६।
इंगालं छारियं रासिं, तुस-रासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं, सजओ तं न इक्कमे ।७।
न चरेज्ज वासे वासते, महियाए व पडतिए ।
महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसु वा ।८।
न चरेज्ज वेस-सामते, बंभचेरवसाणुए ।
बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोहिया ।९।
अणाययणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खण ।
होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि असंसओ ।१०।
तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
वज्जए वेस-सामंतं, मुणी एगंतमस्सिए ।११।
साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हय गयं ।
संडिब्भं कलहं जुद्ध दूरओ परिवज्जए ।१२।
अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले ।
इंदियाइ जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ।१३।
दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे ।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया ।१४।
आलोअं थिग्गलं दार, संधिं दग-भवणाणि य ।
चरतो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ।१५।
रन्नो गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाणि य ।

सकिलेस-करं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ।१६।
पडिकुट्ठं कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए ।
अचियत्तं कुल न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ।१७।
साणी-पावार-पिहियं अप्पणा नावपंगुरे ।
कवाड नो पणुल्लिज्जा उग्गहंसि अजाइया ।१८।
गोयरग्ग-पविट्ठो य, वच्चमुत्तं न धारए ।
ओगासं फासुयं नच्चा, अणुन्नवि य वोसिरे ।१९।
नीयं दुवारं तमसं, कुट्ठगं परिवज्जए ।
अचक्खु-विसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ।२०।
जत्थ पुप्फाइं बीयाइं, विप्पइण्णाइ कोट्ठए ।
अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ।२१।
एलगं दारगं साणं, वच्छगं वावि कोट्ठए ।
उल्लंघिया न पविसे, विउहित्ताण व संजए ।२२।
असंसत्तं पलोइज्जा, नाइदूरावलोयए ।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए, नियट्टिज्ज अयंपिरो ।२३।
अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्ग-गओ मुणी ।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मियं भूमिं परक्कमे ।२४।
तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागंवियक्खणो ।
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ।२५।
दग-मट्टियआयाणे, बीयाणि हरियाणि य ।
परिवज्जतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिय समाहिए ।२६।
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहारे पाण-भोयण ।
अकप्पियं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पियं ।२७।

आहारंती सिया तत्थ, परिसाडिज्ज भोयणं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।२८।
संमद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजम-करि नच्चा, तारिस परिवज्जए ।२९।
साहट्टु निक्खिवित्ता णं, सचित्त घट्टिताणि य ।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणुल्लिया ।३०।
ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहारे पाण-भोयणं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।३१।
पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दितियं पडियाइक्खे "न मे कप्पइ तारिस" ।३२।
एवं उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टियाउसे ।
हरियाले हिंगुलए मणोसिला अजणे लोणे ।३३।
गेरुय वण्णियसेढिय, सोरट्ठियपिट्ठकुक्कुसकए य ।
उक्किट्ठमसंसट्ठे, संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ।३४।
असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छा कम्मं जहिं भवे ।३५।
ससट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ।३६।
दुण्हं तु भुजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, छंदं से पडिलेहए ।३७।
दुण्ह तु भुजमाणाणं, दोवि तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ।३८।
गुव्विणीए उवन्नत्थ, विविह पाण-भोयणं ।

भुजमाणं विवज्जिज्जा, भत्त-सेस पडिच्छए ।३६।
सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी ।
उट्ठिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ।४०।
त भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिय ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।४१।
थणगं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं ।
तं निक्खिवित्तु रोयंतं, आहारे पाणभोयणं ।४२।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।४३।
जं भवे भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्मि सकियं ।
दितिय पडियाइक्खे "न मे कप्पइ तारिसं" ।४४।
दग-वारेण पिहियं, नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ ।४५।
त च उब्भिदिया दिज्जा, समणट्ठाए व दावए ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।४६।
असणं पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, "दाणट्ठा पगडं इमं" ।४७।
त भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पिय ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।४८।
असण पाणग वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, "पुण्णट्ठा पगडं इमं" ।४९।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।५०।

असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, "वणीमट्ठा पगडं इमं" ।५१।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।५२।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, "समणट्ठा पगडं इमं" ।५३।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।५४।
उद्देसियं कीयगडं, पूइकम्मं च आहडं ।
अज्झोयरपामिच्चं, मीस-जायं विवज्जए ।५५।
उग्गमं से य पुच्छिज्जा, कस्सट्ठा केण वा कडं ।
सुच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहिज्ज संजए ।५६।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
पुप्फेसु हुज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ।५७।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।५८।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
उदगंमि हुज्ज निक्खित्तं, उत्तिंग-पणगेसु वा ।५९।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।६०।
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए ।६१।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।६२।
एव उस्सक्किया ओसक्किया, उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया
उस्सिचिया निस्सिचिया, उववत्तिया ओवारियादए ।६३।
त भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।६४।
हुज्ज कट्ठ सिलं वावि, इट्टाल वा वि एगया ।
ठवियं सकमट्ठाए, तं च हुज्ज चलाचलं ।६५।
न तेण भिक्खू गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो ।
गम्भीरं झुसिरं चेव, सव्विदिय-समाहिए ।६६।
निस्सेणि फलग पीढ, उस्सवित्ताणमारुहे ।
मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ।६७।
दुरुहमाणी पवडिज्जा, हत्थ पायं व लूसए ।
पुढवी जीवेवि हिंसेज्जा, जे य तन्निस्सिया जगे ।६८।
एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो ।
तम्हा मालोहडं भिक्ख, न पडिगिण्हति संजया ।६९।
कंद मूल पलंबं वा, आम छिन्न व सन्निरं ।
तुवागं सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए ।७०।
तहेव सत्तु-चुण्णाइं, कोलचुन्नाइं आवणे ।
सक्कुलि फाणिय पूय, अन्न वावि तहाविह ।७१।
विक्कायमाण पसढं, रएण परिफासियं ।
दितियं पडियाइक्खे "न मे कप्पइ तारिसं ।७२।
वहु-अट्ठियं पुग्गलं, अणिमिसं वा वहु-कटयं ।
अत्थियं तिंदुयं विल्ल, उच्छु-खडं व सिंबलिं ।७३

अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
दितिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।७४।
तहेवुच्चावय पाण, अदुवा वार-धोयण ।
संसेइम चाउलोदग, अहुणाधोय विवज्जए ।७५।
ज जाणेज्ज चिराधोय, मईए दसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सुच्चा वा, ज च निस्सकिय भवे ।७६।
अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहिज्ज संजए ।
अहसकिय भविज्जा, आसाइत्ताण रोयए ।७७।
"थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चबिलं पूय, नाल तिण्ह विणित्तए ।७८।
त च अच्चबिल पूय, नाल तिण्ह विणित्तए ।
दितिय पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।७९।
त च हुज्ज अकामेण, विमणेण पडिच्छिय ।
त अप्पणा न पिवे, नोवि अन्नस्स दावए ।८०।
एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया ।
जय परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ।८१।
सिया य गोयरग्गगओ, इच्छिज्जा परिभुत्तुय ।
कुट्ठग भित्ति-मूल वा, पडिलेहित्ताण फासुयं ।८२।
अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छिन्नम्मि सवुडे ।
हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजिज्ज सजए ।८३।
तत्थ से भुजमाणस्स अट्ठिय कटओ सिया ।
तण-कट्ठ-सक्कर वावि अन्न वावि तहाविहं ।८४।
त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए ।

हत्थेण तं गहेऊणं, एगंतमवक्कमे ।८५।
एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया ।
जय परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ।८६।
सिया य भिक्खु इच्छिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुय ।
स-पिंडपायमागम्म, उडुयं पडिलेहिया ।८७।
विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ।८८।
आभोइत्ताण नीसेस, अइयारं च जहक्कम ।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व संजए ।८९।
उज्जुप्पन्नो अणुविग्गो अवक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहियं भवे ।९०।
न सम्ममालोय हुज्जा, पुव्वि पच्छा व ज कड ।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्ठो चिंतए इमं ।९१।
अहो ! जिणेहिं असावज्जा. वित्ती साहूण देसिया।
मोक्ख-साहणहेउस्स, साहु-देहस्स धारणा।९२।
णमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिणसंथव ।
सज्झायं पट्ठवित्ताण, वीसमेज्ज खणं मुणी ।९३।
वीसमतो इमं चिंते हियमट्ठ लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ।९४।
साहवो तो चियत्तेण, निमंतिज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धि तु भुजए ।९५।
अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुजिज्ज एगओ ।
आलोए भायणे साहु, जयं अपरिसाडियं ।९६।

तित्तग च कडुयं च कसायं अंबिल च महुरं लवणं वा,
एयलद्धमन्नत्थ-पउत्तं, महु-घय व भुंजिज्ज संजए ।९७।
अरसं विरसं वा वि,सूइयं वा असूइयं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्क, मंथु-कुम्मास-भोयणं ।९८।
उप्पण्णं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुयं ।
मुहालद्ध मुहा-जीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिय ।९९।
दुल्लहाओ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छति सुग्गइं ।१००।
॥ इति पिण्डेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ पिण्डेसणाए बीओ उद्देसो ॥१॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेव-मायाइ संजए ।
दुगधं वा सुगधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डुए ।१।
सेज्जा निसीहियाए, समावण्णो य गोयरे ।
अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेणं न संथरे ।२।
तओ कारण-समुपण्णे, भत्तपाण गवेसए ।
विहिणा पुव्वउत्तेण इमेणं उत्तरेण य ।३।
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकाल च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ।४।
"अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि" ।५।
सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं ।

"अलाभो" त्ति न सोइज्जा, "तवो" त्ति अहियासए ।६।
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।
त उज्जुय न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे ।७।
गोयरग्ग-पविट्ठो य, न निसीइज्ज कत्थइ ।
कहं च न पबधिज्जा, चिट्ठित्ताण व सजए ।८।
अग्गल फलिहं दारं, कवाड वावि संजए ।
अवलबिया न चिट्ठिज्जा, गोयरग्ग-गओ मुणी ।९।
समण माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं ।
उवसकमतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ।१०।
तमइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खु-गोयरे ।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए ।११।
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तिय सिया हुज्जा, लहुत्त पवयणस्स वा ।१२।
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसकमिज्जा भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व सजए ।१३।
उप्पल पउमं वावि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फ-सच्चित्तं, त च सलुचिया दए ।१४।
तं भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।१५।
उप्पलं पउमं वावि, कुमुय वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फ-सच्चित्तं, तं च सम्मद्दिया दए ।१६।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिस" ।१७।

सालुयं वा विरालियं, कुमुयं उप्पलनालियं ।
मुणालियं सासव-नालियं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ।१८।
तरुणगं वा पवाल, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वावि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ।१९।
तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भजियं सयं ।
दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ।२०।
तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुयं कासव-नालियं ।
तिल-पप्पडगं नीमं, आमग परिवज्जए ।२१।
तहेव चाउल पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुड ।
तिल-पिट्ठ पूइ-पिन्नागं, आमगं परिवज्जए ।२२।
कविट्ठं माउलिगं च, मूलग मूलगत्तियं ।
आम असत्थ-परिणयं, मणसा वि न पत्थए ।२३।
तहेव फलमथूणि, बीयमंथूणि जाणिया ।
विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए.।२४।
समुयाण चरे भिक्खू, कुलमुच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ।२५।
अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीइज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायण्णे एसणारए ।२६।
"बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमसाइम" ।
न तत्थ पडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा ।२७।
सयणासण-वत्थं वा, भत्तं पाण च संजए ।
अदितस्स न कुप्पिज्जा, पच्चक्खेवि य दीसओ ।२८।
इत्थिय पुरिस वावि, डहरं वा महल्लग ।

वंदमाणं न जाइज्जा, नो य णं फरुसं वए ।२९।
जे न वंदे न से कुप्पे, वदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ।३०।
सिया एगइओ लद्धु, लोभेण विणिगूहइ ।
"मामेय दाइय सत, दट्ठूण सयमायए" ।३१।
अत्तट्ठा-गुरुओ लुद्धो, वहुपाव पकुव्वइ ।
दुत्तो सओ य से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ।३२।
सिया एगइओ लद्धु, विविहं पाण-भोयणं ।
भद्दगं भद्दगं भुच्चा, विविन्न विरसमाहरे ।३३।
जाणंतु ता इमे समणा, 'आययट्ठी अय मुणी" ।
संतुट्ठो सेवए पंत, लूह-वित्ती सुतोसओ ।३४।
पूयणट्ठा जसोकामी, माण-सम्माण-कामए ।
वहुं पसवई पावं, माया सल्लं च कुव्वइ ।३५।
सुरं वा मेरगं वावि, अन्नं वा मज्जगं रस ।
ससक्खं न पिवे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ।३६।
पियए एगओ तेणो, "न मे कोइ वियाणइ" ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे ।३७।
वड्ढइ सुंडिया तस्स, माया-मोस च भिक्खूणो ।
अयसो य अनिव्वाणं, सययं च असाहुया ।३८।
निच्चुविग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई ।
तारिसो मरणतेवि, न आराहेइ संवरं ।३९।
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्थाऽवि णं गरहति, जेण जाणंति तारिसं ।४०।

एवं तु अगुणप्पेही, गुणाण च विवज्जए ।
तारिसो मरणंतेऽवि, ण आराहेइ संवरं ।४१।
तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं ।
मज्ज-प्पमाय-विरओ, तवस्सी अइउक्कस्सो ।४२।
तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेग-साहु-पुइयं ।
विउलं अत्थ-सजुत्तं, कित्तइस्स सुणेह मे ।४३।
एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जए ।
तारिसो मरणतेऽवि, आराहेइ संवर ।४४।
आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्थाऽवि ण पूयति, जेण जाणति तारिस ।४५।
तव-तेणे वय-तेणे, रूव-तेणे य जे नरे ।
आयार-भाव-तेणे य, कुव्वइ देव-किव्विसं ।४६।
लद्धूण वि देवत्त, उववन्नो देव-किव्विसे ।
तत्था वि से न याणाइ,"किं मे किच्चा इमं फलं"?।४७।
तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भइ एल-मूयगं ।
नरग तिरिक्ख-जोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ।४८।
एयं च दोस दट्ठूण, नायपुत्तेण भासिय ।
अणुमायऽपि मेहावी, माया-मोसं विवज्जए ।४९।
सिक्खिऊण भिक्खेसण-सोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे ।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए, तिव्वलज्ज-गुणवं विहरिज्जासि ।५०

॥ इति पिण्डेसणाए बीओ उद्देसो ॥

इति पिण्डेसणाए पंचमज्झयणं समत्त

।। छट्ठं धम्मत्थकामज्झयणं ।।

नाण-दंसण-सपन्नं, सजमे य तवे रयं ।
गणिमागम-संपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ।१।
रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुयप्पाणो, कहं भे आयारगोयरो ।२।
तेसिं सो निहुओ दतो, सव्व-भूयसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ वियक्खणो ।३।
हंदि धम्मत्थ-कामाण, निग्गथाणं सुणेह मे ।
आयार-गोयरं भीम, सयलं दुरहिट्ठिय ।४।
नन्नत्थ एरिसं वुत्त, जं लोए परम-दुच्चरं ।
विउल-ट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सई ।५।
सखुड्डग-वियत्ताण, वाहियाणं च जे गुणा ।
अक्खंडफुडिया कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ।६।
दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सई ।७।
वय-छक्कं काय-छक्कं, अकप्पो गिहि-भायणं ।
पलियकनिसिज्जा य, सिणाणं सोह-वज्जणं ।८।
तत्थिमं पढम ठाणं, महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ।९।
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा, न हणे णो वि घायए ।१०।
सव्वे-जीवावि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।

तम्हा पाणि-वह घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ।११।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसग न मुस बूया, नोवि अन्नं वयावए ।१२।
मुसा-वाओ य लोगम्मि, सव्व-साहूहिं गरिहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोस विवज्जए ।१३।
चित्तमंतमचित्त वा, अप्प वा जइ वा बहु ।
दंतसोहणमित्तंपि, उग्गहसि अजाइया ।१४।
तं अप्पणा न गिण्हंति, नोवि गिण्हावए परं ।
अन्न वा गिण्हमाणंपि, नाणुजाणंति संजया ।१५।
अबंभचरियं घोरं, पमाय दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए, भेयाययण-वज्जिणो ।१६।
मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्ग, निग्गंथा वज्जयंति णं ।१७।
विडमुब्भेइम लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणियं ।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्त-वओ-रया ।१८।
लोहस्सेस-अणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ।१९।
जंऽपि वत्थं व पायं वा, कम्बल पायपुछणं ।
तंऽपि संजम-लज्जट्ठा, धारंति परिहरंति य ।२०।
न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
"मुच्छा परिग्गहो वुत्तो," इइ वुत्तं महेसिणा ।२१।
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खण-परिग्गहे ।
अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, नायरंति ममाइयं ।२२।

अहो निच्च तवो-कम्मं, सव्वबुद्धेहिं वन्नियं ।
जाय लज्जा-समावित्ती, एग-भत्तं च भोयणं ।२३।
सति में सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।
जाइ राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे ।२४।
उदउल्ल बीयससत्तं, पाणा निवडिया महिं ।
दिया ताइं विवज्जिजज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ।२५।
एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासिय ।
सव्वाहारं न भुजंति, निग्गथा राइभोयण ।२६।
पुढविकायं न हिंसति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।२७।
पुढविकायं विहिंसतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।२८।
तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढण ।
पुढविकाय-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ।२९।
आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।३०।
आउकायं विहिंसतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।३१।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ।३२।
जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं ।३३।
पाईणं पडिणं वावि, उड्ढ अणुदिसामवि ।

अहे दाहिणओ वावि, दहे उत्तरओवि य ।३४।
भूयाणमेसमाघाओ, हव्ववाहो न ससओ ।
तं पईव-पयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ।३५।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढण ।
तेउकाय-समारभं, जावज्जीवाए वज्जए ।३६।
अणिलस्स समारभं, बुद्धा मन्नति तारिसं ।
सावज्ज-बहुल चेयं, नेय ताईहि सेवियं ।३७।
तालिअंटेण पत्तेण, साहाविहुयणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छंति, वीयावेउण वा परं ।३८।
जऽपि वत्थं च पायं वा, कबलं पायपुछणं ।
न ते वायमुईरति, जयं परिहरंति य ।३९।
तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारभं, जावज्जीवाए वज्जए ।४०।
वणस्सइ न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, संजया सुसमाहिया ।४१।
वणस्सई विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।४२।
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
वणस्सइ-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ।४३।
तसकाय न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण-जोएण, सजया सुसमाहिया ।४४।
- तसकायं विहिंसतो, हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ।४५।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढण ।
तसकाय-समारभ, जावज्जीवाए वज्जए ।४६।
जाइ चत्तारिऽभुज्जाइ, इसिणा-हार-माइणि ।
ताइं तु विवज्जंतो, संजम अणुपालए ।४७।
पिंड सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पियं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पियं ।४८।
जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाहड ।
वहं ते समणुजाणति, इह वुत्तं महेसिणा ।४९।
तम्हा असण-पाणाइं, कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गथा धम्म-जीविणो ।५०।
कंसेसु कस-पाएसु, कुंड-मोएसु वा पुणो ।
भुजंतो असणपाणाइं, आयारा परिभस्सइ ।५१।
सीओदग-समारभे, मत्त-धोअण छड्डुणे ।
जाइं छंनति भूयाइ, दिट्ठो तत्थ असञ्जमो ।५२।
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिया तत्थ न कप्पइ ।
एयमट्ठं न भुजति, निग्गथागिहि-भायणे ।५३।
आसदी पलियकेसु, मच-मासालएसु वा ।
अणायरियमज्जाण, आसइत्तु सइत्तु वा ।५४।
नासदी-पलियकेसु, न निसिज्जा न पीढए ।
निग्गथाऽपडिलेहाए, वुद्ध-वुत्तमहिट्ठगा । ५५।
गंभीर-विजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आ दी पलियंको य, एयमट्ठ विवज्जिया ।५६।
गोयरग्ग-पविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ ।

इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं ।५७।
विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।
वणीमग-पडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिण ।५८।
अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वा वि संकणं ।
कुसील-वड्ढण ठाणं, दूरओ परिवज्जए ।५९।
तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभुयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो ।६०।
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाण जो उ पत्थए ।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ।६१।
संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य ।
जे य भिक्खू सिणायंतो, वियडेणुप्पिलावए ।।६२।।
तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वय घोर, असिणाणमहिट्ठगा ।६३।
सिणाणं अदुवा कक्क, लुद्ध पउमगाणि य ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ।६४।
नगिणस्स वावि मुडस्स, दीह-रोम-नहसिणो ।
मेहुणाओ उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ।६५।
विभूसावत्तिय भिक्खू, कम्म बंधइ चिक्कण ।
संसार-सायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ।६६।
विभूसावत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिस ।
सावज्ज बहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ।६७।
खवंति अप्पाणममोह-दंसिणो, तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरे-कडाइं, नवाइं पावाइं न ते करंति ।६८।

सओवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगया जससिणो।
उउ-पसन्ने विमले व चंदिमा, सिद्धि विमाणाइं उवंति ताइणो।६६।

॥ त्तिबेमि॥ छट्ठ धम्मत्थकामज्झयण समत्त ॥६॥

॥सुवक्कसुद्धी णाम सत्तमं अज्झयणं ॥७॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नव ।
दुण्हं तु विणयं सिक्खे दो न भासिज्ज सव्वसो ।१।
जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं भासिज्ज पण्णव ।२।
असच्चमोसं सच्च च, अणवज्जमकक्कस ।
समुप्पेहमसदिद्धं, गिरं भासिज्ज पण्णवं ।३।
एयं च अट्ठमन्न वा, जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं च, तपि धीरो विवज्जए ।४।
वितहं पि तहामुत्ति, ज गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो.पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ।५।
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ।६।
एवमाइ उ जा भासा, एस-कालम्मि सकिया ।
संपयाईअमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ।७।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्णमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणिज्जा, "एवमेय" तु नो वए ।८।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्ण-मणागए ।

जत्थ संका भवे त तु, "एवमेयं" ति नो वए ।९।
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पण्ण-मणागए ।
निस्संकियं भवे ज तु, "एवमेयं"ति निद्दिसे ।१०।
तहेव फरुसा भासा, गुरु-भूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ।११।
तहेव काण 'काणे-त्ति,' पडग 'पडगे-त्ति' वा ।
वाहिय वावि रोगित्ति, तेणं चोरेत्ति नो वए ।१२।
एएणऽन्नेण अट्ठेण, परो जेणुवहम्मइ ।
आयार-भाव दोसन्नू, न त भासिज्ज पण्णवं ।१३।
तहेव 'होले' 'गोलि-त्ति,' 'साणे' वा 'वसुले-त्ति' य ।
दमए दुहए वा वि, न त भासिज्ज पण्णवं ।१४।
अज्जिए पज्जिए वावि, अम्मो माउस्सियत्ति य ।
पिउस्सिए भायणिज्जत्ति, धूए णत्तुणिअत्ति य ।१५।
हले हल्लेत्ति अन्नेत्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुलेत्ति, इत्थिय नेवमालवे ।१६।
णामधिज्जेण णं बूआ, इत्थी-गुत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ।१७।
अज्जए पज्जए वावि, वप्पो च्चुल्ल-पिउत्ति य ।
माउला भाइणिज्जत्ति, पुत्ते णत्तुणिअत्ति य ।१८।
हे हो ! हलित्ति अन्नित्ति, भट्टा सामि य गोमि य ।
होल गोल वसुलित्ति, पुरिस नेवमालवे ।१९।
नामधिज्जेण ण बूया, पुरिसगुत्तेण वा पुणो ।

जहारिहमभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ।२०।
पंचिदियाण पाणाणं, 'एस इत्थी अयं पुमं' ।
जाव णं न विजाणिज्जा, ताव जाइत्ति आलवे ।२१।
तहेव मणुसं पसुं, पक्खिं वा वि, सरीसिवं ।
'थूले पमेइले वज्झे, पाइमित्ति' य नो वए ।२२।
परिवुड्ढत्ति णं बूया, बूया उवचिएत्ति य ।
संजाए पीणिए वा वि, महाकायत्ति आलवे ।२३।
तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गो-रहगत्ति य ।
वाहिमा रह-जोग्गत्ति, नेवं भासिज्ज पण्णवं ।२४।
जुवं गवित्ति णं बूया, धेणु रसदयत्ति य ।
रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणित्ति य ।२५।
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासिज्ज पण्णवं ।२६।
अलं पासायखंभाणं, तोरणाण गिहाण य ।
फलिहग्गलनावाणं, अलं उदगदोणिणं ।२७।
पीढए चंगबेरे य, नंगले मइयं सिया ।
जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिया व अल सिया ।२८।
आसणं सयणं जाणं, हुज्जा वा किंचुवस्सए ।
भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासिज्ज पण्णवं ।२९।
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एव भासिज्ज पण्णवं ।३०।
जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया ।
पयायसाला विडिमा, वए दरिसणित्ति य ।३१।

तहा फलाइं पक्काइ, पायखज्जाइं नो वए ।
वेइलोयाइ टालाइं, वेहिमाइत्ति नो वए ।३२।
असथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला ।
वइज्ज बहुसंभूया, भूयरूवित्ति वा पुणो ।३३।
तहेवोसहिओ पक्काओ, नीलियाओ छवीइ य ।
लाइमा भज्जिमाउत्ति, पिहुखज्जत्ति नो वए ।३४।
रूढा बहुसंभूया, थिरा ओसढा वि य ।
गब्भियाओ पसूयाओ, संसाराउत्ति आलवे ।३५।
तहेव सखडि नच्चा, किच्चं कज्ज ति नो वए ।
तेणग वावि वज्झित्ति, सुतित्थित्ति य आवगा ।३६।
संखडि संखडि बूया, पणिअट्ठत्ति तेणगं ।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाण वियागरे ।३७।
तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्जत्ति नो वए ।
नावाहिं तरिमाउ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए ।३८।
बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
बहुवित्थडोदगा यावि, एव भासिज्ज पण्णवं ।३९।
तहेव सावज्ज जोग, परस्सट्ठा य निट्ठिय ।
कीरमाणंति वा णच्चा, सावज्ज न लवे मुणी ।४०।
सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुछिण्णे सुहडे मडे ।
सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्ज वज्जए मुणी ।४१।
पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे ।
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउय, पहारगाढति त गाढमालवे ।४२।
सव्वुक्कसघ परग्घं वा, अउल नत्थि एरिसं ।

अविक्कियमवत्तव्वं, अचियत्त चेव नो वए ।४३।
सव्वमेयं वइस्सामि, सव्वमेयं त्ति नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासिज्ज पण्णवं ।४४।
सुक्कीय वा सुविक्कीयं, अकिज्जं किज्जमेव वा ।
इमं गिण्ह इमं मुच, पणीयं नो वियागरे ।४५।
अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा ।
पणिअट्ठे समुप्पण्णे, अणवज्जं वियागरे ।४६।
तहेवासंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा ।
सयं चिट्ठ वयाहीत्ति, नेवं भासिज्ज पण्णवं ।४७।
वहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ।४८।
नाणदंसणसंपन्नं, संजमे य तवे रयं ।
एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ।४९।
देवाणं मणुयाणं च, तिरियाण च वुग्गहे ।
अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वए ।५०।
वाओ वुट्ठ च सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा ।
कयाणु हुज्ज एयाणि, मा वा होउत्ति नो वए ।५१।
तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देव देवत्ति गिरं वइज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ वलाहइत्ति ।५२।
अंतलिक्खत्ति णं बूया, गुज्झाणुचरिअत्ति य ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतंत्ति आलवे ।५३।
तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
से कोह लोभ भय हास माणवो, न हासमाणो वि गिरं वइज्जा ।

सुवक्कसुद्धि समुपेहिया मुणी, गिर च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए, सयाण मज्झे लहई पसंसणं ।५५।
भासाइ दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए, वइज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ।५६।
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए, चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुण्णमलं पुरेकडं, आराहए लोगमिणं तहा परं ।५७।

॥ इति आयारपणिही णामं अट्ठममज्झयण समत्तं ॥८॥

॥ आयारपणिही अट्ठममज्झयणं ॥८॥

आयारप्पणिहिं लद्धुं, जहा कायव्व भिक्खुणा।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ।१।
पुढविदगअगणिमारुअ, तणरुक्खा सबीयगा।
तसा य पाणा जीवत्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ।२।
तेसिं अच्छणजोएण, णिच्चं होयव्वयं सिया
मणसा कायवक्केण, एवं हवइ संजए ।३।
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ।४।
सुद्धपुढवी न निसीए, ससरक्खम्मि य आसणे।
पमज्जित्तु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ।५।
सीओदगं न सेविज्जा, सिलावुट्ठं हिमाणि य।
उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहिज्ज संजए ।६।
उदउल्लं अप्पणो कायं, नेव पुंछे न संलिहे।
समुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी ।७।
इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोइयं।

न उंजिज्जा न घट्टिज्जा, नो णं निव्वावए मुणी ।८।
तालियंटेण पत्तेण, साहाए विहुयणेण वा ।
न वीइज्जऽप्पणो कायं, वाहिर वावि पुग्गलं ।९।
तणरुक्खं न छिंदिज्जा, फलं मूल च कस्सई ।
आमग विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए ।१०।
गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिगपणगेसु वा ।११।
तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जग ।१२।
अट्ठ सुहुमाइं पेहाए, जाइ जाणित्तु संजए ।
दयाहिगारी भुएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ।१३।
कयराइं अट्ठ सुहुमाइ, जाइं पुच्छिज्ज सजए ।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खिज्ज वियक्खणो ।१४।
सिणेह पुप्फसुहुमं च, पाणुत्तिगं तहेव य ।
पणगं वीयहरियं च, अंडसुहुम च अट्ठमं ।१५।
एवमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्तो जए णिच्चं सव्विंदियसमाहिए ।१६।
धुव च पडिलेहिज्जा, जोगसा पायकंवल ।
सिज्जमुच्चारभूमिं च, सथारं अदुवासणं ।१७।
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लियं ।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए ।१८।
पविसित्तु परागार, पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
जयं चिट्ठे मियं भासे, न य रूवेसु मणं करे ।१९।

बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ ।
न य दिट्ठं सुयं सुव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ।२०।
सुयं वा जइ वा दिट्ठ, न लविज्जोवघाइयं ।
न य केण उवाएण, गिहिजोग समायरे ।२१।
निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दग पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ।२२।
न य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उछं अयपिरो ।
अफासुयं न भुंजिज्जा, कीयमुद्देसियाहडं ।२३।
सनिहिं च न कुव्विज्जा, अणुमाय पि सजए ।
मुहाजीवी असवद्धे, हविज्ज जगनिस्सिए ।२४।
लुहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्त न गच्छिज्जा, सुच्चा णं जिणसासणं ।२५।
कण्णसुक्खेहिं सद्देहिं, पेम्मं नाभिनिवेसए ।
दारुण कक्कसं फास, काएण अहियासए ।२६।
खुहं पिवास दुस्सिज्जं, सीउण्हं अरहं भय ।
अहियासे अव्वहिओ, देहदुक्खं महाफलं ।२७।
अत्थगयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमाइयं सव्व, मणसा वि न पत्थए ।२८।
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे ।
हविज्ज उअरे दते, थोव लद्धुं न खिसए ।२९।
न बाहिरं परिभवे, अत्ताण न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सिबुद्धिए ।३०।
से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं ।

संवरे खिप्पमप्पाण वीयं, तं न समायरे ।३१।
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न णिण्हवे ।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ।३२।
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियस्स महप्पणो ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ।३३।
अधुवं जीवियं णच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
विणियट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ।३४।
बलं थामं च पेहाए, सद्धामारुग्गमप्पणो ।
खित्तं कालं च विण्णाय, तहप्पाणं निजुजए ।३५।
जरा जाव न पीलेई, वाही जाव न वड्डई ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्म समायरे ।३६।
कोह माणं च मायं च, लोभं च पाववड्डणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ।३७।
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो ।३८।
उवसमेण हणे कोह, माण मद्दवया जिणे ।
मायमज्जभावेण, लोभं संतासओ जिणे ।३९।
कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य पवड्डमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइ पुणब्भवस्स ।४०।
रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलय सययं न हावइज्जा ।
कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तवसंजमम्मि ।४१।
निद्दं च न बहु मण्णिज्जा, सप्पहास विवज्जए
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ।४२।

जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं ।
जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ।४३।
इहलोगपारत्तहियं, जेणं गच्छइ सुग्गइं ।
बहुस्सुय पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छयं ।४४।
हत्थ पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ।४५।
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य ऊरुं समासिज्जा, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए ।४६।
अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठिमंसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए ।४७।
अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पिज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहियगामिणिं ।४८।
दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं ।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ।४९।
आयारपण्णत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
वायविक्खलियं णच्चा, न तं उवहसे मुणी ।५०।
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ।५१।
अण्णट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं ।
उच्चारभूमिसंपण्णं, इत्थीपसुविवज्जियं ।५२।
विवित्ता य भवे सिज्जा, नारीणं न लवे कहं ।
गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहुहिं संथवं ।५३।
जहा कुक्कुडपोयस्स, णिच्चं कुललओ भयं ।

एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ।५४।
चित्तभित्तिं न णिज्झाए, नारिं वा सुअलंकियं ।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ।५५।
हत्थपायपलिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं ।
अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ।५६।
विभूसा इत्थीसंसग्गो, पणीय रसभोयणं ।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ।५७।
अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं ।
इत्थीणं तं न णिज्झाए, कामरागविवड्ढणं ।५८।
विसएसु मणुण्णेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विण्णाय, परिणाम पुग्गलाणय ।५९।
पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं णच्चा जहातहा ।
विणीयतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ।६०।
जाइ सद्धाइ णिक्खंतो, परियायट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसम्मए ।६१।
तवं चिमं संजमजोगयं च, सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाइ समत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ।६२।
सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जं सि मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ।६३।
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमे ।६४।

॥ इति आयारप्पणिही णामं अट्ठममज्झयणं समत्तं ॥८॥

।। विणयसमाही णाम नवमज्झयणं ।।९।।

पढमो उद्देसो

थंभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फल व कीयस्स वहाय होइ ।१।
जे यावि मंदित्ति गुरुं विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति णच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करंति आसायण ते गुरूण ।२।
पगईइ मंदा वि भवति एगे, डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ।३।
जे यावि नाग डहरं ति णच्चा, आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो, नियच्छइ जाइपहं खु मंदो ।४।
आसीविसो वा वि पर सुरुट्ठो, किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसण्णा, अबोहि आसायण नत्थि मुक्खो ।५।
जो पावगं जलियमवक्कमिज्जा, आसीविसं वावि हु कोवइज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी, एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ।६।
सिया हु से पावय नो डहिज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहल न मारे, न यावि मुक्खो गुरुहीलणाए ।७।
जो पव्वय सिरसा भित्तुमिच्छे, सुत्त च सीहं पडिबोहइज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमाऽऽसायणया गुरूण ।८।
सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिंदिज्ज व सत्ति अग्ग, न यावि मुक्खो गुरुहीलणाए ।९।
आयरियपाया पुण अप्पसण्णा, अबोहि आसायण नत्थि मुक्खो ।

तम्हा अणाबाहसुहाभिकखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ।१०।
जहाहिअग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुइमंतपयाभिसित्तं ।
एवायरिय उवचिट्ठइज्जा, अणंतनाणोवगओ वि संतो ।११।
जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, कायग्गिरा भो मणसा य णिच्चं ।१२।
लज्जा-दया-संजम-बभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति, तेऽहं गुरू सययं पूययामि ।१३।
जहा णिसते तवणच्चिमाली, पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुयसीलवुद्धिए, विरायई सुरमज्झे व इंदो ।१४।
जहा ससी कोमुइजोगजुत्ता, नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ।१५।
महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए ।
सपाविउकामे अणुत्तराइं, आराहए तोसइ धम्मकामी ।१६।
सुच्चाण मेहावी सुभासियाइं, सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं ।१७।

॥ इति विणयसमाहिज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ॥

बीओ उद्देसो

मूलाउ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाउ पच्छा समुविंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सि पुप्फं च फलं रसो य ।१।
एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मुक्खो ।
जेण कित्ति सुयं सिग्घं, नीसेसं चाभिगच्छइ ।२।
जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे ।

वुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठ सोयगय जहा ।३।
विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो ।
दिव्व सो सिरिमिज्जर्ति, दडेण पडिसेहए ।४।
तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया ।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया ।५।
तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया ।
दीसति सुहमेहता, इड्ढि पत्ता महाजसा ।६।
तहेव अविणीयप्पा, लोगसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहता, छाया ते विगलिंदिया ।७।
दंडसत्थपरिजुण्णा, असब्भवयणेहि य ।
कलुणा विवण्णछंदा, खुप्पिवासपरिगया ।८।
तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढि पत्ता महायसा ।९।
तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसति दुहमेहता, आभिओगमुवट्ठिया ।१०।
तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसति सुहमेहता, इड्ढिपत्ता महायसा ।११।
जे आयरियउवज्झायाणं, सुस्सूसावयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, जलसित्ता इव पायवा ।१२।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणियाणि य ।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ।१३।
जेण बंध वहं घोरं, परियाव च दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छति, जुत्ता ते ललिइंदिया ।१४।

ते वि तं गुरुं पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा ।
सक्कारंति नमंसति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ।१५।
किं पुण जे सुयग्गाही, अणतहियकामए ।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा त नाइवत्तए ।१६।
नीय सिज्ज गइं ठाण, नीयं च आसणाणि य ।
नीय च पाए वदिज्जा, नीय कुज्जा य अंजलिं ।१७।
सघट्टइत्ता काएण, तहा उवहिणामवि ।
खमेह अवराहं मे, वइज्ज न पुणुत्ति य ।१८।
दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहई रह ।
एवं दुबुद्धिकिच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ।१९।
आलवते लवंते वा, न निसिज्जाइ पडिसुणे ।
मुत्तूणं आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिसुणे ।२०।
कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेण तेण उवाएण, त ण सपडिवायए ।२१।
विवत्ती अविणीयस्स, सपत्ती विणीयस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्ख से अभिगच्छइ ।२२।
जे यावि चडे मइइड्ढिगारवे, पिसुणे नरे साहसहीणपेमणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए, असविभागी न हु तस्स मुक्खो।२३।
निद्देसवित्ती पुण जे गुरूणं, सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओघमिण दुरुत्तरं खवित्तु कम्म गइमुत्तम गया ।२४।

।।इति विणयसमाहिणामज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो।।

तइओ उद्देसो

आयरियं अग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ।

आलोइयं इंगियमेव णच्चा, जो छंदमाराहयई स पुज्जो ।१।
आयारमट्ठा विणय पउजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकखमाणो, गुरु तु नासाययई स पुज्जो ।२।
रायणिएसु विणयं पउजे, डहरा वि य जे परियाय जिट्ठा ।
नीयत्तणे वट्टइ सच्चवाई, उवायव वक्ककरे स पुज्जो ।३।
अण्णाय उंछं चरई विसुद्ध, जवणट्ठया समुयाणं च णिच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवइज्जा, लद्धु न विकत्थयई स पुज्जो ।४।
संथारसिज्जासणभत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभेऽवि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसइज्जा, सतोसपाहण्णरए स पुज्जो ।५।
सक्का सहेउ आसाइ कटया, अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहिज्ज कंटए, वईमए कण्णसरे स पुज्जो ।६।
मुहुत्तदुक्खा उ हवति कटया, अओमया तेऽवि तओ सुउद्धरा ।
वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ।७।
समावयंता वयणाभिघाया, कण्णं गया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मुत्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइदिए जो सहई स पुज्जो ।८।
अवण्णवाय च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणी अप्पियकारिणी च, भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो ।९।
अलोलुए अक्कुहए अमाई, अपिसुणे या वि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भाविअप्पा, अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ।१०।
गुणेहिं साहू अगुणेहिंऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुचऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ।११।
तहेव डहरं च महल्लग वा, इत्थि पुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
नोहीलए नो वि य खिसइज्जा, थभं च कोहं च चए स पुज्जो ।१२।

जे माणिया सययं माणयंति, जत्तेण कण्णं व निवेसयंति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ।१३।
तेसिं गुरूण गुणसायराणं, सुच्चाण मेहावी सुभासियाइं ।
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो, चउक्कसायावगए स पुज्जो ।१४।
गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी, जिणमयणिउणे अभिगमकुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं, भासुरमउलं गइ गओ ।१५।

॥ विणय समाहीए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खाय इह खलु थेरेहिं भगवतेहि चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता। कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता तंजहा–विणयसमाही सुयसमाही तवसमाही आयारसमाही ।

विणए सुए य तवे, आयारे निच्चपंडिया ।
अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिया ।१।

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ तंजहा–१अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ, सम्मं संपवडिज्जइ, वेयमाराहइ, न य भवइ अत्तसंपग्गहिए। चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्सूसई तं च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाहि आययट्ठिए ।२।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ तंजहा–सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ। एगग्गचित्तो भविस्सामित्ति

अज्झाइयव्वं भवइ। अप्पाणं ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्वं भवइ। ठिओ परं ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्वं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

नाणमेगग्गचित्तो य, ठिओ य ठावइ परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता, रओ सुयसमाहिए।३।

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा—नो इह लोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ णिज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा। चउत्थ पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

विविहगुणतवोरए णिच्चं, भवइ निरासए णिज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए।४।

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ तंजहा—नो इह लोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा। चउत्थ पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो।

जिणवयणरए अतिंतिणे, पडिपुण्णाययमाययट्ठिए।
आयारसमाहिसंवुडे, भवइ य दंते भावसंधए।५।

अभिगमचउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ।
विउलहियं सुहावहं पुणो, कुव्वइ य सो पयखेममप्पणो।६।
जाइमरणाओ मुच्चइ, इत्थथं च चएइ सव्वसो।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ७।

॥ इति विणयसमाही नाम चउत्थो उद्देसो ॥ नवमज्झयण समत्तं ९ ॥

।। सभिक्खू नामं दसममज्झयणं ।।१०।।

निक्खम्ममाणाइ य वुद्धवयणे, निच्च चित्तसमाहिम्रो हविज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे, वंतं नो पडिग्रायइ जे स भिक्खू ।१।
पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं न पिए न पियावए ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसिय, त न जले न जलावए जे स भिक्खू ।२।
अनिलेण न वीए न वीयाव ए, हरियाणि न छिंदे न छिंदावए ।
वीयाणि सया विवज्जयंतो सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ।३।
वहणं तसथावराण होइ पुढवीतणकट्ठनिस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे, नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ।४।
रोइग्र नायपुत्तवयणे, अत्तसमे मन्निज्ज छप्पिकाए ।
पंच य फासे महव्वयाइं, पचासव संवरे जे स भिक्खू ।५।
चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी हविज्ज वुद्धवयणे ।
अहणे निज्जायरूवरयए, गिहिजोग परिवज्जए जे स भिक्खू ।६।
सम्मदिट्ठी सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तवे संजमे य ।
तवसा धुणई पुराणपावगं, मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ।७।
तहेव असणं पाणग वा, विविहं खाइम साइमं लभित्ता ।
होही अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ।८।
तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमं साइमं लभित्ता ।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे, भुच्चा सज्झायरए जे स भिक्खू ।९।
न य वुग्गहिय कहं कहिज्जा, न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमे धुवं जोगेण जुत्ते, उवसते अविहेडए जे स भिक्खू ।१०।
जो सहइ उ गामकंटए, अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।

भयभेरवसद्दसप्पहासे, समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ।११।
पडिमं पडिवज्जिया मसाणे, नो भीयए भयभेरवाइ दिस्स ।
विविहगुणतवोरए य निच्च, न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू १२।
असइ वोसट्ठचत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा ।
पढविसमे मुणी हविज्जा, अनियाणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू ।१३।
अभिभूय काएण परिसहाइ, समुद्धरे जाइपहाउ अप्पयं ।
विइत्तु जाइमरणं महब्भय, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ।१४।
हत्थसंजए पायसंजए, वायसजए सजइंदिए ।
अज्झप्परए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू ।१५।
उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अण्णायउंछं पुलनिप्पुलाए ।
कयविक्कयसनिहिओ विरए, सव्वसगावगए य जे स भिक्खू ।१६।
अलोलभिक्खू न रसेसु गिज्झे, उछं चरे जीविय नाभिकंखे ।
इड्ढि च सक्कारणपूयण च, चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ।१७।
न परं वइज्जासि अय कुसीले, जेणं च कुप्पिज्ज न तं वइज्जा ।
जाणिय पत्तेयं पुण्णपाव, अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ।१८।
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू ।१९।
पवेयए अज्जपय महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
निक्खम्म वज्जिजज्ज कुसीललिंगं, न यावि हास कुहए जे स भिक्खू २०
तं देहवासं असुइं असासय सया चए निच्च हियट्ठिअप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइ ।२१।

॥ इति सभिक्खू नामं दसममज्झयण ॥१०॥

॥ रइवक्का पढमा चूलिया ॥१॥

इह खलु भो ! पव्वइएण उप्पण्णदुक्खेण संजमो अरइ-समावण्णचित्तेणं अणोहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव हयरस्सि-गयकुस-पोयपडागाभूयाइं इमाइं अट्ठारसठाणाइं सम्मं संपडिले-हियव्वाइं भवंति । तं जहा—

हं भो ! १ दुस्समाए दुप्पजीवी २ लहुसगा इत्तरिया गिहीण कामभोगा ३ भुज्जो असाइवहुला मणुस्सा । ४ इमे य मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाई भविस्सई ५ ओमजण-पुरक्कारे ६ वतस्स य पडिआयणं ७ अहरगईवासोवसपया ८ दुल्लहे खलु भो ! गिहीण धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ९ आयंके से वहाय होइ १० सकप्पे से वहाय होइ ११ सोवक्केसे गिहिवासे, निरुवक्केसे परियाए १२ बंधे गिहिवासे, मुक्खे परियाए १३ सावज्जे गिहिवासे, अणवज्जे परियाए १४ वहु-साहारणा गिहिण कामभोगा १५ पत्तेय पुण्णपाव १६ अणिच्चं खलु भो ! मणुयाण जीवियं कुसग्गजलबिंदुचचंल १७ वहु च खलु भो ! पावं कम्मं पगड १८ पावाण च खलु भो । कडाण कम्माण पुव्विं दुच्चिन्नाणं दुप्पडिकताण वेइत्ता, मुक्खो, 'नत्थि अवेइत्ता' तवसा वा झोसइत्ता । अट्ठारसम पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो ।

जया य चयइ धम्मं, अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए वाले, आयइं नावबुज्झइ ।१।
जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ।२।

जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुया ठाणा, स पच्छा परितप्पई ।३।
जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो ।
राया य रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ।४।
जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो ।
सिट्ठिव्व कव्वडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ।५।
जया य थेरओ होइ, समइक्कंत जुव्वणो ।
मच्छुव्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ।६।
जया य कुकुडुबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ ।७।
पुत्तदारपरिकिण्णो, मोहसंताणसंतओ ।
पंकोसण्णो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ।८।
अज्ज आहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ ।
जइऽहं रमंतो परियाए, सामण्णे जिणदेसिए ।९।
देवलोगसमाणो य, परियाओ महेसिणं ।
रयाणं अरयाणं च, महानरयसारिसो ।१०।
अमरोवमं जाणिय सुक्खमुत्तमं, रयाण परियाइ तहाऽरयाणं ।
नरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, रमिज्ज तम्हा परियाय पंडिए ।११।
धम्माउ भट्ठं सिरिओ अवेयं, जण्णग्गि विज्झायमिवऽप्पतेयं ।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला, दाढुद्धियं घोरविसं व नागं ।१२।
इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणम्मि ।
चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो, संभिण्णवित्तस्स य हिट्ठओ गई ।१३।
भुंजित्तु भोगाइं पसज्झचेयसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।

गइं च गच्छे अणभिज्झियं दुहं, बोही य से नो सुलहा पुणो पुणो ।१४।
इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्झइ सागरोवम,किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ।१५।
न से चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असासया भोगपिवास जतुणो ।
न चे सरीरेण इमेणऽविस्सइं, अविस्सई जीवियपज्जवेण मे ।१६।
जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ, चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं ।
तं तारिस नो पइलंति इंदिया,उविंतिवाया व सुदंसणं गिरिं ।१७।
इच्चेव संपस्सिय बुद्धिम नरो, आय उवाय विविहं वियाणिया ।
काएण वाया अदु माणसेण, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ।

॥ रइवक्का पढमा चूला समत्ता ॥ १ ॥

॥ विवित्तचरिया बीआ चूलिया ॥

चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासियं ।
जं सुणित्तु सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ।१।
अणुसोअपट्ठिए बहुजणम्मि, पडिसोय-लद्ध-लक्खेण ।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेण ।२।
अणुसोयसुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआणं ।
अणुसोओ ससारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ।३।
तम्हा आयारपरक्कमेणं, संवर-समाहि-बहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य, हुंति साहूण दट्ठव्वा ।४।
अनिएयवासो समुयाणचरिया, अण्णायउञ्छं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिण पसत्था ।५।
आइन्न-ओमाण-विवज्जणा य, ओसन्न-दिट्ठाहड-भत्तपाणे ।

ससट्ठकप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जायसंसट्ठ जई जइज्जा।६।
अमज्जमंसासि अमच्छरीया, अभिक्खण निव्विगइं गया य।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झाय जोगे पयओ हविज्जा।७।
न पडिण्णविज्जा सयणासणाइ, सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा।८।
गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा, अभिवायण वंदण पूयणं वा।
असंकिलिट्ठेहिं सम वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी।९।
न वा लभेज्जा निउण सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो।
संवच्छर वा वि परं पमाणं, बीयं च वासं न तहिं वसिज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ।११।
जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, संपिक्खइ अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि।१२।
किं मे परो पासइ किं च अप्पा, किंवाऽहं खलियं न विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं नो पडिबंध कुज्जा।१३।
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेण।
तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइण्णओ खिप्पमिवक्खलीणं।१४।
जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स, धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी, सो जीवई संजमजीविएणं।१५।
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ।१६।

॥ विवित्तचरिआ बीआ चूला समत्ता ॥ २ ॥

॥ इइ दसवेआलिअ सुत्तं समत्तं ॥

॥ उत्तरज्झयरा सुत्तं ॥

विणयसुयं पढमं अज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥
आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चइ ॥२॥
आणाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चइ ॥३॥
जहा सुणी पूइ-कण्णी, निक्कसिज्जई सव्वसो ।
एवं दुस्सील-पडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जइ ।४।
कण-कुण्डगं चइ-त्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरो ।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीलें रमई मिए ।५।
सुणिया भावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छन्तो हिय-मप्पणो ।६।
तम्हा विणय-मेसिज्जा, सीलं पडि-लभेज्जओ ।
बुद्ध-पुत्त नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ।७।
निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ।८।
अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ।९।
मा य चण्डालियं कासी, बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगओ ।१०।
आहच्च चण्डालियं कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइवि ।
कडं कडेत्ति भासेज्जा, अकडं नो कडेत्ति य ।११।

मा गलियस्सेव कसं, वयण-मिच्छे पुणो-पुणो ।
कसं व दट्ठु माइण्णे, पावगं परिवज्जए ।१२।
अणासवा थूल-वया कुसीला, मिउपि चण्डं पकरन्ति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया, पसायए ते हु दुरासयंऽपि ।१३।
नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुवेज्जा, धारेज्ज पियमप्पियं ।१४।
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ।१५।
वरं मे अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य ।
माहं परेहि दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य ।१६।
पडिणीय च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइवि ।१७।
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे उरूणा उरु, सयणे नो पडिस्सुणे ।१८।
नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्ड च संजए ।
पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणन्तिए ।१९।
आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरु सया ।२०।
आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइवि ।
चइ-ऊणमासणं धीरो, जओ जुत्तं पडिस्सुणे ।२१।
आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव सेज्जागओ कयाइवि ।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छिज्जा पजलीउडो ।२२।
एवं विणय-जुत्तस्स, सुत्त अत्थं च तदुभयं ।

पुच्छ-माणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहा सुयं ।२३।
मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए ।
भासा-दोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ।२४।
न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सऽन्तरेण वा ।२५।
समरेसु अगारेसु, संधीसु य महापहे ।
एगो एगित्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ।२६।
जं मे बुद्धाणुसासंति, सीएण फरुसेण वा ।
मम लाभोत्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ।२७।
अणु-सासण-मोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं ।
हियं तं मण्णई पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ।२८।
हियं विगय-भया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाणं, खंतिसोहिकरं पयं ।२९।
आसणे उव-चिट्ठेज्जा, अणुच्चे अकुक्कुए थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जऽप्पकुक्कुए ।३०।
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ।३१।
परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडि-रूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ।३२।
नाइदूरमणासन्ने, नाऽन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं नाऽइक्कमे ।३३।
नाइउच्चे व नीए वा, नासन्ने नाइ-दूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्डं, पडिगाहेज्ज संजए ।३४।

अप्पपाणेऽप्पवीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि सवुडे ।
समयं सजए भुजे, जय अपरिसाडिय ।३५।
सु-कडित्ति सु-पक्कित्ति, सु-च्छिन्ने सु-हडे मडे ।
सु-णिट्ठिए सु-लट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ।३६।
रमए पण्डिए सास, हय भद्दं व वाहए ।
वालं सम्मइ सासंतो, गलियस्सं व वाहए ।३७।
खड्डुया मे चेवडा मे, अक्कोसा य वहा य मे ।
कल्लाण-मणु-सासंतो, पाव-दिट्ठित्ति मन्नई ।३८।
पुत्तो मे भाय नाइत्ति, साहू कल्लाण मन्नई ।
पाव-दिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासित्ति मन्नई ।३९।
न कोवए आयरियं, अप्पाणपि न कोवए ।
बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेसए ।४०।
आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए ।
विज्झवेज्ज पजलीउडो, वएज्ज न पुणोत्ति य ।४१।
धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहिं आयरियं सया ।
तमायरतो ववहारं, गरहं नाभिगच्छई ।४२।
मणोगय वक्कगय, जाणित्तायरियस्स उ ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ।४३।
वित्ते अचाइए निच्चे, खिप्पं हवइ सुचोइए ।
जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइ कुव्वई सया ।४४।
नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए ।
हवई किच्चाण सरण, भूयाण जगई जहा ।४५।
पुज्जा जस्स पसीयति, सबुद्धा पुव्वसंथुया ।

पसन्ना लाभ-इस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ।४६।
स पुज्जसत्थे सु-विणियसंसए, मणोरुई चिट्ठइ कम्म-संपया ।
तवो-समायारि-समाहि-संवुडे,महज्जुइ पञ्च वयाइं पालिया ।४७।
स देव-गंधव्व-मणुस्सपूइए, चइत्तु देहं मल-पंक-पुव्वयं ।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए ।४८।

॥ विणयसुय नाम पढम अज्झयण समत्त ॥ १ ॥

॥ दुइयं परिसहज्झयणं ॥ २॥

सुयं मे आउस तेणं भगवया एव-मक्खायं। इह खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया ! जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विणिहण्णेज्जा। कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विणिहन्नेजा ? इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा; तं जहा—दिगिछा-परीसहे १ पिवासा-परीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिण-परीसहे ४ दंस-मसय-परीसहे ५ अचेल-परीसहे ६ अरइ-परीसहे ७ इत्थी-परीसहे ८ चरिया-परीसहे ९ निसीहिया-परीसहे १० सेज्जा-परीसहे ११ अक्कोस-परीसहे १२ वह-परीसहे १३ जायणा-परीसहे १४ अलाभ-परीसहे १५ रोग-परीसहे १६ तणफास-परीसहे १७ जल्ल-परीसहे १८ सक्कार-पुरक्कार-परीसहे १९ पन्ना-परीसहे २० अन्नाण-परीसहे २१ दंसण-परीसहे २२।

परीसहाण पविभत्ती, कासवेण पवेइया ।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ।१।
दिगिंछा-परिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं ।
ण छिंदे ण छिंदावए, ण पए ण पयावए ।२।
काली-पव्वंग-सकासे, किसे धमणिसतए ।
मायण्णे असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे ।३।
तओ पुट्ठो पिवासाए, दुगुंछी लज्जसजए ।
सीओदगं ण सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ।४।
छिण्णावाएसु पथेसु आउरे सुपिवासिए ।
परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परीसहं ।५।
चरत विरय लूहं, सीयं फुसइ एगया ।
णाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिण-सासण ।६।
ण मे णिवारणं अत्थि, छवित्ताण ण विज्जइ ।
अहं तु अग्गिं सेवामि, इइ भिक्खू ण चिंतए ।७।
उसिण परियावेणं, परिदाहेण तज्जिए ।
घिंसु वा परियावेण, सायं णो परिदेवए ।८।
उण्हाहितत्तो मेहावी, सिणाणं णोऽवि पत्थए ।
गायं णो परिसिंचेज्जा, ण वीएज्जा य अप्पयं ।९।
पुट्ठे य दंस-मसएहिं, समरे व महा-मुणी ।
णागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ।१०।
ण संतसे ण वारेज्जा, मणंऽपि ण पओसए ।
उवेहे ण हणे पाणे, भुजंते मंस-सोणियं ।११।
परिजुण्णेहिं वत्थेहिं, होक्खामित्ति अचेलए ।

अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू ण चिंतए ।१२।
एगयाऽचेलए होइ, सचेले या वि एगया ।
एयं धम्महियं णच्चा, णाणी णो परिदेवए ।१३।
गामाणुगाम रीयतं, अणगार अकिंचणं ।
अरई अणुप्पवेसेज्जा, नं तितिक्खे परीसहं ।१४।
अरइं पुट्ठओ किच्चा, विरए आय-रक्खिए ।
धम्मारामे णिरारंभे, उवसंते मुणी चरे ।१५।
सगो एस मणूसाण, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ।
जस्स एया परिण्णाया, सुकड तस्स सामण्णं ।१६।
एवमादाय मेहावी, पंकभूया उ इत्थिओ ।
णो ताहि विणिहण्णेज्जा, चरेज्जऽत्तगवेसए ।१७।
एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।
गामे वा णगरे वावि, णिगमे वा रायहाणीए ।१८।
असमाणो चरे भिक्खू, णेव कुज्जा परिग्गहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए ।१९।
सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ णिसीएज्जा, ण य वित्तासए परं ।२०।
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए ।
सकाभीओ ण गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अण्णमासणं ।२१।
उच्चावयाहि सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामव ।
णाइवेलं विहण्णेज्जा, पाव-दिट्ठी विहण्णइ ।२२।
पइरिक्कमुवस्सयं लद्धु, कल्लाण अदुव पावगं ।
किमेगराइं करिस्सेइ, एवं तत्थऽहियासए ।२३।

अक्कोसेज्जा परे भिक्खु, ण तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू ण सजले ।२४।
सोच्चाण फरुसा भासा, दारुणा गाम-कंटगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा, ण ताओ मणसीकरे ।२५।
हओ ण संजले भिक्खू, मणंपि ण पओसए ।
तितिक्खं परम णच्चा, भिक्खू धम्म समायरे ।२६।
समणं संजय दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई ।
णत्थि जीवस्स णासुत्ति, एवं पेहेज्ज सजए ।२७।
दुक्कर खलु भो णिच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइय होइ, णत्थि किंचि अजाइय ।२८।
गोयरग्ग-पविट्ठस्स, पाणी णो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू ण चिंतए ।२९।
परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिंडे अलद्धे वा, णाणुतप्पेज्ज पडिए ।३०।
अज्जेवाह ण लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो त ण तज्जए ।३१।
णच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
अदीणो ठावए पण्ण, पुट्ठो तत्थऽहियासए ।३२।
तेगिच्छं णाभिणदेज्जा, सचिक्खऽत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्ण, जं ण कुज्जा ण कारवे ।३३।
अचेलगस्स लूहस्स, सजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ।३४।
आयवस्स णिवाएणं, अउला हवइ वेयणा ।

एवं णच्चा ण सेवंति, ततुजं तणतज्जिया । ३५।
किलिण्णगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
घिसु वा परियावेण, साय णो परिदेवए ।३६।
वेएज्ज णिज्जरापेहि, आरिय धम्मऽणुत्तरं ।
जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ।३७।
अभिवायण-मब्भुट्ठाण, सामी कुज्जा णिमंतण ।
जे ताइ पडिसेवंति, ण तेसिं पीहए मुणी ।३८।
अणुक्कसाई अप्पिच्छे, अण्णाएसी अलोलुए ।
रसेसु णाणुगिज्झेज्जा, णाणुतप्पेज्ज पण्णवं ।३९।
से णूण मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
जेणाहं णाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ।४०।
अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाण, णच्चा कम्मविवागयं ।४१।
णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं णाभिजाणामि, धम्मं कल्लाण पावगं ।४२।
तवोवहाण-मादाय, पडिमं पडिवज्जओ ।
एवंवि विहरओ मे, छउमं ण नियट्टइ ।४३।
णत्थि णूणं परेलोए, इड्ढी वावी तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ-मित्ति, इइ भिक्खू ण चिंतए ।४४।
अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवा वि भविस्सइ ।
मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू ण चिंतए ।४५।
एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू ण विहम्मेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई । त्तिबेमि ४६।

॥ दुइअ परीसहज्झयण समत्त ॥२॥

।। तइयं चाउरंगिज्जं अज्झयणं ।।३।।

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जतुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा, सजमम्मि य वीरियं ।१।
समावण्णाण संसारे, णाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा णाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभया पया ।२।
एगया देवलोएसु, णरएसु वि एगया ।
एगया आसुर काय, अहाकम्मेहिं गच्छइ ।३।
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डालबुक्कसो ।
तओ कीड-पयंगो य, तओ कुथु-पिवीलिया ।४।
एवमावट्ट-जोणीसु, पाणिणो कम्म-किब्विसा ।
ण णिविज्जति ससारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ।५।
कम्म-सगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया वहु-वेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ।६।
कम्माण तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययति मणुस्सयं ।७।
माणुस्सं विग्गहं लद्धु, सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जति, तवं खतिमहिंसय ।८।
आहच्च सवण लद्धु, सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सइ ।९।
सुइ च लद्धु सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लह ।
बहवे रोयमाणा वि, णो य ण पडिवज्जए ।१०।
माणुसत्तम्मि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धु, सवुडे णिद्धुणे रयं ।११।

सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ ।
णिव्वाण परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए ।१२।
विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए ।
सरीर पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमई दिसं ।१३।
विसालिसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा ।
महासुक्का व दिप्पता, मण्णंता अपुणच्चव ।१४।
अप्पिया देवकामाणं, काम-रूव-विउव्विणो ।
उड्ढ कप्पेसु चिट्ठति, पुव्वा वाससया वहू ।१५।
तत्थ ठिच्चा जहा-ठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
उवेति माणुस जोणि, से दसंगेऽभिजायई ।१६।
खेत्तं वत्थु हिरण्णं च, पसवो दास-पोरुस ।
चत्तारि काम-खंधाणि, तत्थ से उववज्जई ।१७।
मित्तवं णायव होइ, उच्चागोए य वण्णव ।
अप्पायंके महा-पण्णे, अभिजाए जसोबले ।१८।
भोच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरुवे अहाउय ।
पुव्विं विसुद्ध-सद्धम्मे, केवल वोहि वुज्झिया ।१९।
चउरंग दुल्लह णच्चा, सजम पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मसे, सिद्धे हवइ सासए ।२०। त्ति वेमि

।। इति चाउरगिज्ज णाम तइअ अज्झयण समत्त ।।३।।

।। चउत्थं असंखयं अज्झयणं ।।४।।

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु णत्थि ताणं ।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, किण्णु-विहिंसा अजया गहिंति ।१।
जे पाव-कम्मेहिं धण मणूसा, समाययति अमइ गहाय ।

।हाय ते पास-पयट्टिए णरे, वेराणुवद्धा णरय उवेति ।२।
।ेणे जहा सधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एव पया पेच्च इह च लोए कडाण कम्माण ण मुक्ख अत्थि ।३।
संसारमावण्ण परस्स अट्ठा, साहारण जं च करेइ कम्म ।
म्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, ण बधवा बधवय उवेति ।४।
ेण ताण ण लभे पमत्ते, इमम्मि लोए अदुवा परत्था ।
पणट्ठेव अणत-मोहे, णेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ।५।
यावि पडिवुद्ध-जीवी, ण वीससे पडिए आसुपण्णे ।
मुहुत्ता अवलं सरीरं, भारंडपक्खी व चरेऽप्पमत्तो ।६।
ाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
ेविय वूहइत्ता, पच्छा परिण्णाय मलावधसी ।७।
उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
इ चरेप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ।८।
ण लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाण ।
सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीस्स भेए ।९।
क्केइ विवेगमेउ, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
ायं समया-महेसी, आयाणुरक्खी चरेऽप्पमत्तो ।१०।
मोह-गुणे जयंत, अणेग-रूवा समण चरतं ।
ासा फुसति असमजसं च, ण तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ।११।
मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मण ण कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं,मायं ण सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ।१२।
जेऽसंखया तुच्छपरप्पवाई, ते पिज्ज-दोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मेत्ति दुगुंछमाणो,कखे गुणे जाव सरीरभेए ।१३।त्ति बेमि

॥ इति असखय चउत्थ अज्झयण समत्त ॥

॥ अकाममरणिज्जं णामं पंचमं अज्झयणं ॥

अण्णवंसि महोहंसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरे ।
तत्थ एगे महापण्णे, इमं पण्हमुदाहरे ।१।
संतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणंतिया ।
अकाम-मरणं चेव, सकाम-मरणं तहा ।२।
बालाणं तु अकामं तु, मरणं असइं भवे ।
पंडियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ।३।
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
काम-गिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ।४।
जे गिद्धे काम-भोगेसु, एगे कूडाय गच्छई ।
ण मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ।५।
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा णत्थि वा पुणो ।६।
जणेण सद्धिं होक्खामि, इइ बाले पगब्भई ।
काम-भोगाणुराएण, केसं संपडिवज्जई ।७।
तओ से दंडं समारभई, तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ।८।
हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयंति मण्णई ।९।
कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ, सिसुणागुव्व मट्टियं ।१०।
तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ पर-लोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ।११।

पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ।२३।
एव सिक्खा-समावन्ने, गिहि-वासेवि सुव्वए ।
मुच्चई छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगय ।२४।
अह जे सवुडे भिक्खू, दोण्हमन्नयरे सिया ।
सव्व-दुक्खप्पहीणे वा, देवे वावि महिड्ढिए ।२५।
उत्तराइं विमोहाइं, जुईमताऽणुपुव्वसो ।
समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइ जससिणो ।२६।
दीहाउया इड्ढिमंता, समिद्धा कामरूविणो ।
अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ।२७।
ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्खित्ता संजम तवं ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिणिव्वुडा ।२८।
तेसिं सोच्चा सपुज्जाण, संजयाणं वुसीमओ ।
न संतसति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया ।२९।
तुलिया विसेसमादाय, दया-धम्मस्स खंतिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ।३०।
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमतिए ।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेय देहस्स कखए ।३१।
अहकालम्मि सपत्ते, आघायाय समुस्सय ।
सकाममरण मरई, तिण्हमन्नयरं मुणी ।३२।

॥ इति अकाममरणिज्ज पंचम अज्झयण समत्तं ॥५॥

॥ खुड्डागनियठिज्जं छट्ठं अज्झयणं ॥६॥

जावतऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसभवा ।
लुप्पंति वहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए ।१।

समिक्ख पण्डिए तम्हा, पासजाई पहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मेत्तिं भूएसु कप्पए ।२।
माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नाल ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सकम्मुणा ।३।
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदसणे ।
छिन्दे गेहिं सिणेहं च, न कंखे पुव्वसंथवं ।४।
गवासं मणि-कुण्डलं, पसवो दास-पोरुसं ।
सव्व-मेयं चइत्ताणं, काम-रूवी भविस्ससि ।५।
थावरं जगमं चेव, धणं धन्नं उवक्खरं ।
पंच्चमाणस्स कम्मेहिं, नाल दुक्खाउ मोयणे ।६।
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ।७।
आयाण नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्नं भुञ्जेज्ज भोयणं ।८।
इहमेगे उ मन्नति, अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं विदित्ताणं, सव्व-दुक्खाण मुच्चई ।९।
भणता अकरेता य, बध-मोक्ख-पइण्णिणो ।
वाया-विरिय-मित्तेण, समासासेति अप्पयं ।१०।
न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।
विसन्ना पाव-कम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ।११।
जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते दुक्ख-सम्भवा ।१२।
आवन्ना दीहमद्धाणं, ससारम्मि अणंतए ।

समिक्ख पण्डिए तम्हा, पासजाई पहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मेत्तिं भूएसु कप्पए ।२।
माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नाल ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सकम्मुणा ।३।
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदंसणे ।
छिन्दे गेहिं सिणेहं च, न कंखे पुव्वसंथवं ।४।
गवासं मणि-कुण्डलं, पसवो दास-पोरुसं ।
सव्व-मेयं चइत्ताणं, काम-रूवी भविस्ससि ।५।
थावरं जंगम चेव, धणं धन्न उवक्खरं ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नाल दुक्खाउ मोयणे ।६।
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ।७।
आयाण नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्न भुन्जेज्ज भोयणं ।८।
इहमेगे उ मन्नति, अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं विदित्ताण, सव्व-दुक्खाण मुच्चई ।९।
भणता अकरेता य, बध-मोक्ख-पइण्णिणो ।
वाया-विरिय-मित्तेण, समासासेति अप्पय ।१०।
न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।
विसन्ना पाव-कम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ।११।
जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते दुक्ख-सम्भवा ।१२।
आवन्ना दीहमद्धाणं, ससारम्मि अणंतए ।

तम्हा सव्व-दिसं पस्सं, अप्पमत्तो परिव्वए ।१३।
वहिया उड्ढमादाय, नावकखे कयाइवि ।
पुव्व-कम्म-क्खय-ट्ठाए, इमं देह समुद्धरे ।१४।
विविच्च कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स, कड लद्धूण भक्खए ।१५।
सन्निहिं च न कुविज्जा, लेव-मायाए संजए ।
पक्खीपत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए ।१६।
एसणा-समिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि, पिण्ड-वायं गवेसए ।१७।

एवं से उदाहु अणुत्तर-नाणी अणुत्तर-दसी अणुत्तर-नाण-दंसण-धरे अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए ।१८।

॥ खुड्डागनियठिज्ज छट्ठ अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

॥ एलयं सत्तमं अज्झयणं ॥७ ॥

जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयगणे ।१।
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोयरे ।
पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ।२।
जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेतूण भुज्जई ।३।
जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए ।
एवं वाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउय ।४।
हिंसे वाले मुसावाई, अद्धाणमि विलोवए ।

अन्न-दत्तहरे, तेणे, माई कण्णु हरे सढे ।५।
इत्थी-विसय-गिद्धे य, महारंभ-परिग्गहे ।
भुजमाणे सुरं मसं, परिवूढे परंदमे ।६।
अयकक्करभोइ य, तुंदिल्ले चिय-लोहिए ।
आउयं नरए कंखे, जहाएस व एलए ।७।
आसणं सयण जाणं, वित्तं कामे य भुजिया ।
दुस्साहड धणं हिच्चा, बहु सचिणिया रयं ।८।
तओ कम्मगुरू जतू, पच्चुप्पन्न-परायणे ।
अएव्व आगयाएसे, मरणतम्मि सोयई ।९।
तओ आउ-परिक्खीणे, चुयादेह विहिंसगा ।
आसुरीयं दिसं बाला, गच्छति अवसा तम ।१०।
जहा कागिणिए हेउ, सहस्सं हारए नरो ।
अपत्थं अम्बग भोच्चा, राया रज्ज तु हारए ।
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिए।
सहस्स-गुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ।१२।
अणेग-वासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई ।
जाइं जीयति दुम्मेहा, उणे-वास-सयाउए ।१३।
जहा य तिन्नि वाणिया, मूलं घेत्तूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहई लाभं, एगो मूलेण आगओ ।१४।
एगो मूलंपि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ।१५।
माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे ।
मूलच्छेएण जीवाणं, नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ।१६।

दुहओ गई बालस्स, आवई वहमूलिया ।
देवत्त माणुसत्तं च, ज जिए लोलयासढे ।१७।
तओ जिए सइं होइ, दुविहं दोग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए, सुचिरादवि ।१८।
एवं जिय सपेहाए, तुलिया वाल च पण्डियं ।
मूलिय ते पवेसति, माणुस्सं जोणिमेति जे ।१९।
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहि-सुव्वया ।
उवेति माणुस जोणिं, कम्मसच्चा हु पाणिणो ।२०।
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया ।
सीलवता सविसेसा, अदीणा जंति देवयं ।२१।
एवमद्दीणवं भिक्खू, अगारिं च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्च मेलिक्खं, जिच्चमाणे न सविदे ।२२।
जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण सम मिणे ।
एवं माणुसग्गा कामा, देव-कामाण अंतिए ।२३।
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं, जोगक्खेमं न संविदे ।२४।
इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झई ।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सई ।२५।
इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई ।
पूइदेहनिरोहेणं, भवे देवेत्ति मे सुयं ।२६।
इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं ।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उवज्जई ।२७।
बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया ।

चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जई ।२८।
धीरस्स पस्स धीरत्तं, सच्च-धम्माणुवत्तिणो ।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जई ।२९।
तुलियाण बालभावं, अबाल चेव पडिए ।
चइऊण बालभावं, अबाल सेवए मुणि ।३०।

॥ इति एलय सत्तम अज्झयण समत्त ॥७॥

॥ काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं ॥ ८ ॥

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा ? ।१।
विजहित्तु पुव्वसंजोग, न सिणेहं कहिंचि कुवेज्जा ।
असिणेह-सिणेह-करेहिं, दोस पओसेहिं मुच्चए भिक्खू ।२।
तो नाण-दसण-समग्गो, हिय-निस्सेसाय सव्व-जीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासई मुणिवरो विगय-मोहो ।३।
सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू ।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ।४।
भोगा-मिस-दोस-विसन्ने, हिय-निस्सेयसबुद्धि-वोच्चत्थे ।
बाले य मंदिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलम्मि ।५।
दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीर-पुरिसेहिं ।
अह संति सुव्वया साहू, जे तरंति अतरं वणिया वा ।६।
समणामुएगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता ।
मंदा निरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ७।
न हु पाण-वहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्व-दुक्खाणं ।

एवमारिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहु-धम्मो पन्नत्तो ।८।
पाणे य नाइवाएज्जा, से समिइत्ति वुच्चई ताई ।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ उदगं व थलाओ ।९।
जग-निस्सिएहि भूएहि, तस-नामेहि थावरेहिं च ।
नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ।१०।
सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
जायाए घासमेसेज्जा, रस-गिद्धे न सिया भिक्खाए ।११।
पंताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंडं पुराण-कुम्मासं ।
अदु वुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ।१२।
जे लक्खणं च सुविण च, अगविज्जं च जे पउंजति ।
न हु ते समणा वुच्चति, एवं आयरिएहि अक्खायं ।१३।
इहजीविय अणियमेत्ता, पभट्ठा समाहिजोएहिं ।
ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए ।१४।
तत्तोऽवि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहुं अणुपरियडति ।
बहु-कम्म-लेव-लित्ताण, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ।१५।
कसिणपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ।१६।
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई ।
दोमासकयं कज्जं, कोडीएवि न निट्ठियं ।१७।
नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंडवच्छासुऽणेगचित्तासु ।
जाओ पुरिस पलोभित्ता, खेल्लंति जहा व दासेहिं ।१८।
नारीसु नोव-गिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।१९।

इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेण च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहिंति जे उ काहिंति, तेहिं आराहिया दुवे लोग ।२०।

॥ काविलीय अट्ठम अज्झयण सम्मत्तं ॥८॥

॥ णवमं नमिपवज्जा अज्झयणं ॥ ९ ॥

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसत-मोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ।१।
जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ।२।
सो देवलोगसरिसे, अंतेउर-वरगओ वरे भोए,
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ।३।
मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खतो, एगंत-महिड्ढिओ भवयं ।४।
कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतम्मि ।
तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमंतम्मि ।५।
अब्भुट्ठिय रायरिसिं, पवज्जा-ठाण-मुत्तम ।
सक्को माहण-रूवेण, इमं वयणमब्बवी ।६।
किण्णु-भो ! अज्ज मिहिलाए, कोलाहलग संकुला ।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ।७।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।८।
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूण बहु-गुणे सया ।९।

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो खगा ।१०।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।११।
एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं ।
भयवं अंतेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ।१२।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।१३।
सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं ।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ।१४।
चत्त-पुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जई ।१५।
बहु खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ।१६।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविंदो इणमब्बवी ।१७।
पागारं कारइत्ताण गोपुरट्टालगाणि य ।
उस्सूलगसयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ।१८।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चाइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्वी ।१६।
सद्धं नगर किच्चा तव-संवर-मग्गलं ।
खंति निउण-पागारं, तिगुत्त दुप्पधंसय ।२०।
धणु परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।

धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमंथए ।२१।
तव-नारायजुत्तेण, भित्तूणं कम्म-कंचुयं ।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए ।२२।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंद इणमब्वी ।२३।
पासाए कारइत्ताण, बद्ध-माण-गिहाणि य ।
बालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ।२४।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।२५।
ससयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुवेज्ज सासयं ।२६।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।२७।
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।२८।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ।२९।
असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पउंजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चई कारओ जणो ।३०।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।३१।
जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमंति नराहिवा ।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।३२।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्ववी ।३३।
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।३४।
अप्पाण-मेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ ।
अप्पाण-मेव-मप्पाण, जिणित्ता सुहमेहए ।३५।
पंचिंदियाणि कोहं, माणं माय तहेव लोहं च ।
दुज्जय चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जिय ।३६।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविंदो इणमब्ववी ।३७।
जइत्ता विउले जन्ने, भोईत्ता समण-माहणे ।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ।३८।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्ववी ।३६।
जो महस्स सहस्साण, मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ, अदितस्सऽवि किंचणं ।४०।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चाइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्ववी ।४१।
घोरासम चइत्ताण, अन्न पत्थेसि आसम ।
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ।४२।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्ववी ।४३।
मासे मासे उ जो वालो, कुसग्गेण तु भुंजए ।

न सो सुयक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ।४४।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।४५।
हिरण्ण सुवण्ण मणिमुत्त, कंस दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ।४६।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ।४७।
सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणंतिया ॥
पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ।४९।
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ।५०।
अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ।५१।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ।५२।
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जंति दोग्गइं ।५३।
अहे वयंति कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गई-पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ।
अवउज्झिऊण माहण-रूवं, विउव्विऊण इंदत्तं ।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ।५५।

अहो ते निज्जओ कोहो, अहो माणो पराइओ ।
अहो ते निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ।५६।
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दव ।
अहो ते उत्तमा खती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ।५७।
इहं सि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्त-मुत्तमं ठाण, सिद्धि गच्छसि नीरओ। ५८।
एव अभित्थुणतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेतो, पुणो पुणो वंदई सक्को ।५९।
तो वदिऊण पाए, चक्कंकुस लक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी ।६०।
नमी नमेइ अप्पाण, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं च वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ।६१।
एवं करेति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमि रायरिसि ।६२।

।। नमिपव्वज्जा नाम नवमं अज्झयणं समत्तं ।।

।। दुमपत्तयं दसमं अज्झयणं ।।१०।।

दुम-पत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइ-गणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए ।१।
कुसग्गे जह ओस-बिंदुए, थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए ।२।
इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहु-पच्चवायए ।
विहुणाहि रयं पुरे कडं, समयं गोयम ! मा पमायए ।३।

दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम ! मा पमायए ।४।
पढवि-काय-मइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
काल संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ।५।
आउ-क्काय-मइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे ।
काल संखाईय, समयं गोयम ! मा पमायए ।६।
तेउ-क्काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं सखाईयं, समय गोयम ! मा पमायए ।७।
वाउ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ सवसे ।
कालं सखाईय, समय गोयम ! मा पमायए ।८।
वणस्सई-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ सवसे ।
काल-मणत-दुरतयं, समय गोयम ! मा पमायए ।९।
बेइंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ।१०।
तेइंदिय-काय-मइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे ।
काल संखिज्ज-सन्निय, समय गोयम ! मा पमायए ।११।
चउरिंदिय काय-मइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे ।
कालं संखिज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ।१२।
पंचिंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ सवसे ।
सत्तट्ठ-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ।१३।
देवे नेरइए अइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
इक्केक-भव-गहणे, समय गोयम ! मा पमायए ।१४।
एवं भव-संसारे, ससरइ सुहा-सुहेहिं कम्मेहिं ।

जीवो पमाय-वहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए ।१५।
लद्धूणऽवि माणुसत्तणं, आरियत्तं पुणरावि दुल्लह ।
वहवे दसुया मिलक्खुया, समयं गोयम ! मा पमायए ।१६।
लद्धूणवि आरियत्तणं, अहीणपंचिंदियया हु दुल्लहा ।
विगलिंदियया हु दीसई, समय गोयम ! मा पमायए ।१७।
अहीणपंचिंदियत्तंपि से लहे, उत्तम-धम्म-सुई दुल्लहा ।
कुतित्थि-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए ।१८।
लद्धूणवि उत्तमं सुइ, सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्त-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए ।१९।
धम्मऽपि हु सद्दहतया, दुल्लहया काएण फासया ।
इह काम-गुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम ! मा पमायए ।२०।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवति ते ।
से सोय-वले य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ।२१।
परिजूरइ ते सरीरय, केसा पण्डुरया हवति ते ।
से चक्खु-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।२२।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवति ते ।
से घाण-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।२३।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पण्डुरया हवति ते ।
से जिब्भ-वले य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ।२४।
परिजूरइ ते सरीरय, केसा पण्डुरया हवंति ते !
से फास-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।२५।
परिजूरइ ते सरीरय, केसा पण्डुरया हवंति ते ।
से सव्व-वले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।२६।

अरई गण्डं विसूइया, आयंका विविहा फुसंति ते ।
विहडइ विद्धसइ ते सरीरयं, समय गोयम ! मा पमायए ।२७।
वुच्छिद सिणेहमप्पणो, कुमुयं सारइय व पाणियं ।
से सव्व-सिणेह-वज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए ।२८।
चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वंतं पुणोवि आइए, समयं गोयम ! मा पमायए ।२९।
अवउज्झिय मित्त-बंधवं, विउलं चेव धणोह-संचय ।
मा त बिइयं गवेसए, समयं गोयम ! मा पमायए ।३०।
न हु जिणे अज्ज दीसई, बहुमए दीसइ मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम ! मा पमायए ।३१।
अवसोहिय कण्टगापहं, ओइण्णो सि पहं महालयं ।
गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम ! मा पमायए ।३२।
अबले जह भारवाहए, मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए, समय गोयम ! मा पमायए ।३३।
तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारंगमित्तए, समयं गोयम ! मा पमायए ।३४।
अकलेवर-सेणि मूसिया, सिद्धि गोयम ! लोय गच्छसि ।
खेमं च सिव अणुत्तरं, समयं गोयम ! मा पमायए ।३५।
बुद्धे परि-निव्वुडे चरे, गाम गए नगरे व सजए ।
संत्ति-मग्गं च बूहए, समयं गोयम ! मा पमायए ।३६।
बुद्धस्स निसम्म भासियं, सुकहिय-मट्ठ-पओव-सोहियं ।
रागं दोसं च छिंदिया, सिद्धिगइं गए गोयमे ।३७।

॥ दुमपत्तय दसम अज्झयण समत्तं ॥१०॥

॥ वहुसुयपुज्जं एगारसं अज्झयणं ॥ ११ ॥

संजोगा विप्प-मुक्कस्स, आणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ।१।
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई, अविणीए अवहुस्सुए ।२।
अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण य ।३।
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलित्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दंते, न य मम्ममुदाहरे ।४।
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलित्ति वुच्चई ।५।
अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाण च न गच्छइ ।६।
अभिक्खणं कोही हवइ, पवंध च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुय लद्धुण मज्जई ।७।
अवि पाव-परिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं ।८।
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अवियत्ते, अविणीएत्ति वुच्चई ।९।
अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीएत्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ।१०।
अप्प च अहिक्खिवई, पवंध च न कुव्वई ।

मेत्तिज्जमाणो भयई, सुयं लद्धुं न मज्जई ।११।
न य पाव-परिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई ।१२।
कलह-डमर-वज्जिए, बुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसलीणे, सुविणीएत्ति वुच्चई ।१३।
वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं ।
पियकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धु मरिहई ।१४।
जहा संखम्मि पयं निहियं, दुहओ वि विरायइ ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ।१५।
जहा से कम्बोयाणं, आइण्णे कंथए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ।१६।
जहा इण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नंदिघोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए ।१७।
जहा करेणुपरिकिण्णे, कुजरे सट्ठिहायणे ।
बलवते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ।१८।
जहा से तिक्खसिंगे, जायखधे विरायई ।
वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ।१९।
जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ।२०।
जहा से वासुदेवे, संख-चक्क-गदा-धरे ।
अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ।२१।
जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी-महिड्ढिए ।
चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ।२२।

जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे ।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ।२३।
जहा से तिमिर-विद्धसे, उच्चिट्ठंते दिवायरे ।
जलते इव तेएण, एव हवइ बहुस्सुए ।२४।
जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्त-परिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए ।२५।
जहा से समाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणा-धन्न-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ।२६।
जहा सा दुमाण पवरा, जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ।२७।
जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ।२८।
जहा से नगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी ।
नाणोसहि-पज्जलिए, एव हवइ बहुस्सुए ।२९।
जहा से सयंभूरमणे, उदही अक्खओदए ।
नाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ।३०।
समुद्द-गम्भीर-समा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ।३१।
तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए ।
जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धिं सपाउणेज्जासि ।३२।

॥ बहुस्सुयपुज्ज एगारसं अज्झयण समत्त ॥११॥

॥ हरिएसिज्जं बारहं अज्झयणं ॥१२॥

सोवाग-कुल-संभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी ।
हरिएसबलो नाम, आसि भिक्खू जिइदिओ ।१।
इरि-एसण-भासाए, उच्चार-समिईसु य ।
जओ आयाण-निक्खेवे, सजओ सुसमाहिओ ।२।
मण-गुत्तो वय-गुत्तो, काय-गुत्तो जिइदिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडे उवट्ठिओ ।३।
तं पासिऊणं एज्जतं, तवेण परिसोसिय ।
पंतोवहिउवगरणं, उवहसंति अणारिया ।४।
जाइमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिइंदिया ।
अबम्भचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ।५।
कयरे आगच्छइ दित्त-रूवे, काले विकराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए, संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ।६।
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे, काए व आसाइहमागओसि ।
ओमचेलया पसुपिसायभूया, गच्छक्खलाहि किमिह ठिओसि ।७।
जक्खे तहिं तिंदुय-रुक्खवासी, अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ।८।
समणो अहं सजओ बम्भयारी, विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ।९।
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य, अन्नं पभूय भवयाणमेय ।
जाणाहि मे जायणजीविणुत्ति, सेसावसेस लहऊ तवस्सी ।१०।
उवक्खडं भोयण माहणाण, अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्ख ।

न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं, दाहामु तुज्भं किमिह ठिओसि ।११।
थलेसु बीयाइ ववति कासया, तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्भ, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ।१२।
खेत्ताणि अम्ह विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ।१३।
कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ।१४।
तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं, अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरंति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ।१५।
अज्भावयाण पडिकूलभासी, पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियण्ठा ।१६।
समिईहि मज्भं सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ।१७।
के इत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्भावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं खु दण्डेण फलेण हंता, कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ।१८।
अज्भावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहिं वित्तेहिं कसेहिं चेव, समागया तं इसि तालयंति ।१९।
रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्दत्ति नामेण अणिंदियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ।२०।
देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्नामु रन्ना मणसा न भाया ।
नरिंददेविंदभिवंदिएणं, जेणामि वंता इसिणा स एसो ।२१।
एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइंदिओ संजओ बम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥

महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ।२३।
एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विणिवारयंति ।२४।
ते घोररूवा ठिय अतलिक्खे, असुरा तहिं तं जण तालयंति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ।२५।
गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह ।
जायतेय पाएहिं हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ।२६।
आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा, जे भिक्खुय भत्तकाले वहेह ।२७।
सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥
अवहेडिय पिट्ठिसउत्तमंगे, पसारिया बाहु अकम्मचिट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमते, उड्ढमुहे निग्गयजीहनेत्ते ।२९।
ते पासिया खंडिय कट्ठभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निंदं च खमाह भंते ! ।३०।
बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भंते ! ।
महप्पसाया इसिणो हवंति, न हु मुणी कोवपरा हवंति ।३१।
पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेंति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ।३२।
अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भं नवि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्वजणेण अम्हे ।३३।
अच्चेमु ते महाभाग, न ते किंचि न अच्चिमो ।

भुंजाहि सालिमं कुरं, नाणा-वंजण-संजुयं ।३४।
इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं, तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढंति पडिच्छइ भत्त-पाणं, मासस्स उ पारणए महप्पा ।३५।
तहिय गंधोदय-पुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ।३६।
सक्खं खु दीसइ तवो-विसेसो, न दीसई जाइ-विसेस कोई ।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ।३७।
किं माहणा जोइसमारभंता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ।
जं मग्गह बाहिरियं विसोहिं, न तं सुइट्ठं कुसला वयंति ।३८।
कुसं च जूवं तण-कट्ठ-मग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसंता ।
पाणाइं भूयाइं विहेडयंता, भुज्जोऽवि मंदा पकरेह पावं ।३९।
कहं चरे भिक्खु वयं जयामो, पावाइं कम्माइं पुणोल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय जक्ख-पूइया, कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ।४०।
छज्जीवकाए असमारभंता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माण-मायं, एयं परिन्नाय चरंति दंता ।४१।
सुसंवुडो पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
वोसट्ठकाओ सुइचत्तदेहो, महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ।४२।
के ते जोई के य ते जोइठाणे, का ते सुया किं च ते कारिसंगं ।
एहा य ते कयरा संति भिक्खू, कयरेण होमेण हुणासि जोइं ।४३।
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
कम्मेहा संजमजोगसंती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ।४४।
के ते हरए के य ते संतितित्थे, कहिं सिणाओ व रयं जहासि ।
आइक्ख णे संजय जक्ख-पूइया, इच्छामो नाउं भवओ सगासे ।४५।

धम्मे हरए बम्भे संतितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोस ।४६।
एय सिणाणं कुसलेहि दिट्ठ, महासिणाण इसिण पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाण पत्ते ।४७।

।। हरिएसिज्ज बारह अज्झयण समत्त ।।१२।।

।। चित्तसंभूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ।।१३।।

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो, उववन्नो पउमगुम्माओ ।१।
कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ।२।
कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दोवि चित्तसम्भूया ।
सुह-दुक्ख-फल-विवाग, कहेंति ते एक्कमेक्कस्स ।३।
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ।४।
आसीमो भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ।५।
दासा दसण्णे आसी, मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे, सोवागा कासिभूमिए ।६।
देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ।७।
कम्मा नियाणपगडा, तुमे राय ! विचिंतिया ।
तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ।८।

सव्वसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुंजामो, किन्नु चित्ते वि से तहा ।९।
सव्व सुचिण्णं सफल नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं, आया मम पुण्णफलोववेए ।१०।
जाणासि संभूय महाणुभाग, महिड्ढियं पुण्णफलोववेय ।
चित्तंऽपि जाणाहि तहेव रायं, इड्ढी जुई तस्सवि य प्पभूया ।११।
महत्थरूवा वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इहं जयंते समणोमि जाओ ।१२।
उच्चोयए महु कक्के य बम्भे, पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं, पसाहि पचालगुणोववेयं ।१३।
नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं, नारीजणाइ परिवारयतो ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू, मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ।१४।
त पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिव कामगुणेसु गिद्ध ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इम वयणमुदाहरित्था ।१५।
सव्व विलवियं गीय, सव्व नट्ट विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ।१६।
बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न त सुहं कामगुणेसु राय ।
विरत्तकामाण तवोधणाण, जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाण ।१७।
नरिंद जाई अहमा नराण, सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा, वसीअ सोवाग-निवेसणेसु ।१८।
तीसे य जाईइ उ पावियाए, वुच्छामु सोवाग-निवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इह तु कम्माइं पुरे कडाइं ।१९।
सो दाणिसि राय! महाणुभागो, महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।

चइत्तु भोगाइं असासयाइं, आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ।२०।
इह जीविए राय असासयम्मि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंमि लोए ।२१।
जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ।२२।
न तस्स दुक्खं-विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
एक्को सय पच्चणुहोइ दुक्ख, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ।२३।
चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च, खेत्त गिहं धण्ण-धन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ, पर भव सुंदर पावगं वा ।२४।
तं एक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिउं पावगेण ।
भज्जा य पुत्ताविं य नायओ वा, दायारमन्नं अणुसकमंति ।२५।
उवणिज्जई जीविय-मप्पमाय, वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया वयण सुणाहि, मा कासि कम्माइं महालयाइ ।२६।
अहंऽपि जाणामि जहेह साहू, जं मे तुम साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे सगकरा हवति, जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ।२७।
हत्थिणपुरम्मि चित्ता, दट्ठूणं नरवइं महीड्ढीयं ।
कामभोगेसु गिद्धेण, नियाणमसुहं कडं ।२८।
तस्स मे अपडिकंतस्स, इमं एयारिसं फल ।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ।२९।
नागो जहा पंकजलावसन्नो, दट्ठु थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ।३०।
अच्चेइ कालो तरंति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयंति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ।३१।

जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी, तो होहिसि देवो इओ विउव्ववी ।३२।
न तुज्झ भोगे चइऊण वुद्धी, गिद्धोसि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो, गच्छामि रायं आमंतिओसि ।३३।
पचालराया वि य बम्भदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय काम-भोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ।३४।
चित्तोवि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्त-तवो-महेसी ।
अणुत्तर संजम पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइ गओ ।३५।

। चित्तसम्भूइज्ज तेरहमं अज्झयण समत्त ॥ १३ ॥

॥ उसुयारिज्जं चोदहमं अज्झयणं ॥ १४ ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ।१।
सकम्म-सेसेण पुराकएणं, कुलेसु दग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णससारभया जहाय, जिणिंद-मग्गं सरणं पवन्ना ।२।
पुमत्तमागम्म कुमार दोवी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो, रायत्थ देवी कमलावई य ।३।
जाईजरामच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ।४।
पियपुत्तगा दोन्निवि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइ, तहा सुचिण्ण तव सजमं च ।५।
ते काम-भोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकखी अभिजायसड्ढा, तातं उवागम्म इमं उदाहु ।६।

आसासयं दट्ठु इमं विहारं, बहुअंतरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लभामो, आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ।७।
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स बाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयति, जहा न होई असुयाण लोगो ।८।
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होइ मुणी पसत्था ।९।
सोयग्गिणा आयगुणिंधणेणं, मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ।१०।
पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं, निमंतयंतं च सुए धणेण ।
जहक्कम कामगुणेहिं चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ।११।
वेया अहीया न भवंति ताण, भुत्ता दिया निंति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ।१२।
खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ।१३।
परिव्वयंते अणियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चु पुरिसे जरं च ।१४।
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंतित्ति कहं पमाओ ? ।१५।
धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ।१६।
धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ।१७।
जहा य अग्गी अरणी असंतो, खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।

एमेव जाया सरीरसिं सत्ता, समुच्छई नासइ नावचिट्ठे ।१८।
नोइंदियग्गेज्भ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्भत्थहेउं निययस्स बंधो, ससारहेउं च वयंति बंध ।१९।
जहा वय धम्म अजाणमाणा, पाव पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुब्भमाणा परिरक्खियंता, तं नेव भुज्जो वि समायरामो ।२०।
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहि पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे ।
केण अब्भाहओ लोगो, केण वा परिवारिओ ।
का वा अमोहा वुत्ता, जाया चिंतावरो हुमे ।२२।
मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एव ताय वियाणह ।२३।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ।२४।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
धम्म च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ।२५।
एगओ सवसित्ताण, दुहओ सम्मत्त-सजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ।२६।
जस्सत्थि मच्चुणा सक्ख, जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ।२७।
अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो, जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागय नेव य अत्थि किंचि, सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ।२८।
पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो, वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहई समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु ।२९।

पंखाविहूणो व्व जहेह पक्खी, भिच्चव्विहूणो व्व रणे नरिंदो।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए, पहीणपुत्तोमि तहा अहंपि ।३०।
सुसंभिया कामगुणा इमे ते, सपिण्डिया अग्गरसप्पभूया।
भुजामु ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ।३१।
भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ, न जीवियट्ठा पजहामि भोए।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्ख, सचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ।।
मा हु तुम सोयरियाण संभरे, जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी।
भुजाही भोगाइं मए समाण, दुक्ख खु भिक्खायरिया विहारो।३३।
जहा य भोई तणुवं भुयगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मत्तो।
एमेए जाया पयहंति भोए, ते हं कहं नाणगमिस्समेक्को ।३४।
छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय।
धोरेयसीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ।३५।
नहेव कुंचा समइक्कमता, तयाणि जालाणि दलित्तु हसा।
पलेति पुत्ता य पई य मज्झ, ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ।३६।
पुरोहिय त ससुयं सदार, सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं च, रायं अभिक्ख समुवाय देवी ।३७।
वंतासी पुरिसो रायं, न सो होइ पससिओ।
माहणेण परिच्चत्त, धणं आदाउमिच्छसि ।३८।
सव्व जगं जइ तुहं, सव्व वावि धणं भवे।
सव्वऽपि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय त तव ।३९।
मरिहिसि रायं जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय।
एक्को हु धम्मो नरदेव ताणं, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ।४०।
नाहं रमे पक्खिणि पजरे वा, सताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं।

अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा, परिग्गहारंभनियत्तदोसा ।४१।
दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जंतुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयंति, रागद्दोसवसं गया ।४२।
एवमेव वय मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाण न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ।४३।
भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छति, दिया कामकमा इव ।४४।
इमे य बद्धा फदति, मम हत्थज्जमागया ।
वय च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ।४५।
सामिस कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ।४६।
गिद्धोवमे उ नच्चाण, कामे संसारवड्ढणे ।
उरगो सुवण्णपासे व्व, संकमाणो तणुं चरे ।४७।
नागो व्व बधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए ।
एय पत्थं महारायं, उस्सुयारित्ति मे सुयं ।४८।
चइत्ता विउल रज्जं, कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ।४९।
सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे ।
तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ।५०।
एव ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
जंममच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्संतगवेसिणो ।५१।
सासणे विगयमोहाणं, पुव्वि भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेण, दुक्खस्संतमुवागया ।५२।

राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडे ।५३।

॥ उसुयारिज्ज चोदहम अज्झयणं समत्त ॥ १४ ॥

॥सभिक्खू पंचदह अज्झयणं ॥ १५॥

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं, सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे, अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ।१।
राओवरयं चरेज्ज लाढे, विरए वेयवियायरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदसी, जे कम्हि वि न मुच्छिए स भिक्खू ।२।
अक्कोसवह विइत्तु धीरे, मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ।३।
पंत सयणासण भइत्ता, सीउण्हं विविहं च दसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ।४।
नो सक्कइमिच्छई न पूयं, नोऽवि य वंदणगं कुओ पससं ।
से संजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू ।५।
जेण पुण जहाइ जीवयं, मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ।६।
छिन्नं सरं भोममंतलिक्खं, सुमिणं लक्खण-दण्ड-वत्थु-विज्जं ।
अंगवियार सरस्स विजयं, जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ।७।
मंतं मूलं विविह वेज्जचिंत, वमण-विरेयण-धुमणेत्त-सिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छिय च, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ।८।
खत्तियगणउग्गरायपुत्ता, माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ।९।

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अपव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठा, जो संथवं न करेइ स भिक्खू ।१०।
सयणा-सण-पाण-भोयणं, विविहं खाइम-साइम परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे, जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ।११।
जं किंचि आहार-पाणगं विविहं, खाइम-साइम परेसिं लद्धु ।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे, मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू ।१२।
आयामगं चेव जवोदणं च, सीय सोवीरजवोदगं च ।
न हीलए पिण्ड नीरसं तु, पंतकुलाई परिव्वए स भिक्खू ।१३।
सद्दा विविहा भवंति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा ।
भीमा भय-भेरवा उराला, जो सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू ।१४।
वादं विविहं समिच्च लोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी, उवसंते अविहेडए स भिक्खू ।१५।
असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते, जिइंदिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी, चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ।१६।

।। सभिक्खुय पंचदह अज्झयणं समत्त ।।१५।।

।। बम्भचेरसमाहिठाण णाम अज्झयणं ।।१६।।

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बम्भचेर-समाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबम्भयारी

सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।। इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।। तं जहा–विवित्ताइं सयाणासणाइ सेवित्ता हवइ से निग्गंथे । नो इत्थी-पसु-पण्डग-ससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ से निग्गथे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गथस्स खलु इत्थि-पसु-पण्डग-ससत्ताइं सयणा-सणाइं सेवमाणस्स–बम्भ-यारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दोहकालिय वा रोगायंक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थिपसु-पण्डग-संसत्ताइं सयणा-सणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गथे ।।१।।

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गथस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स–बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समु-प्पज्जिजज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा नो इत्थीण कह कहेज्जा ।।२।।

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गथे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धि सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ

धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥३॥

नो इत्थीण इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गंथे। त कहमिति चे। आयरियाह। निग्गंथस्स खलु इत्थीण इदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स—वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गथे इत्थीणं इदियाइं मणोहराइ मणोरमाइ आलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥४॥

नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्तंतरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्द वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कंदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेत्ता हवइ से निग्गथे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्ततरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गोयसद्द वा हसियसद्द वा थणियमद्दं वा कदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा ममुप्पज्जिजज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गथे इत्थीण कुड्डंतरंसि वा दूमतरसि वा भित्तंतरसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयमद्दं वा हसियमद्दं वा थणियसद्दं वा कंदियसद्दं वा विलवियसद्द वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो निग्गथे इत्थिण पुव्वरय पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। अयरियाह। निग्गंथस्स खलु इत्थिणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छिा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीयं आहार आहारित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गंथस्स खलु पणीय आहारं आहारेमाणस्स–बम्भयारिस्स बभचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गथे पणीय आहार आहारेज्जा ॥

नो अइमायाए पाण-भोयण आहारेत्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाण-भोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गथे अइमायाए पाण-भोयण आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसाणुवादी हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। आयरियाह। विभूसावत्तिए विभूसियरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्प-ज्जिजज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्र्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गथे विभूसाणुवादी हविज्जा ।।६।।

नो सद्द-रूव-रस-गध-फासाणुवादी हवइ से निग्गथे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गथस्स खलु सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवादिस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणु-वादी हवेज्जा से निग्गथे। दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ । हवति इत्थ सिलोगा । तं जहा——

जं विवित्त-मणाइण्णं, रहियं इत्थिजणेण य ।
बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ।१।
मणपल्हाय-जणणी, काम-राग-विवड्ढणी ।
बम्भचेररओ भिक्खू, थी-कहं तु विवज्जए ।२।
समं च संथवं थीहिं, सकहं च अभिक्खणं ।
बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ।३।
अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लविय-पेहियं ।
बम्भचेररओ थीणं, चक्खु-गिज्भं विवज्जए ।४।
कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणिय-कंदियं ।
बम्भचेरओ थीण, सोयगिज्भं विवज्जए ।५।
हासं किडं रइं दप्पं, सहसाऽवित्तासियाणि य ।

वम्भचेररओ थीणं, नाणुचिंते कयाइ वि ।६।
पणीय भत्त-पाणं तु, खिप्पं मय-विवड्ढणं ।
वम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ।७।
धम्म-लद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं ।
नाइ-मत्तं तु भुंजेज्जा, वम्भचेर-रओ सया ।८।
विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमण्डणं ।
वम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थ न धारए ।९।
सद्दे-रूवे य गंधे य, रसे-फासे तहेव य ।
पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ।१०।
आलओ थी-जणा-इण्णो, थी-कहा य मणोरमा ।
संथवो चेव नारीणं, तासिं इंदिय-दरिसण ।११।
कूइयं रुइयं गीय, हास-भुत्ता-सियाणि य ।
पणीयं भत्त-पाणं च, अइ-मायं पाण-भोयणं ।१२।
गत्तभूसण-मिट्ठं च, काम-भोगा य दुज्जया ।
नरस्सत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ।१३।
दुज्जए काम-भोगे य, निच्चसो परिवज्जए ।
संका-ठाणणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणव ।१४।
धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही ।
धम्मारामे-रए दंते, वम्भचेर-समाहिए ।१५।
देव-दाणव गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
वम्भयारिं नमसंति, दुक्करं जे करंति तं ।१६।
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिण-देसिए ।
सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहावरे ।१७।

।। वम्भचेरसमाहिठाण समत्ता ।।१६।।

।। पावसमणिज्जं सत्तदहं अज्झयणं ।।१७।।

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे, धम्मं सुणित्ता विणग्रोववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं वोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ।१।
सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पजई भोत्तु तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसुत्ति, कि नाम काहामि सुएण भंते ।२।

जे केइ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।३।
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।४।
आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणेत्ति वुच्चई ।५।
सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।६।
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमज्जिय-मारुहइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।७।
दव-दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं ।
उल्लंघणे य चण्डे य, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।८।
पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकम्बलं ।
पडिलेहा अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।९।
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया ।
गुरुपारिभावए निच्चं, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१०।
बहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।

असंविभागी अवियत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।११।
विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्त-पन्नहा ।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१२।
अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणम्मि अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१३।
ससरक्खपाए सुवई, सेज्जं न पडिलेहइ ।
संथारए अणाउत्ते, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१४।
दुद्ध-दही-विगईओ, आहारेई अभिक्खणं ।
अरए य तवो-कम्मे, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१५।
अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेई अभिक्खणं ।
चोइओ पडिचोएइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१६।
आयरिय-परिच्चाई, परपासण्डसेवए ।
गाणंगणिए दुब्भूए, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१७।
सयं गेहं परिच्चजज, परगेहंसि वावरे ।
निमित्तेण य ववहरइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१८।
सन्नाइ-पिण्ड जेमेइ, नेच्छइ सामुदाणियं ।
गिहि-निसेज्जं च वाहेइ, पाव-समणेत्ति वुच्चई ।१९।
एयारिसे पंच-कुसील-संवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए ।२०।
जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं ।२१।

॥ पावसमणिज्जं सत्तदह अज्झयण समत्त ॥१७॥

।। संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं ।।१८।।

कम्पिल्ले नयरे राया, उदिण्ण-बलवाहणे ।
नामेणं संजए नामं, मिगव्वं उवणिग्गए ।१।
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य ।
पायताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ।२।
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे ।
भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ।३।
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाण-सजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ।४।
अप्फोव-मण्डवम्मि, झायइ खवियासवे ।
तस्सागए मिगे पासं, वहेइ से नराहिवे ।५।
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता, अणगार तत्थ पासई ।६।
अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ ।
मए उ मंद-पुण्णेणं, रस-गिद्धेण घित्तुणा ।७।
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वदए पाए, भगव एत्थ मे खमे ।८।
अह मोणेण सो भगवं. अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ।९।
सजओ अहमम्मीति, भगवं वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ।१०।
अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य ।

अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी ?।११।
जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्व-मवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी ।१२।
जीवियं चेव रूवं च, विज्जु-संपाय-चंचलं ।
जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे ।१३।
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा ।
जीवंत-मणुजीवंति, मयं नाणुव्वयंति य ।१४।
नीहरंति मयं पुत्ता, पितरं परम-दुक्खिया ।
पितरोवि तहा पुत्ते, बंधू रायं तव चरे ।१५।
तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परि-रक्खिए ।
कीलंतिऽन्ने नरा रायं, हट्ठ-तुट्ठ-मलंकिया ।१६।
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं ।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ।१७।
सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए ।
महया संवेग-निव्वेदं, समावन्नो नराहिवो ।१८।
'संजओ' चइउं रज्जं, निक्खंतो जिण-सासणे ।
'गद्दभालिस्स' भगवओ, अणगारस्स अंतिए ।१९।
चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ।२०।
किंनामे किंगोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे ।
कहं पडियरसी बुद्धे, कहं विणीएत्ति वुच्चसी ।२१।
संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो ।
'गद्दभाली' ममायरिया, विज्जा-चरण-पारगा ।२२।

किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणं च महामुणी ।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई ।२३।
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए ।
विज्जाचरण संपन्ने, सच्चे सच्च-परक्कमे ।२४।
पडंति नरए घोरे, जे नरा पाव-कारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्म-मारियं ।२५।
माया-वुइयमेयं तु, मुसा-भासा निरत्थिया ।
संजममाणोऽवि अहं, वसामि इरियामि य ।२६।
सव्वेए विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ।२७।
अहमासि महापाणे, जुइम वरिस-सओवमे ।
जा सा पालि-महापाली, दिव्वा वरिस-सओवमे ।२८।
से चुए बम्भलोगाओ, माणुस भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च, आउ जाणे जहा तहा ।२९।
नाणारुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज सजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जा मणुसचरे ।३०।
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमतेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोराय, इइ विज्जा तवचरे ।३१।
जं च मे पुच्छसी काले, सम्म सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, त नाण जिण-सासणे ।३२।
किरिय च रोयई धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठीसम्पन्ने, धम्म चरसु दुच्चरं ।३३।
एयं पुण्णपय सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं ।

'भरहोऽवि' भारहं वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ।३४।
'सगरोऽवि' सागरंतं, भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ।३५।
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
पव्वज्ज-मब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ।३६।
'सणकुमारो' मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सोऽवि राया तवं चरे ।३७।
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
'संती' संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ।३८।
इक्खाग-राय-वसभो, 'कुंथू' नाम नरीसरो ।
विक्खाय-कित्ती भगवं, पत्तो गइ-मणुत्तरं ।३९।
सागरंतं चइत्ताणं, भरहं नरवरीसरो ।
अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइ-मणुत्तरं ।४०।
चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बल-वाहणं ।
चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ।४१।
एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूदणो ।
'हरिसेणो' मणुस्सिंदो, पत्तो गइ-मणुत्तरं ।४२।
अन्निओ रायसहस्सेहिं, सु-परिच्चाई दमं चरे ।
'जयनामो' जिणक्खायं, पत्तो गइ-मणुत्तरं ।४३।
'दसण्णरज्जं' मुदियं, चइत्ताणं मुणी चरे ।
'दसण्णभद्दो' निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ।४४।
'नमी' नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ।४५।

'करकण्डू' कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो ।
'नमी राया' विदेहेसु, 'गंधारेसु' य नग्गई ।४६।
एए नरिंद-वसभा, निक्खता जिण-सासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ।४७।
सोवीर-राय-वसभो, चइत्ताण मुणी चरे ।
'उदायणो' पव्वइओ, पतो गइ-मणुत्तरं ।४८।
तहेव 'कासीराया', सेओ-सच्च-परक्कमे ।
काम-भोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्म-महावण ।४६।
तहेव 'विजओ' राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए ।
रज्जं तु गुणसमिद्ध, पयहित्तु महाजसो ।५०।
तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ।५१।
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे ।
एए विसेस-मादाय, सूरा दढपरक्कमा ।५२।
अच्चंत-नियाण-खमा, सच्चा मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ।५३।
कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे ।
सव्व-संग-विनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ।५४।

।। सजइज्ज अठारहम अज्झयणं समत्तं ।।१८।।

।। मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं अज्झयणं ।।१६।।

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दित्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ।१।

तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्तेत्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ।२।
नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं ।
देवे दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइय-माणसो ।३।
मणि-रयण-कोट्टिमतले, पासाया-लोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्कत्तियचच्चरे ।४।
अह तत्थअइच्छंतं, पासई समणसंजयं ।
तव-नियम-सजमधरं, सीलड्ढ गुणआगर ।५।
तं देहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिस रूव, दिट्ठपुव्व मए पुरा ।६।
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोह गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्न ।७।
देवलोग चुओसंतो, माणुस भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पन्ने, जाई सरणं पुराणय ।८।
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइ, सामण्ण च पुरा कयं ।९।
विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो सजमम्मि य ।
अम्मा-पियर-मुवागम्म, इम वायणमब्बवी ।१०।
सुयाणि मे पंचमहव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामोमि महण्णवाओ,अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ११
अम्म ताय मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुय-विवागा, अणुबंधदुहावहा ।१२।
इमं सरीरं अणिच्चं, असुई असुइसंभव ।

असासया-वासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ।१३।
असासए सरीरम्मि, रइ नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ।१४।
माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण आलए ।
जरा-मरण-घत्थम्मि, खणपि न रमामहं ।१५।
जम्मं दुक्ख जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतवो ।१६।
खेत्तं वत्थं हिरण्ण च, पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्व-मवसस्स मे ।१७।
जहा किम्पाग-फलाण, परिणामो न सुदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो १८।
अद्धाण जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जई ।
गच्छतो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ।१९।
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ।२०।
अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जई ।
गच्छंतो सो सुही होइ, छुहा-तण्हा-विवज्जिओ ।२१।
एवं धम्मऽपि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ।२२।
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ।२३।
एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ।२४ ।

त बितम्मापियरो, सामण्णं पुत्त दुच्चर ।
गुणाणं तु सहस्साइ, धारेयव्वाइं भिक्खुणो ।२५।
समया सव्वभूएसु, सत्तु-मित्तेसु वा जगे ।
पाणाइ-वाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ।२६।
निच्चकालप्पमत्तेणं, मुसावाय-विवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्कर ।२७।
दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ।२८।
विरई अबम्भचेरस्स, काम-भोग-रसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बम्भ, धारेयव्वं सुदुक्करं ।२९।
धण-धन्न-पेस वग्गेसु, परिग्गह-विवज्जण ।
सव्वारम्भ-परिच्चाओ, निम्ममत्त सुदुक्कर ।३०।
चउव्विहेऽवि आहारे, राईभोयण-वज्जणा ।
सन्निही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्कर ।३१।
छुहा तण्हा य सीउण्ह, दंस-मसग-वेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेजा य, तण-फासा जल्लमेव य ।३२।
तालणा तज्जणा चेव, वहबंध-परीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ।३३।
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
दुक्ख बंभव्वयं घोर, धारेउ य महप्पणो ।३४।
सुहोइओ तुम पुत्ता, सकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुम पुत्ता, सामण्ण-मणुपालिया ।३५।
जावज्जीव-मविस्सामो, गुणाण तु महब्भरो ।

असासया-वासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ।१३।
असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ।१४।
माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण आलए ।
जरा-मरण-घत्थम्मि, खणपि न रमामहं ।१५।
जम्मं दुक्ख जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतवो ।१६।
खेत्तं वत्थ हिरण्ण च, पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्व-मवसस्स मे ।१७।
जहा किम्पाग-फलाण, परिणामो न सुंदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो १८।
अद्धाण जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जई ।
गच्छंतो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ।१९।
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ।२०।
अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जई ।
गच्छंतो सो सुही होइ, छुहा-तण्हा-विवज्जिओ ।२१।
एवं धम्मऽपि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ।२२।
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ।२३।
एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ।२४।

गुरूओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ।३६।
आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो ।
वाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ।३७।
वालुयाकवलो चेव, निरस्साए उ संजमे ।
असिधारा-गमण चेव, दुक्कर चरिउं तवो ।३८।
अही वेगंत-दिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्करे ।
जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्कर ।३९।
जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होई सुदुक्करो ।
तहा दुक्करं करेउ जे, तारूण्णे समत्तण ।४०।
जहा दुक्खं भरेउ जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउ जे, कीवेणं समणत्तणं ।४१।
जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी ।
तहा निहुयं नीसंकं, दुक्करं समणत्तण ।४२।
जहा भूयाहिं तरिउ, दुक्करं रयणायरो ।
तहा अणुवसंतेणं, दुक्कर दमसागरो ।४३।
भुज माणुस्सए भोगे, पचलक्खणए तुम ।
भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्म चरिस्ससि ।४४।
सो बितऽम्मापियरो, एवमेयं जहाफुड ।
इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ।४५।
सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अनतसो ।
मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खभायणि य ।४६।
जरामरण-कातारे, चउरंते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ।४७।

जहा इह अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ।४८।
जहा इमं इह सीयं, एत्तोऽणतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ।४९।
कंदतो कदुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलतम्मि, पक्कपुव्वो अणतसो ।५०।
महादवग्गिसकासे, मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्ववालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणतसो ।५१।
रसंतो कंदुकुम्भीसु,उड्ढं बद्धो अवधवो ।
करवत्त-करकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणतसो ।५२।
अइ-तिक्ख-कंटगा-इण्णे, तुगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ।५३।
महाजतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं ।
पीडिओऽमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ।५४।
कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरतो अणेगसो ।५५।
असीहि अयसिवण्णेहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, उववण्णो पाव-कम्मुणा ।५६।
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ।५७।
हुयासणे जलंतम्मि, चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो, पाव कम्मेहिं पाविओ ।५८।
बला-संडास-तुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं ।

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ।४८।
जहा इमं इह सीय, एत्तोऽणतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ।४९।
कंदंतो कदुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलतम्मि, पक्कपुव्वो अणतसो ।५०।
महादवग्गिसकासे, मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणतसो ।५१।
रसतो कंदुकुम्भीसु,उड्ढं बद्धो अवधवो ।
करवत्त-करकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणतसो ।५२।
अइ-तिक्ख-कंटगा-इण्णे, तुगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ।५३।
महाजतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं ।
पीडिओऽमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ।५४।
कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरतो अणेगसो ।५५।
असीहि अयसिवण्णेहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, उववण्णो पाव-कम्मुणा ।५६।
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ।५७।
हुयासणे जलंतम्मि, चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो, पाव कम्मेहिं पाविओ ।५८।
वला-संडास-तुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं ।

विलुत्तो विलवंतो हं, ढकगिद्धेहिऽणंतसो ।५९।
तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरिणि नइं ।
जलं पाहिंति चिंतंतो, खुरधाराहिं विवाइओ ।६०।
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ।६१।
मुग्गरेहिं मुसुढीहिं, सूलेहि मुसलेहि य ।
गया संभग्गगत्तेहिं, पत्त दुक्ख अणंतसो ।६२।
खुरेहिं तिक्खधारेहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ।६३।
पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ बद्धरुद्धो वा, बहुसो चेव विवाइओ ।६४।
गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ।६५।
वीदसएहिं जालेहिं, लेप्पाहि सउणो विव ।
गाहिओ लग्गो बद्धो य मारिओ य अणंतसो ।६६।
कुहाड-फरसु-माईहिं, वड्डईहि दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ।६७।
चवेड-मुट्ठि-माईहिं, कुमारेहिं अय पिव ।
कुट्टिओ फाणिओ छिन्नो, चुण्णिओ य अणंतसो ।६८।
तत्ताइं तम्ब-लोहाइं तउयाइ सीसगाणि य ।
पाइओ कलकलंताइं आरसंतो सुभेरवं ।६९।
तुहं पियाइं मंसाइं, खण्डाइं, सोल्लगाणि य ।
खाइओमि समसाइं, अग्गिवण्णाइऽणेगसो ।७०।

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य ।
पाइओमि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ।७१।
निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण, वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेदिता मए ।७२।
तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेदित्ता मए ।७३।
जारिसा माणुसे लोए, ताया दीसति वेयणा ।
एत्तो अणतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ।७४।
सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेदिता मए ।
निमेसंतरमित्तंऽपि, जं साता नत्थि वेयणा ।७५।
त बितम्मापियरो, छदेण पुत्त पव्वया ।
नवर पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ।७६।
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
पडिकम्म को कुणई, अरण्णे मियपक्खिण ।७७।
एगब्भूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ।७८।
जहा मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई ।
अच्चंतं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छिई ।७९।
को वा से ओसह देइ को वा से पुच्छई सुहं ।
को से भत्त च पाण वा, आहरित्तु पणामए ।८०।
जया से सुही होई, तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ।८१।
खाइत्ता पाणिय पाउ, वल्लरेहिं सरेहि य।

मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं ।८२।
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढ पक्कमई दिसं ।८३।
जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एव मुणीगोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नोवि य खिसएज्जा ।८४।
मिगचारियं चरिस्सामि, एव पुत्ता जहासुह ।
अम्मापिऊहिऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तहा ।८५।
मिगचारियं चरिस्सामि, सव्व दुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त ! जहा सुहं ।८६।
एव सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण वहुविहं ।
ममत्तं छिंदई ताहे, महानागो व्व कचुयं ।८७।
इड्ढी वित्त च मित्ते य, पुत्तदार च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं, निद्धुणित्ताण निग्गओ ।८८।
पंचमहव्वयजुत्तो, पचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिंतरवाहिरओ, तवोकम्मंसि उज्जुओ ।८९।
निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ।९०।
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
समोनिंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ।९१।
गारवेसु कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हास-सोगाओ, अनियाणो अवधणो ।९२।
अणिस्सिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ।९३।

अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्पज्झाण-जोगेहिं, पसत्थ-दमसासणे ।९४।
एवं नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य ।
भावणाहि य सुद्धाहि, सम्म भावेत्तु अप्पयं ।९५।
बहुयाणि उ वासाणि, सामण्ण-मणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धि पत्तो अणुत्तर ।९६।
एवं करंति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ।९७।
महापभावस्स महाजसस्स, मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाण चरियं च उत्तमं, गइप्पहाण च तिलोगविस्सुय ।९८।
वियाणिया दुक्खविवद्धण धणं, ममत्तबंधं च महाभयावह ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेज्जनिव्वाण-गुणावह मह ।९९।

।। मयापुत्तीय एगुणवीसइमं अज्झयण समत्तं ।।१९।।

।। महानियंठिज्जं वीसइमं अज्झयणं ।।२०।।

सिद्धाणं नमो किच्चा, सजयाणं च भावओ ।
अत्यधम्मगइं तच्चं, अणुसट्ठि सुणेह मे ।१।
पभूयरयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ, 'मण्डिकुच्छिंसि' चेइए ।२।
नाणादुमलयाइण्ण, नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं, उज्जाणं नदणोवम ।३।
तत्थ सो पासई साहु, संजयं सुसमाहियं ।

निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ।४।
तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए ।
अच्चंतपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ।५।
अहो ! वण्णो अहो ! रूव, अहो ! अज्जस्स सोमया ।
अहो ! खंती अहो ! मुत्ती, अहो ! भोगे असंगया ।६।
तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने, पजली पडिपुच्छई ।७।
तरुणोसि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।
उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एयमट्ठ सुणेमि ता ।८।
अणाहोमि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पग सुहिं वावि, कचि नाभिसमेमहं ।९।
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एव ते इड्ढिमतस्स, कहं नाहो न विज्जई ।१०।
होमि नाहो भयताणं, भोगे भुजाहि संजया ।
मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्स खु सुदुल्लहं ।११।
अप्पणाऽवि अणाहोऽसि, सेणिया मगहाहिवा !
अप्पणा अणाहो संतो, कस्स नाहो भविस्ससि ।१२।
एव वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभतो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ।१३।
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे ।
भुजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ।१४।
एरिसे सम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुसं वए ।१५।

न तुम जाणे अणाहस्स, अत्थ पोत्थं च पत्थिवा ।
जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ! ।१६।
सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवित्तयं ।१७।
कोसम्बी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसचओ ।१८।
पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगेसु य पत्थिवा ।१९।
सत्थ जहा परमतिक्ख, सरीरविवरतरे ।
आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एव मे अच्छिवेयणा ।२०।
तिय मे अतरिच्छ च, उत्तमंगं च पीडई ।
इदासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ।२१।
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामततिगिच्छगा ।
अबीया सत्थकुसला, मतमूलविसारया ।२२।
ते मे तिगिच्छं कुव्वति, चाउप्पायं जहाहिय ।
न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ।२३।
पिया मे सव्वसारपि, दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ।२४।
मायाऽवि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिया ।
न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ।२५।
भायरो मे महाराय ! सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ।२६।
भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।

न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ।२७।
भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उर मे परिसिंचई ।
अन्नं पाणं च ण्हाण च, गंध-मल्ल-विलेवण ।
मए नायमनायं वा, सा बाला नेव भुंजई ।२९।
खणंऽपि मे महाराय ! पासाओ मे न फिट्टई ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।३०।
तओ ह एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
वेयणा अणुभविउं जे, ससारम्मि अणंतए ।३१।
सयं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ ।
खंतो दंतो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ।३२।
एव च चिंतइत्ताण, पसुत्तोमि नराहिवा ! ।
परीयत्तंतीए राईए, वेयणा मे खय गया ।३३।
तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण वंधवे ।
खंतो दंतो निरारम्भो, पव्वइओ अणगारियं ।३४।
तो ऽहं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाणं थावराण य ।३५।
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ।३६।
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ।३७।
इमा हु अन्नाऽवि अणाहया निवा, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियण्ठधम्मं लहियाण वि जहा, सीयंति एगे बहुकायरा नरा ।३८।

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्म च नो फासयई पमाया ।
अणिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ बंधणं से ।३९।
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाण-निक्खेव-दुगुछणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ।४०।
चिरऽपि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तव-नियमेहिं भट्ठे ।
चिरऽपि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु सपराए ४।१।
पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयतिए कूड-कहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ।४२।
कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय बूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे, विणिग्घाय-मागच्छइ से चिरंपि ।४३।
विस तु पियं जह कालकूड, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
एसोऽवि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ।४४।
जे लक्खणं सुविणं पउंजमाणे, निमित्तकोऊहल संपगाढे ।
कुहेड-विज्जा-सवदारजीवी, न गच्छई सरण तम्मि काले ।४५।
तम तमेणेव उ से असीले, सया दुही विपरियामुवेइ ।
सधावई नरग-तिरिक्खजोणिं, मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ।४६।
उद्देसियं कीयगड नियागं, न मुचई किंच अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ।।
न तं अरी कण्ठ छेत्ता करेइ, ज से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
से नाहई मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दया-विहूणो ।४८।
निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठ विवज्जासमेइ ।
इमेऽवि से नत्थि परेऽवि लोए, दुहओऽवि से झिज्जइ तत्थ लोए ।।
एमेवऽहाछदकुसीलरूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं ।

कुररी विवा भोग-रसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परियावमेइ ।५०।
सोच्चाण मेहावि सुभासियं इम, अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानियंठाण वए पहेणं ।५१।
चरित्त-मायार-गुणन्निए तओ, अणुत्तरं सजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाण विउलुत्तमं धुवं ।५२।
एवुग्गदतेऽवि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिण महासुय, से काहए महयावित्थरेणं ।५३।
तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयजलो ।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदसियं ।५४।
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, ज भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ।५५।
त सि नाहो अणाहाण, सव्वभूयाण सजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ।५६।
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो य जो कओ ।
निमंतिया य भोगेहि, त सव्वं मरिसेहि मे ।५७।
एवं थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तीए ।
सओरोहो सपरियणो सबधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ।।
ऊस-सिय-रोम-कूवो, काऊण य पयाहिण ।
अभिवदिऊण सिरसा अइयाओ नराहिवो ।५८।
इयरोऽवि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ।६०।

।। महानियठिज्ज वीसइम अज्झयण समत्तं ।।२०।।

।। समुद्दपालियं एगवीसइमं अज्झयणं ।।२१।।

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ।१।
निग्गंथे पावयणे, सावए सेऽवि कोविए ।
पोएण ववहरंते, पिहुंड नगरमागए ।२।
पिहुण्डे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
त ससत्त पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ।३।
अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई ।
अह बालए तहिं जाए, समुद्दपालित्ति नामए ।४।
खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं ।
सवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ।५।
बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ।६।
तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं ।
पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुदगो जहा ।७।
अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं, वज्झ पासइ वज्झग ।८।
तं पासिऊण सवेग, समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुभाण कम्माण, निज्जाणं पावग इमं ।९।
संबुद्धो सो तहिं भगवं, परम-सवेग-मागओ ।
आपुच्छम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ।१०।
जहित्तु सग्गथ-महाकिलेस, महतमोहं कसिणं भयावहं ।

परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ।११।
अहिंससच्चं च अतेणग च, तत्तो य बंभं अपरिग्गह च ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि, चरिज्ज धम्म जिणदेसियं विदू ।।
सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी, खंतिक्खमे सजयबम्भयारी ।
सावज्जजोग परिवज्जयंतो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइदिए ।१३।
कालेण काल विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ।।
उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पिय सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए ।।
अणेगच्छंदामिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू ।
भय-भेरवा तत्थ उइंति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ।।
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयंति जत्था बहु-कायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, सगामसीसे इव नागराया ।१७।
सीओसिणा दस-मसा य फासा, आयंका विविहा फुसंति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइ खेवेज्ज पुरे कयाइं ।१८।
पहाय राग च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सततं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ।१९।
अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभाव पडिवज्ज सजए, निव्वाण-मग्गं विरए उवेइ ।२०।
अरइ-रइ-सहे पहीण-सथवे, विरए आय-हिए पहाणवं ।
परमट्ठ-पएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ।२१।
विवित्त-लयणाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइं असंथडाइं ।
इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइं ।२२।

सन्नाण-नाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरे नाणधरे जस्संसी, ओभासई सूरिए वंतलिक्खे ।२३।
दुविहं खवेऊण य पुण्ण-पावं, निरंजणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं च महाभवोघं 'समुद्दपाले' अपुणागमं गए ।२४।

।। समुद्दपालीय एगवीसइमं अज्झयण समत्तं ।।२१।।

।। रहनेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं ।।२२।।

'सोरियपुरम्मि' नयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवृत्ति नामेणं, राय-लक्खण-सजुए ।१।
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा ।
तासि दोण्ह दुवे पुत्ता, इट्ठा राम-केसवा ।२।
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
'समुद्दविजए' नाम, राय-लक्खण-संजुए ।३।
तस्स भज्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
भगव 'अरिट्ठनेमित्ति', लोगनाहे दमीसरे ।४।
सोऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-सजुओ ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गयमा कालगच्छवी ।५।
वज्जरिसहसघयणो, समचउरंसो झोसोयरो ।
तस्सरायमईकन्न, भज्ज जायइ केसवो ।६।
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसपन्ना, विज्जु-सोयामणि-प्पभा ।७।
अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं ।

इहागच्छउकुमारो, जा से कन्नं ददामि हं ।८।
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोउय-मंगलो ।
दिव्वजुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ।९।
मत्तं च गंधहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा ।१०।
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ।११।
चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण, दिव्वेणं गगणं फुसे ।१२।
एयारिसाए इड्ढिए, जुत्तीए उत्तमाइ य ।
नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ।१३।
अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ।१४।
जीवियंत तु सम्पत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ।१५।
कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ।१६।
अह सारही तओ भणई, एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झ विवाह-कज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं ।१७।
सोऊण तस्सवयणं, बहु-पाणि-विणासणं ।
चिंतेइ से महापन्ने, साणुक्कोसे जिए हिऊ ।१८।
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया ।
न मे एय तु निस्सेस, परलोगे भविस्सई ।१९।

सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ।२०।
मणपरिणामो य कओ, देवा य जहोइय समोइण्णा ।
सव्वड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ।२१।
देव-मणुस्स-परिवुडो, सीवियारयणं तओ समारुढो ।
निक्खमिय बारगाओ, 'रेवययंम्मि' ट्ठिओ भगव ।२२।
उज्जाण संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाओ सीयाओ ।
साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ।२३।
अह सो सुगंध-गधीए, तुरियं मउकुंचिए ।
सयमेव लुचई केसे, पचमुट्ठीहिं समाहिओ ।२४।
वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेस जिइंदियं ।
इच्छिय-मणोरह तुरियं, पावसु तं दमीसरा ।२५।
नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य ।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ।२६।
एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठनेमिं वदित्ता, अभिगया बारगापुरिं ।२७।
सोऊण रायकन्ना, पव्वज्ज सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणदा, सोगेण उ समुत्थिया ।२८।
राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीविय ।
जा हं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ।२९।
अह सा भमर-सन्निभे, कुच्च-फणग-पासिए ।
सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिया ।३०।
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेस जिइदियं ।

संसार सागर घोरं, तर कन्ने लहुं लहुं ।३१।
सा पव्वइया सति, पव्वावेसी तहिं वहुं ।
सयण परियणं चेव, सीलवता वहुस्सुया ।३२।
गिरिं रेवतय जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा ।
वासंते अंधयारम्मि, अंतो लयणस्स ठिया ।३३।
चीवराइ विसारंति, जहा जायत्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइऽवि ।३४।
भीया य सा तहिं दट्ठु, एगते संजयं तयं ।
वाहाहिं काउ संगोप्फ, वेवमाणी निसीयई ।३५।
अह सोऽवि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ ।
भीय पवेवियं दट्ठु, इमं वक्क उदाहरे ।३६।
रहनेमी अहंभद्दे ! सुरूवे चारुभासिणी ।
मम भयाहि सुयणु न ते पीला भविस्सई ।३७।
एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
भुत्त-भोगी तओ पच्छा, जिणमग्ग चरिस्सिमो ।३८।
दट्ठूण रहनेमि त, भग्गुज्जायपराजिय ।
राईमई असम्भन्ता, अप्पाणं सवरे तहि ।३९।
अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाईं कुलं च सील च, रक्खमाणी तय वए ।४०।
जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकुब्बरो ।
तहाऽवि ते न इच्छामि, जइसि सक्खं पुरंदरो ।४१।
पक्खंदे जलिय जोइ, धूमकेउं दुरासय ।
नेच्छंति वन्तय भोत्तु, कुले जाया अगंधणे ।४२।

धिरत्थु तेऽजसोकामी ! जो तं जीविय कारणा।
वतं इच्छसि आवेउ, सेयं ते मरणं भवे ।४३।
अह च भोगरायस्स, त चऽसि अधगवण्हिणो।
मा कुले गधणा होमो, संजम निहुओ चर ।४४।
जइ तं काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ।
वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।४५।
गोवालो भण्डवालो वा, जहा तद्दव्वणिसरो।
एव अणिस्सरो तऽपि, सामण्णस्स भविस्ससि ।४६।
तीसे सो वयणं सोच्चा, सजयाइ सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ।४७।
कोह माणं निगिण्हित्ता, माय लोभ च सव्वसो।
इदियाइ वसे काउ, अप्पाण उवसंहरे ।४८।
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिओ।
सामण्णं निच्चल फासे, जावज्जीव दढव्वओ ।४९।
उग्ग तव चरित्ताण, जाया दोण्णिऽवि केवली।
सव कम्म खवित्ताण, सिद्धि पत्ता अणुत्तर ।५०।
एव करेति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ।५१।

॥ रहनेमिज्ज बावीसइम अज्झयण समत्तं ॥२२॥

॥ केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयणं ॥२३॥

जिणे पासित्ति नामेणं, अरहा लोगपूइओ।
सबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ।१।

एगकज्जपवन्नाण, विसेसे किं नु कारण ।१३।
अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्किय ।
समागमे कयमई, उभओ केसि-गोयमा ।१४।
गोयमे पडिरूवन्नू, सीससघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खंतो, तिंदुयं वणमागओ ।१५।
केसी-कुमारसमणे, गोयम दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं सपडिवज्जई ।१६।
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्प सपणामए ।१७।
केसीकुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहंति, चंद-सूर-समप्पभा ।१८।
समागया बहू तत्थ, पासंडा कोउगा मिया ।
गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ।१९।
देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाण, आसी तत्थ समागमो ।२०।
पुच्छामि ते महाभाग, केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ।२१।
पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी ।२२।
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ।२३।
एग-कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किण्णु कारणं ।
धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ।२४।

तओ केसिं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्ववी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छियं ।२५।
पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ।२६।
पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ ।२७।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि ससओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ।२८।
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सतरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ।२९।
एग-कज्ज-पवन्नाण, विसेसे किं नु कारणं ।
लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पचओ न ते ।३०।
केसिमेव वुवाणं तु, गोयमो इणमब्ववी ।
विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ।३१।
पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पण ।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ।३२।
अह भवे पइन्ना उ, मोक्ख-सब्भूय-साहणा ।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्त चेव निच्छए ।३३।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ।३४।
अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !
ते य ते अहिगच्छंति, कहं ते निज्जिया तुमे ।३५।
एगे जिए जिया पच, पंचजिए जिया दस ।

दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं ।३६।
सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।३७।
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य ।
ते जिणित्तु जहानायं, विरहामि अहं मुणी ।३८।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ।३९।
दीसंति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसी मुणी ! ।४०।
ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ।४१।
पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।४२।
राग-द्दोसा-दओ तिव्वा, नेहपासा भयङ्करा ।
ते छिंदित्तु जहानायं, विहरामि जहक्कमं ।४३।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ।४४।
अंतोहियय संभूया, लया चिट्ठइ गोयमा !
फलेइ विस-भक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ।४५।
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानायं, मुक्कोमि विसभक्खणं ।४६।
लया य इइ का वुत्ता, केसि गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।४७।

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया।
तमुच्छित्तु जहानायं, विहरामि महामुणी ! ।४८।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो।
अन्नोऽवि ससओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ।४९।
सपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा !
जे डहंति सरीरत्थे, कह विज्झाविया तुमे ।५०।
महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तम।
सिंचामि सयय देह, सित्ता नो व डहंति मे ।५१।
अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं वुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।५२।
कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जल।
सुयधाराभिहया सता, भिन्ना हु न डहंति मे ।५३।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो।
अन्नोऽवि ससओ मज्झ, तं मे कहसु गोयमा ! ।५४।
अय साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई।
जंसि गोयमआरूढो, कह तेण न हीरसि ।५५।
पधावंतं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं।
न मे गच्छइ उम्मग्ग, मग्गं च पडिवज्जई ।५६।
आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।५७।
मणो साहसीओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई।
तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथग ।५८।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।

अन्नो-वि संसओ मज्झ, तं मे कहसु गोयमा ! ।५९।
कुप्पहा बहवे लोए, जेहिं नासंति जंतुणो ।
अद्धाणे कहं वट्टंतो, तं न नाससि गोयमा ! ।६०।
जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मग्गपट्ठिया ।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ।६१।
मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।६२।
कुप्पवयणपासण्डी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ।६३।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो-वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ।६४।
महाउदगवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसी मुणी ! ।६५।
अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्जई ।६६।
दीवे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।६७।
जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ।६८।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ।६९।
अण्णवंसि महोहंसि, नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारूढो, कहं पारं गमिस्ससि ।७०।

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ।७१।
नावा य इइ का वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ।७२।
सरीरमाहु नावत्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरति महेसिणो ।७३।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नोऽवि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ।७४।
अंधयारे तमे घोरे चिट्ठति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ।७५।
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयप्पभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिण ।७६।
भानु य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्बवी ७७।
उग्गओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ।७८।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे समओ इमो ।
अन्नोऽवि ससओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ।७९।
सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं ।
खेम सिव अणाबाहं, ठाण किं मन्नसी मुणी ! ।८०।
अत्थि एग धुवं ठाण, लोगग्गम्मि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरामच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ।८१।
ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ।८२।
निव्वाण-ति अबाह-ति, सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेम सिवं अणाबाह, जं चरति महेसिणो ।८३।
तं ठाण सासयं वास, लोयग्गम्मि दुरारुहं ।
जं सपत्ता न सोयति, भवोहंतकरा मुणी ।८४।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते ससयातीत, सव्वसुत्तमहोयही ।८५।
एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं ।८६।
पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ।८७।
केसी-गोयमओ निच्चं, तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्कसो, महत्थत्थविणिच्छओ ।८८।
तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया ।
संथुया ते पसीयतु, भयवं केसिगोयमे ।८९।

।। केसिगोयमिज्जं तेवीसइम अज्झयण समत्त ।।२३।।

।। समिइओ चउवीसइमं अज्झयणं ।।२४।।

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया ।१।
इरिया-भासे-सणा-दाणे, उच्चारे समिई इय ।
मण-गुत्ती वय-गुत्ती, काय-गुत्ती य अट्ठमा ।२।

एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ।३।
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्ध, सजए इरियं रिए ।४।
तत्थ आलम्बण नाणं, दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ।५।
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ।६।
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ।७।
इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ।८।
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया ।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ।
एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु सजए ।
असावज्ज मियं काले, भास भासिज्ज पन्नव ।
गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ।११।
उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभायम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ।१२।
ओहोवहोवग्गहियं, भण्डग दुविह मुणी ।
गिण्हतो निक्खिवतो वा, पउंजेज्ज इमं विहिं ।१३।
चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई ।

आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहवो-वि समिए सया ।१४।
उच्चार पासवण, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहार उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ।१५।
अणावायमसलोए, अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसलोए, आवाए चेव संलोए ।१६।
अणावायमसंलोए, परस्सणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ।१७।
विच्छिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए ।
तस-पाण-बीय-रहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ।१८।
एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ।१९।
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्तिओ चउव्विहा ।२०।
सरम्भ-समारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ।२१।
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ।२२।
सरम्भ-समारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
वय पवत्तमाणं तु. नियत्तेज्ज जय जई ।२३।
ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघण-पल्लंघणे, इंदियाण य जुजणे ।२४।
संरम्भ-ममारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य ।
काय पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ।२५।

एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे ुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ।२६।
एसा पवयणमाया, जे सम्म आयरे मुणी ।
सो खिप्प सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिए ।२७।

।।समिईओ चउवीसइमं अज्झयण समत्तं ।।२४।।

।। जन्नइज्जं पंचवीसइमं अज्झयणं ।।२५।।

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जम-जन्नम्मि, 'जयघोसित्ति' नामओ ।१।
इदियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयते, पत्तो वाणरसिं पुरिं ।२।
वाणारसीए वहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ।३।
अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसित्ति नामेणं, जन्नं जयइ वेयवी ।४।
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ।५।
समुवट्ठियं तहिं संतं, जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू जायाहि अन्नओ ।६।
जे य वेयविऊ विप्पा, जनट्ठा य जे दिया ।
जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ।७।
जे समत्था समुद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू ! सव्वकामियं ।८।

सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
नवि रुट्ठो नवि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ ।९।
नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमब्बवी ।१०।
नवि जाणासि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ।११।
जे समत्था समुद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ।१२।
तस्सऽक्खेवपमोक्खं तु, अचयंतो तहिं दिओ ।
सपरिसोपजली होउ, पुच्छई तं महामुणिं ।१३।
वेयाण च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ।१४।
जे समत्था समुद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू कहसु पुच्छिओ ।१५।
अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसा मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चंदो, धम्माण कासवो मुहं ।१६।
जहा चंदं गहाईया, चिट्ठंती पंजलीउडा ।
वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ।१७।
अजाणगा जन्नवाई, विज्जा-माहण-संपया ।
मूढा सज्झाय-तवसा, भासच्छन्ना इवऽग्गिणो ।१८।
जो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गीव महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ।१९।
जो ण सज्जइ आगंतु, पव्वयंतो न सोयइ ।

रमइ अज्जवयणम्मि, तं वय बूम माहणं ।२०।
जायरूव जहामट्ठं, निद्धतमलपावगं ।
राग-द्दोस-भयाईयं, तं वय बूम माहण ।२१।
तवस्सिय किस दंत, अवचिय-मस-सोणियं ।
सुव्वय पत्तनिव्वाणं, त वय बूम माहण ।२२।
तसपाणे वियाणेत्ता, सगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेण, तं वय बूम माहणं ।२३।
कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
मुस न वयई जो उ, तं वयं बूम माहण ।२४।
चित्तमतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहु ।
न गिण्हइ अदत्त जे, त वयं बूम माहणं ।२५।
दिव्वमाणुसतेरिच्छ, जो न सेवइ मेहुण ।
मणसा कायवक्केण, त वयं बूम माहणं ।२६।
जहा पोमं जले जाय, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एव अलित्तं कामेहिं, त वय बूम माहण ।२७।
आलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्त गिहत्थेसु, त वय बूम माहण ।२८।
जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसगे य बधवे ।
जो न सज्जइ भोगेसु, त वयं बूम माहणं ।२९।
पसुबंधा सव्ववेया, जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न त तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवति हि ।३०।
नवि मुडिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेणं, कुस-चीरेण न तावसो ।३१।

विरत्ता उ न लग्गति, जहा सुक्के उ गोलए ।४३।
एव से विजयघोसे, जयघोसस्स अंतिए ।
अणगारस्स निक्खतो, धम्म सोच्चा अणुत्तरं ।४४।
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य ।
जयघोसविजयघोसा, सिद्धि पत्ता अणुत्तरं ।४५।

।। जन्नइज्ज पचवीसइम अज्झयण समत्त ।।२५।।

।। सामायारी छव्वीसइमं अज्झयणं ।।२६।।

सामायारि पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गथा, तिण्णा संसारसागरं ।१।
पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थो पडिपुच्छणा ।२।
पंचमी छदणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छाकारो उ, तहक्कारो य अट्ठमो ।३।
अब्भुट्ठाण च नवमं, दसमी उवसम्पदा ।
एसा दसगा साहूणं, सामायारी पवेइया ।४।
गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहिय ।
आपुच्छण सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणा ।५।
छदणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निंदाए, तहक्कारो पडिस्सुए ।६।
अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसपदा ।
एवं दु-पच-सजुत्ता, सामायारी पवेइया ।७।

पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं ।८।
पुच्छिज्ज पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इह ।
इच्छं निओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्झाए ।९।
वेयावच्चे निउत्तेण, कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे ।१०।
दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ।११।
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीय झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ।१२।
आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ।१३।
अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दुरंगुलं ।
वड्ढए हायए वावि, मासेणं चउरंगुलं ।१४।
आसाढबहुले पक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुण-वइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ।१५।
जेट्ठामूले आसाढ-सावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बीयतइयम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ।१६।
रत्तिंऽपि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ।१७।
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ।१८।
जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए ।

सम्पत्ते विरमेज्जा, सज्झाय पओसकालम्मि ।१९।
तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउभागसावसेसम्मि ।
वेरत्तियंपि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ।२०।
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भण्डयं ।
गुरु वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ।२१।
पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ।२२।
मुहपोत्ति पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ।२३।
उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे ।
तो विइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ।२४।
अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधिममोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ।२५।
आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठो ।२६।
पसिढिल-पलम्बलोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा ।
कुणइ पमाणे पमायं, संकिय-गणणोवगं कुज्जा ।२७।
अणूणा-इरित्त-पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य ।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ।२८।
पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणई जणवय-कहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ।२९।
पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ तसाणं ।
पडिलेहणा-पमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ।३०।

पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ।३१।
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नतराए, कारणम्मि उवट्ठिए ।३२।
१ वेयण २ वेयावच्चे, ३ इरियट्ठाए य ४ सजमट्ठाए ।
५ तहपाणवत्तियाए, छट्ठ पुण ६ धम्मचिंताए ।३३।
निग्गथो धिइमतो, निग्गंथी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ।३४।
आयके उवसग्गे, तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउ, सरीर-वोच्छेयणट्ठाए ।३५।
अवसेसं भण्डगं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ।३६।
चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झायं च तओ कुज्जा, सव्व-भाव विभावण ।६७।
पोरिसीए चउव्भाए, वदित्ताण तओ गुरु ।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्ज तु पडिलेहए ।३८।
पासवणुच्चारभूमि च, पडिलेहिज्ज जय जई ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ।३९।
देवसियं च अइयारं, चिंतिज्जा अणुपुव्वसो ।
नाणे य दसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ।४०।
पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
देवसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं ।४१।
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वदित्ताण तओ गुरुं ।

काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खण ।४२।
पारिय-काउस्सग्गो, वदित्ताण तओ गुरु ।
थुइ-मगल च काऊण, कालं संपडिलेहए ।४३।
पढमं पोरिसि सज्झाय, बिइयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्ख तु, सज्झाय तु चउत्थिए ।४४।
पोरिसीए चउत्थीए, काल तु पडिलेहया ।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहेंतो असंजए ।४५।
पोरिसीय चउब्भाए, वदित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ।४६।
आगए कायवोस्सग्गे, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणे ।
काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खण ।४७।
राइयं च अईयारं, चितिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणमि दसणमि य, चरित्तमि तवमि य ।४८।
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
राइयं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ।४९।
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वदित्ताण तओ गुरु ।
काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं ।५०।
किं तवं पडिवज्जामि, एव तत्थ विचिंतए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता, करिज्जा जिणसंथवं ।५१।
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
तवं संपडिवज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण संथवं ।५२।
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता वहू जीवा, तिण्णा ससार-सागरं ।५३।

॥ सामायारी छव्वीसइमं अज्झयण समत्त ॥२६॥

॥ खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं ॥२७॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ।१।
वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई ।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई ।२।
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई ।
असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ से य भज्जई ।३।
एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विंधइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ।४।
एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ।५।
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छे पडिप्पहं ।
मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ।६।
छिन्नाले छिंदई सेल्लिं, दुद्दंतो भंजए जुगं ।
से वि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए ।७।
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि, भज्जंति धिइदुब्बला ।८।
इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ।९।
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए ।
थद्धे एगे अणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहि य ।१०।
सोऽवि अंतरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई ।

आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ।११।
न सा ममं वियाणाइ, नऽवि सा मज्झ दाहिई ।
निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ।१२।
पेसिया पलिउंचंति, ते परियंति समंतओ ।
रायवेट्ठिं च मन्नता, करेंति भिउडिं मुहे ।१३।
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया ।
जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसो दिसिं ।१४।
अह सारही विचिंतेइ, खलुङ्केहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयई ।१५।
जारिसा ममसीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे जहित्ताण, दढं पगिण्हई तवं ।१६।
मिउमद्दवसंपन्नो, गम्भीरो सुसमाहिओ ।
विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ।१७।

खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥२७॥

॥ मोक्खमग्गगइ अट्ठावीसइमं अज्झयणं ॥२८॥

मोक्ख-मग्ग-गइं तच्चं, सुणेह जिण-भासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाण-दंसण-लक्खणं ।१।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ।२।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ।३।
तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं आभिनिबोहियं ।

निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त-बीयरुइमेव ।
अभिगम-वित्थाररुई, किरिया-संखेव धम्मरुई ।१६।
भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्ण-पाव च ।
सह सम्मइयाऽसव-संवरो य, रोएइ उ निसग्गो ।१७।
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइसयमेव ।
एमेव नन्नह-त्ति य, स निसग्गरुइत्ति नायव्वो ।१८।
एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ-त्ति नायव्वो ।१९।
रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगय होइ ।
आणाए रोयतो, सो खलु आणारुई नामं ।२०।
जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ-त्ति नायव्वो ।२१।
एगेण अणेगाइं पयाइं, जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लबिंदू, सो बीयरुइ-त्ति नायव्वो ।२२।
सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
एक्कारस अंगाइ, पइण्णग दिट्ठिवाओ य ।२३।
दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहिं, वित्थाररुइ-त्ति नायव्वा ।२४।
दसण-नाण-चरित्ते, तव-विणए सच्च समिइ-गुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ।२५।
अणभिग्गहियकुदिट्ठी, सखेवरुइ-त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ।२६।
जो अत्थिकाय-धम्मं, सुय-धम्म खलु चरित्त-धम्म च ।

सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ-त्ति नायव्वो ।२७।
परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणं वावि ।
वावन्नकुदसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ।२८।
नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइ, जुगवं पुव्वं व सम्मत्त ।२९।
नादसणिस्स नाण, नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाण ।।
निस्संकिय-निक्कंखिय-निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ।३१।
सामाइयत्थ पढमं, छेदोवट्ठावण भवे बीयं ।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुम तह सपराय च ।३२।
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ।३३।
तवो य दुविहो वृत्तो, वाहिरब्भतरो तहा ।
वाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भतरो तवो ।३४।
नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ।३५।
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमति महेसिणो ।३६।

।। मोक्खमग्गइ समत्तं ।।२८।।

सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ-त्ति नायव्वो ।२७।
परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवण वावि ।
वावन्नकुदसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ।२८।
नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइ, जुगव पुव्व व सम्मत्तं ।२९।
नादसणिस्स नाण, नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाण ॥
निस्संकिय-निक्कंखिय-निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ।३१।
सामाइयत्थ पढमं, छेदोवट्ठावण भवे बीयं ।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुम तह सपरायं च ।३२।
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एय चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहिय ।३३।
तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भतरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भतरो तवो ।३४।
नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ।३५।
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमति महेसिणो ।३६।

॥ मोक्खमग्गइ समत्तं ॥२८॥

॥ सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं ॥२९॥

सुयं मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खाय। इह खलु सम्मत्त-परक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, ज सम्मं सद्दहित्ता पत्तिइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चति परिनिव्वायंति सव्व-दुक्खाणमतं करेति। तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तं जहा —

१ सवेगे २ निव्वेए ३ धम्मसद्धा ४ गुरु-साहम्मिय-सुस्सू-सणया ५ आलोयणया ६ निंदणया ७ गरहणया ८ सामाइए ९ चउव्वीसत्थवे १० वंदणे ११ पडिक्कमणे १२ काउस्सग्गे १३ पच्चक्खाणे १४ थव-थुइमगले १५ कालपडिलेहणया १६ पायच्छित्तकरणे १७ खमावणया १८ सज्झाए १९ वायणया २० पडिपुच्छणया २१ पडियट्टणया २२ अणुप्पेहा २३ धम्मकहा २४ सुयस्स आराहणया २५ एगग्गमणसंनिवेसणया २६ सजमे २७ तवे २८ वोदाणे २९ सुहसाए ३० अप्पडिबद्धया ३१ विवित्तसयणासणसेवणया ३२ विणियट्टणया ३३ संभोगपच्चक्खाणे ३४ उवहिपच्चक्खाणे ३५ आहरपच्चक्खाणे ३६ कसायपच्चक्खाणे ३७ जोगपच्चक्खाणे ३८ सरीरपच्चक्खाणे ३९ सहायपच्चक्खाणे ४० भत्तपच्चक्खाणे ४१ सब्भावपच्चक्खाणे ४२ पडिरूवणया ४३ वेयावच्चे ४४ सव्वगुणसंपण्णया ४५ वीयरागया ४६ खंती ४७ मुत्ती ४८ मद्दवे ४९ अज्जवे ५० भावसच्चे ५१ करणसच्चे ५२ जोगसच्चे

५३ मणगुत्तया ५४ वयगुत्तया ५५ कायगुत्तया ५६ मणसमाधारणया ५७ वयसमाधारणया ५८ कायसमाधारणया ५९ नाणसंपन्नया ६० दसणसपन्नया ६१ चरित्तसपन्नया ६२ सोइंदियनिग्गहे ६३ चक्खिदियनिग्गहे ६४ घाणिदियनिग्गहे ६५ जिब्भिदियनिग्गहे ६६ फासिंदियनिग्गहे ६७ कोहविजए ६८ माणविजए ६९ मायाविजए ७० लोहविजए ७१ पेज्जदोसमिच्छादसणविजए ७२ सेलेसी ७३ अकम्मया।

१ सवेगेण भंते! जीवे किं जणयइ? सवेगेण अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्मसद्धाए सवेगं हव्वमागच्छइ। अंणताणुबधि-कोह-माण-माया-लोभे खवेइ। नवं च कम्मं न बधइ। तप्पच्चइयं च मिच्छत्तविसोहिं काऊण दसणाराहए भवइ। दसणविसोहीए य ण विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झई विसोहीए य ण विसुद्धाए तच्च पुणो भवग्गहण नाइक्कमइ।

२ निव्वेदेण भते! जीवे किं जणयइ? निव्वेदेणं दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ। सव्व-विसएसु विरज्जइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चायं करेइ। आरम्भपरिच्चाय करेमाणे ससारमग्ग वोच्छिदइ सिद्धि-मग्ग पडिवन्ने य हवइ।

३ धम्मसद्धाए ण भते! जीवे किं जणयइ? धम्मसद्धाए ण सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। अगारधम्म च ण चयइ। अणगारिए ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण छेयण-भेयण संजोगाईण वोच्छेय करेइ, अव्वाबाह च सुह निव्वत्तेइ।

४ गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ? गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए ण विणयपडिवत्ति जणयइ। विणयपडिवन्ने य ण जीवे अणच्चासायणसीले नेरइय-तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ । वण्ण-संजलणभत्तिवहुमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निबंधई, सिद्धिसोग्गइ च विसोहेइ । पसत्थाइ च ण विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ । अन्ने य वहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ।

५ आलोयणाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ? आलोयणाए ण माया-नियाण-मिच्छादंसण-सल्लाण, मोक्खमग्गविग्घाणं, अणतससारबंधणाण उद्धरणं करेइ । उज्जुभाव च जणयइ । उज्जु भावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेय च न बंधइ । पुव्वबद्धं च ण निज्जरेइ ।

६ निंदणयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ । पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ । करणगुणसेढीपडिवन्ने य ण अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।

७ गरहणयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ? गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ । अपुरक्कारगए ण जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ । पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणतघाइ-पज्जवे खवेइं ।

८ सामाइएणं भते ! जीवे किं जणयइ ? सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ।

९ चउव्वीसत्थएण भते ! जीवे किं जणयइ ? चउव्वी-

सत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ।

१० वंदणएण भंते ! जीवे किं जणयइ ? वंदणएणं नीयागोय कम्मं खवेइ । उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ । सोहग्गं च णं अपडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ । दाहिणभावं च णं जणयइ ।

११ पडिक्कमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिक्कमणेणं वयछिद्दाणि पिहेइ । पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ।

१२ काउस्सग्गेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरुव्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहं सुहेण विहरइ ।

१३ पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? पच्चक्खाणेण आसवदाराइं निरुम्भइ । पच्चक्खाणेण इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरई ।

१४ थव-थुइमंगलेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? थव-थुइमंगलेण नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ । नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अंतकिरियं कप्पविमाणोववत्तियं आराहणं आराहेइ ।

१५ काल-पडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? काल-पडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

१६ पायच्छित्तकरणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पाय-

पायच्छित्तकरणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ। निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ।

१७ खमावणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

१८ सज्झाएणं भंते! जीवे किं जणयइ? सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

१६ वायणाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टए। सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

२० पडिपुच्छणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थ तदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ।

२१ परियट्टणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? परियट्टणयाए णं वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।

२२ अणुप्पेहाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिल-बंधणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ। बहुपए-

सग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ। आउयं च ण कम्म सिय वधइ, सिय नो बधइ। असायावेयणिज्जं च ण कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ। अणाइयं च ण अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत ससारकंतार खिप्पामेव वीइवयइ।

२३ धम्मकहाए ण भंते! जीवे किं जणयइ? धम्मकहाए ण निज्जरं जणयइ। धम्मकहाए ण पवयण पभावेइ। पवयण-पभावेण जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्म निबंधइ।

२४ सुयस्स आराहणयाए ण भते! जीवे किं जणयइ? सुयस्स आराहणयाए ण अन्नाण खवेइ न य संकिलिस्सइ।

२५ एगग्गमणसंनिवेसणयाए ण भते! जीवे किं जणयइ? एगग्गमणसनिवेसणयाए ण चित्तनिरोहं करेइ।

२६ सजमेण भंते! जीवे किं जणयइ? सजमेण अणण्हयत्तं जणयइ।

२७ तवेण भते! जीवे किं जणयइ? तवेण वोदाण जणयइ।

२८ वोदाणेण भते! जीवे किं जणयइ? वोदाणेण अकिरिय जणयइ। अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमतं करेइ।

२९ सुहसाएण भंते! जीवे किं जणयइ? सुहसाएणं अणुस्सुयत्त जणयइ। अणुस्सुयाए ण जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्ज कम्मं खवेइ।

३० अप्पडिबद्धयाए ण भते! जीवे किं जणयइ? अप्पडिबद्धयाए ण निस्सगत्तं जणयइ। निस्संगत्तेण जीवे एगे एगग्ग-

चित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ।

३१ विवित्त-सयणा-सणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? विवित्त-सयणा-सणयाए ण चरित्तगुत्तिं जणयइ। चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंट्ठिं निज्जरेइ।

३२ विणियट्टणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ। तओ पच्छा चाउरंतं संसारकतारं वीइवयइ।

३३ संभोग-पच्चक्खाणेण भंते! जीवे किं जणयइ? संभोग-पच्चक्खाणेण आलम्बणाइ खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवंति। सएण लाभेणं सतुस्सइ, परलाभं नो आसादेइ, परलाभं नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलाभं अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अण-भिलस्समाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।

३४ उवहि-पच्चक्खाणेण भंते! जीवे किं जणयइ? उवहि-पच्चक्खाणेण अपलिमथं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सई।

३५ आहार-पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? आहार-पच्चक्खाणेणं जीवियाससप्पओगं वोच्छिंदइ। जीविया-संसप्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ।

३६ कसाय-पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? कसाय-पच्चक्खाणेण वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडि-

वन्नेवि य ण जीवे समसुहदुक्खे भवइ।

३७ जोग-पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोग-पच्चक्खाणेण अजोगत्त जणयइ। अजोगी ण जीवे नव कम्मं न बधइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ।

३८ सरीर-पच्चक्खाणेण भते ! जीवे कि जणयइ ? सरीर-पच्चक्खाणेण सिद्धाइसयगुणकित्तण निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुण-सपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

३९ सहाय-पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे कि जणयइ ? सहाय-पच्चखाणेण एगीभाव जणयइ। एगीभावभूएवि य ण जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमतुमे सजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ।

४० भत्तपच्चक्खाणेण भते ! जीवे किं जणयइ ? भत्त-पच्चक्खाणेण अणेगाइ भवसयाइ निरुम्भइ।

४१ सब्भाव-पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? सब्भाव-पच्चक्खाणेणं अनियट्टिं जणयइ। अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलि कम्मं से खवेइ, तं जहा—वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परि-निव्वायइ सव्वदुक्खाणमतं करेइ।

४२ पडिरूवयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? पडिरूव-याए णं लाघवियं जणयइ। लघुभूएण जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउल-तव-समिइ समन्ना-गए यावि भवइ।

४३ वेयावच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेण तित्थयरनामगोत्त कम्मं निबंधइ ।

४४ सव्वगुणसपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? सव्व-गुणसपन्नयाए अपुणरावत्ति जणयइ । अपुणरावत्ति पत्तए णं जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण नो भागी भवइ ।

४५ वीयरागयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? वीयरा-गयाए नेहाणुबधणाणि तण्हाणुबधणाणि य वोच्छिदइ, मणुन्ना-मणुन्नेसु सद्द-फरिस-रूव-रस-गधेसु चेव विरज्जइ ।

४६ खतीए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? खंतीएण परिसहे जिणेइ ।

४७ मुत्तीए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? मुत्तीए ण अकिंचण जणयइ । अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाण पुरिसाण अपत्थणिज्जे भवइ ।

४८ अज्जवयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? अज्जवयाए काउज्जुयय भावुज्जुयय भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसवायणसंपन्नयाए ण जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ।

४९ मद्दवयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? मद्दवयाए अणुस्सियत्त जणयइ । अणुस्सियत्ते णं जीवे-मिउमद्दवसंपन्ने अट्ट-मय-ट्ठाणाइ निट्ठावेइ ।

५० भावसच्चेण भते ! जीवे किं जणयइ ? भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहंतपन्न-त्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अरहतपन्नत्तस्स धम्म-स्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ।

५१ करणसच्चे ण भंते ! जीवे किं जणयइ ? करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

५२ जोगसच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगसच्चेण जोगं विसोहेइ।

५३ मणगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ।

५४ वयगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वयगुत्तयाए णं निव्वियारं जणयइ। निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ।

५५ कायगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेण कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ।

५६ मणसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ।

५७ वयसमाहारणयाए भंते ! जीवे किं जणयइ ? वयसमाहारणयाए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ। वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ।

५८ कायसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए ण चरित्तपज्जवे विसोहेइ, चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुखाणमतं करेइ।

५९ नाणसपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? नाणसपन्नयाए ण जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने ण जीवे चाउरते ससारकतारे न विणस्सइ।

जहा सूइ ससुत्ता, पडियावि न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ॥

नाण-विणय-तव- चरित्त-जोगे संपाउणइ ससमय-परसमय-विसारए य संघायणिज्जे भवइ।

६० दंसणसपन्नयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ? दंसणसपन्नयाए ण भवमिच्छत्तछेयण करेइ, परं न विज्झायइ। परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेण नाणदंसणेण अप्पाणं सजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ।

६१ चरित्तसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ। सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मं से खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमतं करेइ।

६२ सोइंदियनिग्गहेणं भते ! जीवे किं जणयइ ? सोइंदियनिग्गहेण मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६३ चक्खिदियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? चक्खि-

दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्म न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६४ घाणिंदिय निग्गहेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? घाणिंदिय निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६५ जिब्भिंदियनिग्गहेण भंते ! जीवे किं जणयइ ? जिब्भिंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६६ फासिंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? फासिंदियनिग्गहेण मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६७ कोह विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कोह विजएणं खंतिं जणयइ, कोहवेयणिज्ज कम्म न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६८ माणविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? माणविजएण मद्दवं जणयइ, माणवेयणिज्जं कम्म न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

६९ मायाविजएण भंते ! जीवे किं जणयइ ? मायाविजएण अज्जवं जणयइ। मायावेयणिज्जं कम्म न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

७० लोभविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? लोभविजएणं संतोसं जणयइ, लोभवेयणिज्ज कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

७१ पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भंते ! जीवे किं जण-

यइ ? पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएण नाण-दंसण-चरित्ताराहण-याए अब्भुट्ठेइ । अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्म उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, एए तिन्निऽवि कम्मंसे जुगवं खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिण-पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोग-प्पभावं केवलवरनाणदंसणं समुप्पादेइ । जाव सजोगी भवइ, ताव ईरियावहियं कम्मं निबंधइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढम-समए बद्धं बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मया य भवइ ।

७२ अहाउयं पालइत्ता अंतोमुहुत्तद्धावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ, वइजोगं निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ, आणपाणुनिरोहं करेइ, ईसिपंचरहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियाय-माणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ।

७३ तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अवि-ग्गहेणं तत्थ गंता सागरोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतं करेइ ।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए ।

॥ सम्मत्त परक्कमे सम्मत्ते ॥२६॥

॥ तवमग्गं तीसइमं अज्झयणं ॥३०॥

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ।१।
पाणिवह-मुसावाया, अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ ।
राईभोयण-विरओ, जीवो हवइ अणासवो ।२।
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो हवइ अणासवो ।३।
एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ।४।
जहा महातलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ।५।
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ।६।
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो ।७।
अणसण-मुणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणया, य बज्झो तवो होइ ।८।
इत्तरिय मरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे ।
इत्तरिय सावकंखा, निरवकंखा उ बिइज्जिया ।९।
जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो ।
सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ।१०।
तत्तो य वग्गवग्गो, पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।

मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ।११।
जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया ।
सवियारमवियारा, कायचिट्ठ पई भवे ।१२।
अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया ।
नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु-वि ।१३।
ओमोयरणं पचहा, समासेण वियाहियं ।
दव्वओ खेत्तकालेणं, भावेण पज्जवेहि य ।१४।
जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई, एव दव्वेण ऊ भवे ।१५।
गामे नगरे तह रायहाणि, निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कव्वड-दोणमुह-पट्टण-मडम्ब-संवाहे ।१६।
आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे य ।
थलिसेणाखंधारे, सत्थे संवट्टकोट्टे य ।१७।
वाडेसु व रत्थासु व, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्त ।
कप्पइ उ एवमाई, एव खेत्तेण ऊ भवे ।१८।
पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्ति-पयग-वीहिया चेव ।
सम्वुक्कावट्टाययगतु, पच्चागया छट्ठा ।१९।
दिवसस्स पोरुसीण, चउण्हपि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एव चरमाणो खलु, कालामाण मुणेयव्व ।२०।
अहवा तइयाए पोरिसीए, उणाइ घासमेसतो ।
चऊभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ।२१।
इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नालकिओ वावि ।
अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ।२२।

अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुमुयते उ ।
एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयव्वं ।२३।
दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहिं ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ।२४।
अट्ठविहगोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ।२५।
खीरदहिसप्पिमाई, पणीयं पाणभोयण ।
परिवज्जणं रसाणं तु, भणियं रसविवज्जणं ।२६।
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जंति, कायकिलेसं तमाहियं ।२७।
एगंतमणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जिए ।
सयणासण-सेवणया, विवित्तसयणासणं ।२८।
एसो बाहिरगं तवो, समासेण वियाहिओ ।
अब्भिंतरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।२९।
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं च विउस्सग्गो, एसो अब्भिंतरो तवो ।३०।
आलोयणा-रिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ।३१।
अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं ।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ।३२।
आयरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ।३३।
वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा ।

अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पंचहा भवे ।३४।
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइ झाणाइं, झाण तं तु बुहा वए ।३५।
सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ।३६।
एव तवं तु दुविहं, जे सम्म आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पडिओ ।३७।

॥ तवमग्ग तीसइमं अज्झयण समत्त ॥३०॥

॥ चरणविही एगतीसइमं अज्झयणं ॥३१॥

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता वहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ।१।
एगओ विरइ कुज्जा, एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तण ।२।
रागदोसे य दो पावे, पावकम्म-पवत्तणे ।
जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।३।
दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ।४।
दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहइ निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।५।
विगहा-कसाय-सन्नाण, झाणाण च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्च, से न अच्छइ मडले ।६।
वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।७।
लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मंडले ।८।
पिंडोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मंडले ।९।
मदेसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खु-धम्मम्मि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ।१०।
उवासगाण पडिमासु, भिक्खूण पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ।११।
किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ।१२।
गाहासोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।१३।
बम्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य समाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।१४।
एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।१५।
तेवीसाए सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ।१६।
पणवीस भावणासु, उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मंडले ।१७।
अणगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ।१८।

पावसुयप्पसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ।१६।
सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ।२०।
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया ।
खिप्पं सो सव्वससारा, विप्पमुच्चइ पडिओ ।२१।

॥ चरणविही अज्झयण सम्मत्तं ॥३१॥

॥ पमायट्ठाणं बत्तीसइमं अज्झयणं ॥३२॥

अच्चंतकालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगंतहियं हियत्थं ।१।
नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएण, एगंतसोक्ख समुवेइ मोक्खं ।२।
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झाय-एगत-निसेवणा य, सुत्तत्थसंचितणया धिई य ।३।
आहारमिच्छे मियमेसणिज्ज, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धि ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोगं, समाहिकामे समणे तवस्सी ।४।
न वा लभेज्जा निउण सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एगोवि पावाइ विवज्जयतो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ।५।
जहा य अंडप्पभवा बलागा, अंड बलागप्पभव जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोह च तण्हाययण वयति ।६।
रागो य दोसोऽवि य कम्मबीय, कम्मं च मोहप्पभव वयति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूल, दुक्खं च जाईमरणं वयति ।७।

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ।८।
रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ।९।
रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ।१०।
जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविंदियग्गी वि पगामभोइणो, न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ।।
विवित्तसेज्जासणजंतियाणं, ओमासणाणं दमिइंदियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ।१२।
जहा बिरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बम्भयारिस्स खमो निवासो ।१३।
न रूव-लावण्ण-विलास-हासं, न जंपिय-इंगिय-पेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ।१४।
अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिंतणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं, हियं सया बम्भवए रयाणं ।१५।
कामं तु देवीहि विभूसियाहिं न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहाऽवि एगंतहियंति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ।१६।
मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ।१७।
एए य संगे समइक्कमित्ता, सुदुत्तरा चेव भवंति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गंगासमाणा ।१८।
कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।

जे काइयं माणसिय च किंचि, तस्सतगं गच्छइ वीयरागो ।१९।
जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डुए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ।२०।
जे इदियाण विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेमु मणऽपि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ।२१।
चक्खुस्स रूव गहणं वयति, त रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।२२।
रूवस्स चक्खु गहण वयति, चक्खुस्स रूव गहण वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ।२३।
रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व, अकालियं पावइ से विणास ।
रागाउरे से जह वा पयगे, आलोयलोले समुवेइ मच्चु ।२४।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दंत ेसेण सएण जतू, न किञ्चि रूवं अवरज्झई से ।२५।
एगंतरत्ते रुइरसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ।२६।
रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ।२७।
रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए वियोगे य कहं सुह से, सम्भोगकाले य अतित्तलाभे ।२८।
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ।२९।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्या वि दुक्खा न विमुच्चई से ।३०।

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययतो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।३१।
रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ।३२।
एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोह परंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।३३।
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि सतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।३४।
सायस्स सद्दं गहण वयंति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहू ।
तं दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।३५।
सद्दस्स सोय गहण वयंति, सोयस्स सद्द गहणं वयंति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ।३६।
सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चु ।३७।
जे यावि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि सद्द अवरुज्झई से ।३८।
एगंतरत्ते रुइरसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ।३९।
सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अतट्ठगुरू किलिट्ठे ।४०।
सद्दाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए वियोगे य कहं सुहं से, सभोगकाले य अतित्तलाभे ।४१।
सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ।४२।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ।४३।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययतो, सद्दे अतित्तो दुहीओ अणिस्सो ।४४।
सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ।४५।
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुह विवागे ।४६।
सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे-वि सतो,जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।४७।
घाणस्स गंध गहणं वयति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।४८।
गधस्स घाणं गहण वयति, घाणस्स गंधं गहण वयति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ।४९।
गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणास ।
रागाउरे ओसहिगधगिद्धे, सप्पे विलाओ विव निक्खमते ।५०।
जे यावि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जतू, न किंचि गधं अवरुज्झई से ।५१।
एगतरत्ते रुइरंसि गधे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ।५२।
गंधाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ।५३।

गंधाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए वियोगे य कह सुहं से, सभोगकाले य अतित्तलाभे ।५४।
गधे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ।५५।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गधे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ।५६।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरते ।
एव अदत्ताणि समाययंतो, गधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।५७।
गधाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ।५८।
एमेव गधम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ।५९।
गधे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि सतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।६०।
जिब्भाए रस गहण वयति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।६१।
रसस्स जिब्भ गहण वयंति, जिब्भाए रस गहण वयंति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ।६२।
रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व, अकालिय पावइ से विणास ।
रागाउरे बडिस विभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ।६३।
जे यावि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दतदोसेण सएण जतू, न किंचि रस अवरुज्झई से ।६४।
एगतरत्ते रुइरसि रसे, अतालिसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ।६५।
रसाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ।६६।
रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए वियोगे य कहं सुह से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ।६७।
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ।६८।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ।६९।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।७०।
रसाणुरत्तम्स नरस्स एवं, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ।७१।
एमेव रसम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, जं से पुणो होइ दुह विवागे ।७२।
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलास ।७३।
कायस्स फासं गहणं वयति, तं रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समोयओ तेसु स वीयरागो ।७४।
फासस्स काय गहण वयति, कायस्स फासं गहण वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोमस्स हेउ अमणुन्नमाहु ।७५।
फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे व रण्णे ।७६।

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि फासं अवरुज्झई से ।७७।
एगंतरत्ते रुइरसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ।७८।
फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ।७९।
फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कह सुह से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ।८०।
फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ।८१।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ।८२।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।८३।
फासाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ।८४।
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुहं विवागे ।८५।
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि सतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलास ।८६।
मणस्स भावं गहण वयति, त रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ।८७।
भावस्स मण गहणं वयंति, मणस्स भावं गहण वयंति ।

रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ।८८।
भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गावहिए गजे वा। ८९।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जन्तू, न किंचि भावं अवरुज्झई से ।९०।
एगंतरत्ते रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ।९१।
भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ।९२।
भावाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए वियोगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ९३।
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ।९४।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ।९५।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।९६।
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ।९७।
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।९८।
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेवि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी पलासं ।९९।

एविंदियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेवं थोवपि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्स करेति किंचि ।१००।
न कामभोगा समय उवेति, न यावि भोगा विगइं उवेति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ।१०१
कोह च माण च तहेव मायं, लोहं दुगच्छ अरइं रइं च ।
हासं भयं सोग-पुमित्थिवेय, नपुसवेय विविहे य भावे ।१०२।
आवज्जई एयमणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ।१०३।
कप्प न इच्छिज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावे ण तवप्पभावं ।
एव वियारे अमियप्पहारे, आवज्जई इदियचोरवस्से ।१०४।
तओ-से जायति पओयणाइं, निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, त्तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ।१०५।
विरज्जमाणस्स य इदियत्था, सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वेवि मणुन्नय वा, निव्वत्तयती अमणुन्नय वा ।१०६।
एव ससंकप्पविकप्पणासु, सजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा ।१०७।
स वियरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरण खणेण ।
तहेव जं दसणमावरेइ, ज चनरायं पकरेइ कम्म ।१०८।
सव्वं तओ जाणइ पासइ य, अमोहणे होइ निरतराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ।१०९।
सो तस्स मव्वस्स दुहस्स मुक्को, ज बाहई सयय जतुमेयं ।
दीहामय विप्पमुक्को पसत्थो,तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो ।११०।

अणाइकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता, कमेण अच्चंतसुही भवंति ।१११।

॥ पमायट्ठाण अज्झयण सम्मत्त ॥३२॥

॥ कम्मप्पयडी तेत्तीसइमं अज्झयणं ॥३३॥

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्वि जहक्कम ।
जेहिं वद्धो अय जीवो, संसारे परिवट्टई ।१।
नाणस्सावरणिज्जं, दसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहामोहं, आउकम्म तहेव य ।२।
नामकम्म च गोय च, अतरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ।३।
नाणावरणं पचविहं, सुयं आभिणिवोहियं ।
ओहिनाण च तइय, मणनाणं च केवलं ।४।
निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ, पचमा होइ नायव्वा ।५।
चक्खुमचक्खुओहिस्स, दसणे केवले य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरण ।६।
वेयणीयपि य दुविहं, सायमसाय च आहियं ।
सायस्स उ वहू भेया, एमेव असायस्सवि ।७।
मोहणिज्जपि दुविहं, दंमणे चरणे तहा ।
दसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ।८।
सम्मत्तं चेव मिच्छत्त, सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ।९।

चरित्तमोहणं कम्म, दुविह तु वियाहिय ।
कसायमोहणिज्ज तु, नोकसाय तहेव य ।१०।
सोलसविहभेएण, कम्मं तु कसायज ।
सत्तविह नवविहं वा, कम्म च नोकसायज ।११।
नेरइय-तिरिक्खाउ, मणुस्साउं तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु, आउं कम्मं चउव्विहं ।१२।
नामं कम्मं तु दुविह, सुहमसुह च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स-वि ।१३।
गोय कम्म दुविहं, उच्च नीयं च आहियं ।
उच्च अट्ठविहं होइ, एव नीय-पि आहिय ।१४।
दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा ।
पचविहमतरायं, समासेण वियाहिय ।१५।
एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्ग खेत्तकाले य, भाव च उत्तर सुण ।१६।
सव्वेसिं चेव कम्माण, पएसग्गमणतग ।
गण्ठियसत्ताईयं, अतो सिद्धाण आहियं ।१७।
सव्वजीवाण कम्म तु, संगहे छद्दिसागय ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ।१८।
उदहीसरिस-नामाण, तीसई कोडिकोडीओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अतोमुहुत्तं जहन्निया ।१९।
आवरणिज्जाण दुण्हपि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अंतराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ।२०।
उदहीसरिस-नामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ ।

मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।२१।
तेत्तीससागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अतोमुहुत्त जहन्निया ।२२।
उदहीसरिस-नामाण, वीसई कोडिकोडीओ ।
नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्ठ मुहुत्त जहन्निया ।२३।
सिद्धाणणंतभागो य, अणुभागा हवंति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्वजीवे अइच्छियं ।२४।
तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया ।
एएसि संवरे चेव, खवणे य जए बुहो ।२५।

॥ कम्मप्पयडी णाम अज्झयण सम्मत्त ॥३३॥

॥ चोत्तीसइमं लेसज्झयणं ॥३४॥

लेसज्झयण पवक्खामि, आणुपुव्वि जहक्कमं ।
छण्हं पि कम्मलेसाण, अणुभावे सुणेह मे ।१।
नामाइ वण्ण-रस-गंध-फास-परिणाम-लक्खण ।
ठाण ठिइ गइं चाउ, लेसाण तु सुणेह मे ।२।
किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य ।
सुक्कलेस्सा य छट्ठा य, नामाइ तु जहक्कम ।३।
जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ।४।
नीलासोगसकासा, चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसकासा, नीललेसा उ वण्णओ ।५।
अयसीपुप्फसकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।

पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ।६।
हिंगुलयधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुंडपईवनिभा, तेऊलेसा उ वण्णओ ।७।
हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा ।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ।८।
संखंककुंदसंकासा, खीरपूरसमप्पभा ।
रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ।९।
जह कडुयतुम्बगरसो, निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो ।१०।
जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो ।११।
जह तरुणअम्बगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो ।१२।
जह परिणयम्बगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो ।१३।
वरवारुणीए व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरगस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएण ।१४।
खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खंडसक्कररसो वा ।
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो ।१५।
जह गोमडस्स गंधो, सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तोवि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ।१६।
जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं ।
एत्तोवि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्ह-पि ।१७।

जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताण ।
एत्तोवि अणतगुणो, लेसाण अप्पसत्थाणं ।१८।
जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाण ।
एत्तोवि अणतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ।१६।
तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाण होइ परिणामो ।२०।
पंचासवप्पमत्तो तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य ।
तिव्वारम्भपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ।२१।
निद्धधसपरिणामो, निस्संसो अजिइदिओ ।
एयजोग समाउत्तो, 'किण्हलेस' तु परिणमे ।२२।
इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिया ।
गेही पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए सायगवेसए य ।२३।
आरम्भाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो ।
एयजोगसमाउत्तो, 'नीललेस' तु परिणमे ।२४।
वके वकसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ।२५।
उप्फालग दुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो, 'काऊलेस' तु परिणमे ।२६।
नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ।
विणीयविणए दते, जोगवं उवहाणवं ।२७।
पियधम्मे दढधम्मे अवज्जभीरू हिएसए ।
एयजोगसमाउत्तो, 'तेऊलेस' तु परिणमे ।२८।
पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए ।

पसंतचित्ते दंतप्पा, जोगव उवहाणवं ।२९।
तहा पयणुवाई य, उवसते जिइदिए ।
एयजोगसमाउत्तो, 'पम्हलेस' तु परिणमे ।३०।
अट्टरुद्दाणि दज्जित्ता, धम्मसुक्काणि भायए ।
पसतचित्ते दतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ।३१।
सरागे वीयरागे वा, उवसते जिइदिए ।
एयजोगसमाउत्तो, 'सुक्कलेस' तु परिणमे ।३२।
असखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया ।
संखाईया लोगा, लेसाण हवंति ठाणाइं ।३३।
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तऽहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'किण्हलेसाए' ।३४।
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंख-भाग-मब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'नीललेसाए' ।३५।
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसख-भाग-मब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'काउलेसाए' ।३६।
मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसख-भाग-मब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा 'तेउलेसाए' ।३७।
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही होइ मुहुत्तमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'पम्हलेसाए' ।३८।
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा 'सुक्कलेसाए' ।३९।
एसा खलु लेसाण, ओहेण ठिई वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइ तु वोच्छामि ४०।

दस वाससहस्साइं, काउए ठिई जहन्नया होइ ।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ।४१।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दसउदही पलिओवम, असंखभाग च उक्कोसा ।४२।
दसउदही पलिओवम, असखभाग जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइ, उक्कोसा होइ किण्हाए ।४३।
एसा नेरइयाण, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण पर वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाण ।४४।
अतोमुहुत्तमद्ध, लेसाण जहिं जहिं जाउ ।
तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेस ।४५।
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
नवहिं वरिसेहिं ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ।४६।
एसा तिरियनराण, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण पर वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाण ।४७।
दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए ।४८।
जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ।४९।
जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ।५०।
तेण परं वोच्छामि, तेऊ लेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइ वाणमंतर, जोइस-वेमाणियाणं च ।५१।
पलिओवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिया ।

पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ।५२।
दस वाससहस्साइ, तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुन्नुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ।५३।
जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा ।५४।
जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमब्भहिया ।५५।
किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेस्साओ ।
एयाहि तिहिवि जीवो, दुग्गइं उववज्जई ।५६।
तेऊ, पम्हा, सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, सुग्गइं उववज्जई ।५७।
लेस्साहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ।५८।
लेस्साहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ।५९।
अंतमुहुत्तम्मि गए, अंतमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेस्साहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छंति परलोयं ।६०।
तम्हा एयासि लेस्साण, आणुभावे वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ।६१।

॥ लेसज्झयण सम्मत्त ॥३४॥

।। पंचतीसइमं अणगारज्झयणं ।।३५।।

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्गं वुद्धेहि देसियं ।
जमायरंतो भिक्खू, दुक्खाणंतकरे भवे ।१।
गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जंति माणवा ।२।
तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभसेवणं ।
इच्छा-कामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ।३।
मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं, मणसा वि न पत्थए ।४।
इंदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ।५।
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।
पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ।६।
फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ।७।
न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारंभे, भूयाणं दिस्सए वहो ।८।
तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बादराण य ।
तम्हा गिहसमारंभं, संजओ परिवज्जए ।९।
तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ।१०।
जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्ठनिस्सिया ।

हम्मति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ।११।
विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणिविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ।१२।
हिरण्ण जायरूव च, मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकचणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ।१३।
किणतो कइओ होइ, विक्किणतो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टतो, भिक्खू न भवइ तारिसो ।१४।
भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खुवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो, भिक्खवत्ती सुहावहा ।१५।
समुयाण उछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिदिय ।
लाभालाभम्मि सतुट्ठे, पिण्डवाय चरे मुणी ।१६।
अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ।१७।
अच्चण रयण चेव, वंदण पूयण तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माण, मणसा-वि न पत्थए ।१८।
सुक्कज्झाण जियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ।१९।
निज्जूहिऊण आहार, कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण माणुस बोदिं, पहू दुक्खा विमुच्चई ।२०।
निमम्मे निरहंकारे, वीयरागो अणासवो ।
संपत्तो केवल नाणं, सासय परिणिव्वुए ।२१।

॥ अणगारज्झयण सम्मत्त ॥३५॥

॥ जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसइमं अज्झयणं ॥३६॥

जीवाजीवविभत्ति, सुणेह मे एगमणा इओ ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्म जयइ संजमे ।१।
जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए ।
अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ।२।
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
परूवणा तेसि भवे, जीवाणमजीवाण य ।३।
रूविणो चेव रूवी य, अजीवा दुविहा भवे ।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ।४।
धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए ।
अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ।५।
आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ।
अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ।६।
धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ।७।
धम्माधम्मागासा, तिन्नि वि एए अणाइया ।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्ध तु वियाहिया ।८।
समए वि सतइ पप्प, एवमेव वियाहिए ।
आएस पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ।९।
खधा य खधदेसा य, तप्पएसा तहेव य ।
परमाणुणो य बोद्धव्वा, रूविणो य चउव्विहा ।१०।
एगत्तेण पुहत्तेण, खधा य परमाणुय ।

लोगेगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ।११।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।१२।
सतइं पप्प तेऽणाई, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१३।
असखकालमुक्कोस, एक्क समय जहन्नय ।
अजीवाण य रूवीण, ठिई एसा वियाहिया ।१४।
अणतकालमुक्कोस, एक्कं समय जहन्नय ।
अजीवाण य रूवीण, अंतरेयं वियाहियं ।१५।
वण्णओ गधओ चेव, रसओ फासओ तहा ।
सठाणओ य विन्नेओ, परिणामो तेसिं पंचहा ।१६।
वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया, हलिद्दा सुक्किला तहा ।१७।
गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगंधपरिणामा, दुब्भिगंधा तहेव य ।१८।
रसओ परिणया जे उ, पचहा ते पकित्तिया ।
तित्तकडुयकसाया, अम्बिला महुरा तहा ।१९।
फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउआ चेव, गरुया लहुया तहा ।२०।
सीया उण्हा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया ।
इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ।२१।
सठाणओ परिणया जे उ, पचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला य वट्टा य, तंसा चउरंसमायया ।२२।

वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।२३।
वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।२४।
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।२५।
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।२६।
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।२७।
गंधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ, वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।२८।
गंधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।२९।
रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।३०।
रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।३१।
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३२।
रसओ अम्बिले जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ।३३।
रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।

गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३४।
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३५।
फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३६।
फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३७।
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३८।
फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।३९।
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।४०।
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।४१।
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ।४२।
परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ।४३।
संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए से फासओ वि य ।४४।
संठाणओ भवे तंसे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए से फासओ वि य ।४५।

संठाणओ जे चउरंसे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ।४६।
जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ।४७।
एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।
इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।४८।
संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।
सिद्धा णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ।४९।
इत्थीपुरीस सिद्धा य, तहेव य नपुंसगा ।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ।५०।
उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य ।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य ।५१।
दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य ।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई ।५२।
चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य ।
सलिंगेण अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई ।५३।
उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झंते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ।५४।
चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य ।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुवं ।
कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिया ।
कहिं बोंदिं चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ।५६।
अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।

इहं बोंदि चइत्ताणं, तत्थ गतूण सिज्झई ।५७।
बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे ।
ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिया ।५८।
पणयालसयसहस्सा, जोयणाण तु आयया ।
तावइय चेव वित्थिण्णा, तिगुणो तस्सेव परिरओ ।५९।
अट्ठजोयणबाहल्ला, सा मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायती चरिमंते, मच्छिपत्ताउ तणुयरी ।६०।
अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य, भणिया जिणवरेहिं ।६१।
संखककुंदसंकासा, पण्डुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयंतो उ वियाहिओ ।६२।
जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ।६३।
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोयग्गम्मि पइट्ठिया ।
भवप्पवंचओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ।६४।
उस्सेहो जेसिं जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ ।
तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ।६५।
एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ।६६।
अरूविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपन्ना, उवमा जस्स नत्थि उ ।६७।
लोगेगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ।६८।

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ।६९।
पुढवी आउ जीवा य, तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ।७०।
दुविहा पुढवी जीवा य, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ।७१।
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ।७२।
किण्हा नीला य रुहिरा य, हालिद्दा सुक्किला तहा ।
पण्डुपणगमट्टिया, खरा छत्तीसई विहा ।७३।
पुढवी य सक्करा वालुया य, उवले सिला य लोणूसे ।
अय-तम्ब तउय-सीसग, रुप्प-सुवण्णे य वइरे य ।७४।
हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजण-पवाले ।
अब्भपडलब्भवालुय, बायरकाए मणिविहाणे ।७५।
गोमेज्जए य रुयगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगय-मसारगल्ले, भुयमोयग-इंदनीले य ।७६।
चंदण-गेरुय हंसगब्भे, पुलए सोगंधिए य बोधव्वे ।
चंदप्पहवेरुलिए, जलकंते सूरकंते य ।७७।
एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।७८।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ।७९।
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।९२।
दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ।९३।
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ।९४।
पत्तेगसरीराओ, णेगहा ते पकित्तिया ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ।९५।
वलय पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तहा ।
हरियकाया उ बोद्धव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया ।९६।
सहारणसरीराओ, णेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ।९७।
हरिली सिरिलि सस्सिरिली, जावई केयकदली ।
पलण्डु लसणकंदे य, कदली य कुहुव्वए ।९८।
लोहिणी हूयथी हूय, कुहणा य तहेव य ।
कण्हे य वज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा ।९९।
अस्सकण्णी य बोद्धव्वा, सीहण्णी तहेव य ।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ।१००।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।१०१।
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१०२।
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।

वणस्सईण आउ तु, अंतोमुहुत्त जहन्निया ।१०३।
अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नयं ।
कायठिई पणगाण, त कायं तु अमुचओ ।१०४।
असंखकालमुक्कोसं, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अतरं ।१०५।
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि,विहाणाइं सहस्ससो ।१०६।
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।१०७।
तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा, उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ।१०८।
दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ।१०९।
बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ।११०।
उक्का विज्जू य बोधव्वा, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ।१११।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।११२।
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।११३।
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई तेऊणं, अतोमुहुत्तं जहन्निया ।११४।

वणस्सईण आउ तु, अंतोमुहुत्त जहन्निया ।१०३।
अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नयं ।
कायठिई पणगाण, त कायं तु अमुचओ ।१०४।
असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नय ।
विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अतरं ।१०५।
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।१०६।
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।१०७।
तेऊ वाऊ य वोद्धव्वा, उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ।१०८।
दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ।१०९।
बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चिजाला तहेव य ।११०।
उक्का विज्जू य बोधव्वा, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ।१११।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।११२।
सतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।११३।
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई तेऊणं, अंतोमुहुत्त जहन्निया ।११४।

असंखकालमुक्कोस, अतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई तेऊण, त कायं तु अमुचओ ।११५।
अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, तेऊ जीवाण अतर ।११६।
एएसि वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।११७।
दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ।११८।
बायरा जे उ पज्जत्ता, पचहा ते पकित्तिया ।
उक्कलिया मण्डलिया, घणगुजा सुद्धवाया य ।११९।
संवट्टगवाया य, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।१२०।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।१२१।
संतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१२२।
तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई वाऊण, अतोमुहुत्त जहन्निया ।१२३।
असखकालमुक्कोसं, अतोमुहुत्तं जहन्नय ।
कायठिई वाऊण, तं काय तु अमुचओ ।१२४।
अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्तं जहन्नय ।
विजढम्मि सए काए, वाऊजीवाण अंतरं ।१२५।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।१२६।
उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया ।
बेइंदिय-तेइंदिय, चउरो पंचिंदिया चेव ।१२७।
बेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ।१२८।
किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा ।१२९।
पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य ।१३०।
इइ बेइंदिया एए, णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।१३१।
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।
वासाइं बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
बेइंदिय आउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।१३३।
संखिज्जकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ।१३४।
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ।१३५।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।१३६।
तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ।

कुंथुपिवीलिउड्डुसा, उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहारकट्ठहारा य, मालूगा पत्तहारगा ।१३८।
कप्पासट्ठिम्मिजाया, तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य, बोद्धव्वा इंदगाइया ।१३९।
इंदगोवगमाईया, णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।१४०।
संतइ पप्प·णाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ।१४१।
एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइंदियआउठिई, अंतोमुहुत्त जहन्निया ।१४२।
संखिज्जकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नय ।
तेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुचओ ।१४३।
अणंतकालमुक्कोस, अंतो मुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइंदियजीवाण, अंतरं च वियाहिय ।१४४।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ।१४५।
चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ।१४६।
अंधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कुंकणे तहा ।१४७।
कुक्कुडे सिंगिरीडी य, नंदावत्ते य विच्छुए ।
डोले भिंगिरीडी य, विरिली अच्छिवेहए ।१४८।
अच्छिले माहले अच्छिरोडए, विचित्ते चित्तपत्तए ।

ओहिजलिया जलकारी य, नीयया तंबगाइया ।१४९।
इय चउरिंदिया एए, णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया * ।१५०।
संतइ पप्प-णाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१५१।
छच्चेव य मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउरिंदियआउठिई, अंतोमुहुत्त जहन्निया ।१५२।
सखिज्जकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
चउरिंदियकायठिई, तं काय तु अमुचओ ।१५३।
अणतकालमुक्कोस. अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, अंतर च वियाहियं ।१५४।
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।१५५।
पचिंदिया उ जे जीवा, चउविहा ते वियाहिया ।
नेरइया तिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ।१५६।
नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
रयणाभ-सक्कराभा, वालुयाभा य आहिया ।१५७।
पकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा ।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ।१५८।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वोच्छ चउव्विहं ।१५९।
सतइ पप्प-णाईया, अपज्जवसियावि य ।

* 'लोगस्स एगदेसम्मि,ते सव्वे परिकित्तिया' पाठान्तर ।

ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१६०।
सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेण दसवाससहस्सिया ।१६१।
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेण, एगं तु सागरोवम ।१६२।
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेण तिण्णेव सागरोवमा ।१६३।
दससागरोवमाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेव सागरोवमा ।१६४।
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पचमाए जहन्नेण, दस चेव सागरोवमा ।१६५।
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ।१६६।
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेण, बावीस सागरोवमा ।१६७।
जा चेव य आउठिई, नेरइयाण वियाहिया ।
सा तेसि कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ।१६८।
अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, नेरइयाण तु अंतर ।१६९।
एएसि वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।१७०।
पचदियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया ।
समुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवक्कंतिया तहा ।१७१।

दुविहा ते भवे तिविहा. जलयरा थलयरा तहा ।
नहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ।१७२।
मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा ।
सुसुमारा य बोधव्वा, पचहा जलयराहिया ।१७३।
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छ चउव्विहं ।१७४।
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१७५।
एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई जलयराण, अतोमुहुत्तं जहन्निया ।१७६।
पुव्वकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई जलयराण, अतोमुहुत्तं जहन्नयं ।१७७।
अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढम्मि सए काए, जलयरायण अतरं ।१७८।
चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण ।१७९।
एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपय सणहप्पया ।
हयमाइ गोणमाइ, गयमाइ-सीहमाइणो ।१८०।
भुओरग परिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काऽणेगहा भवे ।१८१।
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।१८२।
सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।

ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ।१८३।
पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई थलयराण, अतो मुहुत्त जहन्निया ।१८४।
पुव्वकोडिपुहुत्तेण, अतोमुहुत्त जहन्निया ।
कायठिई थलयराण, अंतर तेसिम भवे ।१८५।
अणतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, थलयराण तु अतरं ।१८६।
चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा ।१८७।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वोच्छं चउव्विह ।१८८।
संतइ पप्प-णाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१८९।
पलिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे ।
आउठिई खहयराण अतोमुहुत्त जहन्निया ।१९०।
असंखभागो पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया ।
पुव्वकोडीपुहुत्तेण, अतोमुहुत्त जहन्निया ।१९१।
कायठिई खहयराण अतर तेसिमं भवे ।
अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नयं ।१९२।
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।१९३।
मणुया दुविह भेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कतिया तहा ।१९४।

गब्भवक्कतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
कम्मअकम्मभूमा य अतरद्दीवया तहा ।१९५।
पन्नरस तीसविहा, भेया अट्ठवीसइं ।
सखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ।१९६।
समुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेवि वियाहिया ।१९७।
संतइ पप्प-णाईया, अप्पज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।१९८।
पलिओवमाउ तिन्निवि, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई मणुयाण, अतोमुहुत्त जहन्निया ।१९९।
पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पुव्वकोडिपुहुत्तेण, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।२००।
कायठिई मणुयाण, अंतर तेसिम भवे ।
अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नयं ।२०१।
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।२०२।
देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्ज-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया तहा ।२०३।
दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ।२०४।
असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया ।
दीवोदहि दिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ।२०५।
पिसायभूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा ।

महोरगा य गधव्वा, अट्ठविहा वाणमंतरा ।२०६।
चदा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।
ठिया विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ।२०७।
वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पाईया तहेव य ।२०८।
कप्पावगा बारसहा, सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणकुमारमाहिंदा, बंभलोगा य लंतगा ।२०९।
महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ।२१०।
कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ।२११।
हेट्ठिमा-हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमाउवरिमा चेव, मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ।२१२।
मज्झिमा-मज्झिमा चेव, मज्झिमा-उवरिमा तहा ।
उवरिमा-हेट्ठिमा चेव, उवरिमा-मज्झिमा तहा ।२१३।
उवरिमा-उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयता य, जयता अपराजिया ।२१४।
सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एए, णेगहा एवमायओ ।२१५।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेवि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।२१६।
सतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ।२१७।

साहीयं सागरं एक्कं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाण जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ।२१८।
पलिओवममेग तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
वतराण जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ।२१९।
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहिय ।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ।२२०।
दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहम्मम्मि जहन्नेण, एगं च पलिओवमं ।२२१।
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेण, साहिय पलिओवम ।२२२।
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेण, दुन्नि ऊ सागरोवमा ।२२३।
साहिया सागरो सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे ।
माहिंदम्मि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ।२२४।
दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेणं, सत्त ऊ सागरोवमा ।२२५।
चउदस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
लंतगम्मि जहन्नेण, दस उ सागरोवमा ।२२६।
सत्तरस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस, सागरोवमा ।२२७।
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्सारम्मि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ।२२८।
सागरा अउणवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।

आणयम्मि जहन्नेण, अट्ठारस सागरोवमा ।२२९।
वीसं तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पाणयम्मि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ।२३०।
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ।२३१।
बावीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अच्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ।२३२।
तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढम्मि जहन्नेण, बावीस सागरोवमा ।२३३।
चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
विइयम्मि जहन्नेणं, तेवीस सागरोवमा ।२३४।
पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ।२३५।
छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेण, सागरा पणवीसई ।२३६।
सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसइ ।२३७।
सागरा अट्ठवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ।२३८।
सागरा अउणतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई ।२३९।
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ।२४०।

सागरा इक्कतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ।२४१।
तेत्तीसा सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कत्तीसई ।२४२।
अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीस सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ।२४३।
जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहण्णुक्कोसिया भवे ।२४४।
अणंतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, देवाण हुज्ज अंतरं ।२४५।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ।२४६।
संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
रूविणो चेवरूवी य,अजीवा दुविहा वि य ।२४७।
अणंतकालमुक्कोस, वासपुहुत्त जहन्नयं ।
आणयाईणं कप्पाणं, गेविज्जाणं तु अंतर ।२४८।
संखिज्जसागरुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नय ।
अणुत्तराण य देवाण, अंतरं तु वियाहिया ।२४९।
इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य ।
सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी ।२५०।
तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
इमेण कम्मजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ।२५१।
बारसेव उ वासाइ, संलेहुक्कोसिया भवे ।

संवच्छरमज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ।२५२।
पढमे वासचउक्कम्मि, विगई निज्जूहण करे ।
विईए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तव चरे ।२५३।
एगतरमायाम, कट्टु संवच्छरे दुवे ।
तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठ तव चरे ।२५४।
तओ सवच्छरद्ध तु, विगिट्ठं तु तवं चरे ।
परिमिय चेव आयाम, तम्मि सवच्छरे करे ।२५५।
कोडीसहियमायामं, कट्टु सवच्छरे मुणी ।
मासद्धमासिएण तु, आहारेण तव चरे ।२५६।
कदप्पमाभिओगं च, किव्विसिय मोहमासुरत्त च ।
एयाउ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होति ।२५७।
मिच्छादसणरत्ता, सनियाणा उ हिसगा ।
इय जे मरंति जीवा, तेसि पुण दुल्लहा बोही ।२५८।
सम्मद्दसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इय जे मरति जीवा, तेसि सुलहा भवे बोही ।२५९।
मिच्छादसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
इय जे मरति जीवा, तेसि पुण दुल्लहा बोही ।२६०।
जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयण जे करेति भावेण ।
अमला असकिलिट्ठा, ते होति परित्तससारी ।२६१।
बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
मरिहति ते वराया, जिवयण जे न जाणति ।२६२।
बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
एएण कारणेण, अरिहा आलोयण सोउ ।२६३।

कदप्पकुक्कुयाइं तह, सीलसहाव-हासविगहाइं ।
विम्हावेतो य पर, कंदप्पं भावण कुणइ ।२६४।
मंता जोगं काउ, भूईकम्मं च जे पउजति ।
साय-रस-इड्ढिहेउं, अभिओगं भावण कुणइ ।२६५।
नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूण ।
माई अवण्णवाई, किव्विसिय भावण कुणई ।२६६।
अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी ।
एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ ।२६७।
सत्थगहणं विसभक्खण च, जलणं च जलपवेसो य ।
अणायारभडसेवी, जम्मणमरणाणि बधति ।२६८।
इय पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीस उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसवुडे ।२६९।

॥ जीवाजीवविभत्ती अज्झयण समत्त ॥३६॥

॥ उत्तरज्झयण सुत्तं समत्त ॥

श्री नन्दीसूत्रम्

जयइ जग-जीव-जोणी-वियाणओ, जगगुरू जगाणदो ।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ।१।
जयइ सुयाण पभवो, तित्थयराण अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाण, जयइ महप्पा महावीरो ।२।
भद्दं सव्व-जगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।

भद्द सुरासुरनमंसियस्स, भद्द धुयकम्मरयस्स ।३।
गुण-भवण-गहण सुय-रयण-भरिय, दसण विसुद्धरत्थागा ।
सघ-नगर ! भद्द ते, अखड चारित्तपागारा ।४।
सजम-तव-तुबारयम्स, नमो सम्मत्त-पारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ, सया संघचक्कस्स ।५।
भद्दं सील-पडागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स ।
सघरहस्स भगवओ, सज्झायसुनदिघोसस्स ।६।
कम्मरय-जलोह-विणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स ।
पंच-महव्वय-थिरकण्णियस्स, गुणकेसरालस्स ।७।
सावग-जण-महुयर-परिवुडस्स, जिण-सूर-तेय-बुद्धस्स ।
सघपउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्स-पत्तस्स ।८।
तव-संजम-मयलछण, अकिरिय-राहुमुह-दुद्धरिस निच्चं ।
जय संघ-चद ! निम्मल-सम्मत्त-विसुद्ध-जोण्हागा ।९।
पर-तित्थिय-गह-पह-नासगस्स, तवतेय-दित्त-लेसस्स ।
नाणु-ज्जोयस्स जए, भद्दं दम-संघ-सूरस्स ।१०।
भद्द धिइ-वेला-परिगयस्स, सज्झाय-जोग-मगरस्स ।
अक्खोहस्स भगवओ, सघ-समुद्दस्स रुंद्दस्स ।११।
सम्म-द्दंमण-वर-वइर-दढ-रूढ-गाढावगाढ-पेढस्स ।
धम्म वररयण-मडिय-चामीयर-मेहलागस्स ।१२।
निय-मूसिय-कणय-सिलाय-लुज्जल-जलंत-चित्तकूडस्स ।
नदण-वण-मणहर सुरभि-सील-गधुद्धुमायस्स ।१३।
जीवदया-सुदर-कद-रुद्दरिय-मुणिवर-मइद-इण्णस्स ।
हेउ-सय-धाउ-पगलंत-रयणदित्तोसहि-गुहस्स ।१४।

सवर-वर-जल-पग-लिय-उज्झर-पविराय-माणहारस्स ।
सावग-जण-पउर-रवत-मोर-नच्चत-कुहरस्स ।१५।
विणय-नय-पवर-मुणिवर-फुरत-विज्जुज्जलत-सिहरस्स ।
विविह-गुण-कप्प-रुक्खग-फलभर-कुसुमाउल-वणस्स ।१६।
नाण-वर-रयण-दिप्पत-कत-वेरुलिय-विमल-चूलस्स ।
वदामि विणय-पणओ, सघ-महामदर-गिरिस्स ।१७।
गुण-रयणुज्जल-कडयं, सील सुगधि-तव-मडिउद्देस ।
सुयबारसंगसिहर, सघ-महामदरं वदे ।१८।
नगर-रह-चक्क-पउमे, चदे सूरे समुद्द-मेरुम्मि ।
जो उवमिज्जइ सयय, त सघगुणायर वदे ।१९।
वदे उसभ अजिय, सभवमभिनदण-सुमइ-सुप्पभ-सुपासं ।
ससि-पुप्फदत-सीयल-सिज्जंस वासुपुज्जं च ।२०।
विमल-मणंत च धम्मं सतिं, कुंथु अरं च मल्लि च ।
मुनिसुव्वय-नमि नेमिं, पास तह वद्धमाण च ।२१।
पढमित्थ इंदभूई, बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति ।
तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सूहम्मे य ।२२।
मडि य मोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अयलभाया य ।
मेयज्जे य पहासे य, गणहरा हुति वीरस्स ।२३।
निव्वुइ-पह-सासणय, जयइ सया सव्व-भाव-देसणय ।
कु-समय-मय-नासणय, जिणिदवर-वीर-सासणय ।२४।
सुहम्म अग्गिवेसाणं, जबूनामं च कासवं ।
पभव कच्चायण वंदे, वच्छ सिज्जंभव तहा ।२५।
जसभद्द तुगिय वदे, संभूयं चेव माढरं ।

भद्दबाहु च पाइण्ण, थूलभद्दं च गोयमं ।२६।
एलावच्चसगोत्त, वदामि महागिरिं सुहत्थि च ।
तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ।२७।
हारिय गुत्तं साइ च, वदिमो हारिय च सामज्जं ।
वदे कोसियगोत्तं, संडिल्लं अज्जजीयधर ।२८।
तिसमुद्दखायकित्ति, दीवसमुद्देसु गहियपेयालं ।
वदे अज्जसमुद्द, अक्खुभियसमुद्दगंभीर ।२९।
भणग करगं झरगं, पभावगं णाण-दसण-गुणाणं ।
वदामि अज्जमगु, सुयसागरपारगं धीरं ।३०।
वदामि अज्जधम्म, तत्तो वंदे य भद्दगुत्त च ।
तत्तो य अज्जवइरं, तवनियमगुणेहिं वइरसम ।३१।
वदामि अज्जरक्खियखमणे, रक्खियचरित्तसव्वस्से ।
रयणकरंडगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ।३२।
नाणम्मि दसणम्मि य, तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्ज नदिलखमण, सिरसा वदे पसण्णमण ।३३।
वड्ढउ वायगवसो, जसवसो अज्जनागहत्थीणं ।
वागरणकरणभगिय, कम्मपयडीपहाणाण ।३४।
जच्चंजणधाउसमप्पहाण, मुद्दियकुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवसो, रेवईनक्खत्तनामाण ।३५।
अयलपुरा णिक्खंते, कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
बभद्दीवगसीहे, वायगपयमुत्तमं पत्ते ।३६।
जेसि इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खदिलायरिए ।३७।

तत्तो हिमवतमहतविक्कमे, धिइपरक्कममणते ।
सज्झायमणतधरे, हिमवते वदिमो सिरसा ।३८।
कालियसुयअणुओगस्स, धारए धारए य पुव्वाण ।
हिमवतखमासमणे, वदे णागज्जुणायरिए ।३९।
मिउमद्दवसपन्ने, आणुपुव्विं वायगत्तण पत्ते ।
ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वदे ।४०।
गोविंदाणपि नमो, अणुओगे विउल धारिणिंदाण ।
णिच्च खतिदयाण, परूवणे दुल्लभिदाण ।४१।
तत्तो य भूयदिन्नं, निच्च तवसजमे अनिव्विण्ण ।
पडियजणसामण्ण, वंदामो सजम विहिण्णू ।४२।
वरकणगतवियचपगविमउलवरकमलगब्भसरिवण्णे ।
भवियजणहिययदइए. दयागुणविसारए धीरे ।४३।
अड्ढ भरहप्पहाणे, बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसभे, नाइलकुलवसनदिकरे ।४४।
जग भूयहियप्पगब्भे, वंदेऽह भूयदिन्नमायरिए ।
भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीण ।४५।
सुमुणियनिच्चानिच्चं, सुमुणियसुत्तत्थधारयं वदे ।
सब्भावुब्भावणयातत्थ, लोहिच्चणामाणं ।४६।
अत्थमहत्थक्खाणिं, सुसमणवक्खाणकहणनिव्वाणिं ।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं ।४७।
तवनियमसच्चसजमविणयज्जवखंति मद्दवरयाणं ।
सीलगुणगद्दियाण अणुओगजुगप्पहाणाण ।४८।
सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।

पाए पावयणीण, पडिच्छियसएहिं पणिवइए ।४९।
जे अण्णे भगवंते, कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परूवणं वोच्छं ।५०।
सेलघण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हंस, महिस, मेसे य ।
मसग, जलूग, बिराली, जाहग, गो, भेरी, आभीरी ५१।
सा समासओ तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा । जाणिया जहा–
खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टंति इह गुरुगुण समिद्धा ।
दोसे य विवज्जंति, तं जाणसु जाणियं परिसं ।५२।
अजाणिया जहा–
जा होइ पगइमहुरा, मियछावयसीहकुक्कुडयभूआ ।
रयणमिव असठविया, अजाणिया सा भवे परिसा ।५३।
दुव्वियड्ढा जहा–
न य कत्थइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्टइ गामिल्लयदुव्वियड्ढो ।५४।

सूत्र-१ नाणं पंचविहं पण्णत्तं, तंजहा–आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं ।

सूत्र–२ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा–पच्चक्खं च परोक्खं च ।

सूत्र–३ से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा–इंदियपच्चक्खं, णोइंदियपच्चक्खं च ।

सूत्र–४ से किं तं इंदिय पच्चक्खं ? इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तंजहा–सोइंदियपच्चक्खं, चक्खिंदियपच्चक्खं,

घाणिंदियपच्चक्ख, जिब्भिंदियपच्चक्ख, फासिंदिय पच्चक्खं, से त इंदियपच्चक्ख ।

सूत्र–५ से किं तं णोइंदियपच्चक्खं ? णोइंदियपच्चक्ख तिविहं पण्णत्तं तंजहा–ओहिनाणपच्चक्खं, मणपज्जवनाणपच्चक्ख, केवलनाणपच्चक्ख ।

सूत्र–६ से कि तं ओहिनाणपच्चक्खं ? ओहिनाणपच्चक्ख दुविह पण्णत्तं, तजहा–भवपच्चइय च खाओवसमिय च ।

सूत्र–७ से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दुण्हं, तजहा–देवाण य नेरइयाण य ।

सूत्र–८ से किं तं खाओवसमियं ? खाओवसमियं दुण्ह, तंजहा–मणुस्साण य पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं य । को हेऊ खाओवसमिय ? खाओवसमिय तयावरणिज्जाण कम्माण उदिण्णाण खएण अणुदिण्णाण उवसमेण ओहिनाणं समुप्पज्जइ ।

सूत्र–९ अहवा गुणपडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिनाण समुप्पज्जइ तं समासओ छव्विह पण्णत्तं, तजहा–आणुगामियं, अणाणुगामिय, वड्ढमाणय, हीयमाणय, पडिवाइयं, अपडिवाइय ।

सूत्र–१० से किं तं आणुगामियओहिनाण ? आणुगामियओहिनाण दुविहं पण्णत्त, तजहा–अतगय च, मज्झगयं च । से किं तं अतगयं ? अंतगय तिविह पण्णत्त, तजहा–पुरओ अंतगयं, मग्गओ अंतगय, पासओ अतगय । से किं त पुरओ अतगयं, ? पुरओ अतगयं–से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा अलाय वा मणिं वा पईव वा जोइ वा पुरओ काउ पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा, से त्त पुरओ अतगयं ।

से किं तं मग्गओ अंतगयं ? मग्गओ अतगय–से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छिज्जा, से त्तं मग्गओ अंतगयं। से किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अतगय–से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलिय वा अलाय वा मणिं वा पईवं वा जोइ वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा, से त्तं पासओ अंतगय, से त्तं अंतगयं। से किं त मज्झगय ? मज्झगयं से जहानामए केइ पुरसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा, से त्त मज्झगय। अंतगयस्स मज्झगयस्स य–को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएण ओहिनाणेण पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ। मग्गओ अतगएणं ओहिनाणेण मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ। पासओ अतगएण ओहिनाणेण पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। मज्झगएणं ओहिनाणेण सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। से त्त आणुगामियं ओहिनाणं।

सूत्र–११ से किं तं अणाणुगामिय ओहिनाण ? अणाणुगामिय ओहिनाण से जहानामए केइ पुरिसे एगं महत जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं, परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अन्नत्थ गए न जाणइ न पासइ,एवामेव अणाणुगामिय ओहिनाण जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव

सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा सवद्धाणि वा असबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अण्णत्थगए ण जाणइ ण पासइ। से त्तं अणाणुगामिय ओहिनाण।

सूत्र–१२ से किं तं वड्ढमाणय ओहिनाण? वड्ढमाणयं ओहिनाण पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वड्ढमाणस्स वड्ढमाण-चरित्तस्स, विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण-चरित्तस्स, सव्वओ समता ओहि वड्ढइ—

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स।
ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्तं जहन्न तु ।५५।
सव्वबहुअगणिजीवा निरंतरं जत्तियं भरिज्जसु।
खित्तं सव्वदिसाग परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ।५६।
अंगुलमावलियाण भागमसखिज्ज दोसु सखिज्जा।
अगुलमावलियतो आवलिया अंगुलपुहुत्त ।५७।
हत्थम्मि मुहुत्ततो, दिवसतो गाउयम्मि बोद्धव्वो।
जोयणदिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पण्णवीमाओ ।५८।
भरहम्मि अद्धमासो, जम्बुद्दीवम्मि साहिओ मासो।
वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ।५९।
संखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दाऽवि हुंति संखिज्जा।
कालम्मि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ।६०।
काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइयव्वो खित्तवुड्ढीए।
वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ।६१।
सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयर हवइ खित्तं।
अंगलसेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ।६२।

से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाण।

सूत्र–१३ से किं त हीयमाणयं ओहिनाण ? हीयमाणयं ओहिनाण अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाण-चरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायइ से तं हीयमाणयं ओहिनाण।

सूत्र–१४ से किं तं पडिवाइ ओहिनाण ? पडिवाइ ओहिनाण जहण्णेण अंगुलस्स असंखिज्जयभागं वा संखिज्जय-भागं वा वालग्ग वा वालग्गपुहुत्त वा लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तं वा, जूयं वा जूयपुहुत्तं वा, जवं वा जवपुहुत्तं वा, अंगुलं वा अंगुल-पुहुत्तं वा, पाय वा पायपुहुत्तं वा, विहत्थि वा विहत्थिपुहुत्तं वा, रयणि वा रयणिपुहुत्त वा, कुच्छि वा कुच्छिपुहुत्तं वा, धणु वा धणुपुहुत्तं वा, गाउअ वा गाउयपुहुत्तं वा. जोयणं वा जोयण-पुहुत्त वा, जोयणसय वा जोयणसयपुहुत्तं वा, जोयणसहस्स वा जोयणसहस्सपुहुत्तं वा, जोयणलक्ख वा जोयणलक्खपुहुत्त वा, जोयणकोडि वा जोयणकोडिपुहुत्तं वा, जोयणकोडाकोडि वा जोयकोडाकोडिपुहुत्त वा, जोयणसंखिज्ज वा जोयणसंखिज्ज पुहुत्त वा जोयणअसखेज्ज वा जोयणअसंखेज्जपुहुत्तं वा उक्को-सेण लोग वा पासित्ता ण पडिवइज्जा। से तं पडिवाइ ओहि-नाण।

सूत्र–१५ से किं तं अपडिवाइ ओहिनाण ? अपडिवाइ ओहिनाणं जेण अलोगस्स एगमवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिनाण। से त्त अपडिवाइ ओहिनाण।

सूत्र–१६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तजहा–दव्वओ,

खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोगे लोगप्पमाण-मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ। कालओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय-मणागयं च कालं जाणइ पासइ। भावओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणवि अणंते भावे जाणइ पासइ। सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ।

सूत्र–१७ ओही भवपच्चइओ, गुणपच्चइओ वण्णिओ दुविहो।
तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खित्ते य काले य।६३।
नेरइयदेवतित्थंकरा य, ओहिस्सऽबाहिरा हुंति।
पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति।६४।

से त्तं ओहिनाणपच्चक्खं।

से किं तं मणपज्जवनाणं? मणपज्जवनाणे णं भंते! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं। जइ मणुस्साणं किं समुच्छिममणुस्साणं गब्भ-वक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! नो संमुच्छिममणुस्साणं उपज्जई गब्भवक्कंतियमणुस्साणं। जइ गब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं कम्म-भूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, अकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणु-स्साणं, अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! कम्म-भूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। नो अकम्मभूमियगब्भवक्कंतिय-

मणुस्साणं । नो अतरदोवगगब्भवक्कतियमणुस्साण । जइ कम्म-भूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, कि सखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, असखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण ? गोयमा ! सखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साणं, नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण । जइ सखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, किं पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, अपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण ? गोयमा ! पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, नो अपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण ।

जइ पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण ? गोयमा ! सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, नो मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण, नो सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कतियमणुस्साण ।

जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, किं सजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, असजयसम्मदिट्ठिपज्ज-

त्तग संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, संजया-संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंति-यमणुस्साण ? गोयमा ! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासा-उयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, नो असंजयसम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, नो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भव-क्कंतियमणुस्साण ।

जइ संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमि-यगब्भवक्कंतियमणुस्साण, किं पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसं-खेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, अपमत्तसंज-यसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियम-णुस्साण ? गोयमा ! अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवा-साउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, नो पमत्तसंजयसम्मद्दि-ट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण ।

जइ अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयक-म्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, किं इड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्म-द्दिट्ठिपज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणु-स्साण, अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासा-उयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण ? गोयमा ! इड्ढिपत्तअप-मत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय-कम्मभूमियगब्भव-क्कंतियमणुस्साण, नो अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तग-संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साण, मणपज्जव-नाण समुप्पज्जइ ।

सूत्र–१८ तं च दुविहं उप्पज्जइ तंजहा–उज्जुमई य विउलमई य, तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा–दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ। खित्तओ णं उज्जुमई य जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जयभागं उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले-खुड्डग-पयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्म-भूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छप्पण्णाए अंतरदीवगेसु सण्णि-पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अड्ढाईज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियत्तरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्ध-तरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

मणपज्जवनाणं पुण, जणमणपरिचिंतियत्थपागडणं।
माणुसखित्तनिबद्धं, गुणपच्चइयं चरित्तवओ।६५।

से त्तं मणपज्जवनाणं।

सूत्र-१९ से किं तं केवलनाणं ? केवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाणं च। से किं तं भवत्थकेवलनाणं ? भवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-सजोगिभवत्थकेवलनाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च। से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ? सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयसजोगीभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं। से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ? अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च, से त्तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं, से त्तं भवत्थकेवलनाणं।

सुत्र-२० से किं तं सिद्धकेवलनाणं ? सिद्धकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-अणंतरसिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च।

सूत्र-२१ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ? अणंतरसिद्धकेवलनाणं पण्णरसविहं पण्णत्तं तंजहा-तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा, तित्थयरसिद्धा, अतित्थयरसिद्धा, सयंबुद्धसिद्धा, पत्तेयबुद्धसिद्धा, बुद्धबोहियसिद्धा, इत्थिलिंगसिद्धा, पुरिसलिंगसिद्धा, नपुंसगलिंगसिद्धा, सलिंगसिद्धा अण्णलिंगसिद्धा गिहिलिंगसिद्धा, एगसिद्धा, अणेगसिद्धा, से त्तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं।

सूत्र–२२ से किं तं परंपरसिद्धकेवलनाणं ? परंपरसिद्ध-केवलनाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा–अपढमसमयसिद्धकेवलनाणं दुसमयसिद्धकेवलनाणं, तिसमयसिद्धकेवलनाणं, चउसमयसिद्ध-केवलनाणं, जाव दससमयसिद्धकेवलनाणं, संखिज्जसमयसिद्ध-केवलनाणं, असंखिज्जसमयसिद्धकेवलनाणं, अणंतसमयसिद्ध-केवलनाणं, से त्तं परंपरसिद्धकेवलनाणं, से तं सिद्धकेवलनाणं।

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं।
सासयमप्पडिवाइ, एगविहं केवलं नाणं।६६।

सूत्र–२३ केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणाजोगे।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुयं हवइ सेसं।६७।

से तं केवलनाणं, से तं णोइंदियपच्चक्खं, से तं पच्चक्खनाणं।

सूत्र–२४ से किं तं परोक्खनाणं ? परोक्खनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा–आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च, सुयनाणपरोक्खं च, जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं, जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिणिबोहियनाणं, दोऽवि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पण्णवयंति–अभिनिबुज्झइत्ति आभि-णिबोहियनाणं, सुणेइत्ति सुयनाणं, मइपुव्वं जेण सुयं, न मई सुयपुव्विया।

सूत्र–२५ अविसेसिया मई, मइनाणं च मइअण्णाणं च। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मई मइनाण। मिच्छद्दिट्ठिस्स मई मइअण्णाण। अविसेसिय सुयं सुयनाण च सुयअण्णाण च। विसेसिय सुय सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयनाण, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं।

सूत्र–२६ से किं त आभिणिबोहियनाण ? आभिणिबोहियनाण दुविह पण्णत्तं, तंजहा–सुयनिस्सियं च, अस्सुयनिस्सियं च। से किं तं अस्सुयनिस्सिय ? अस्सुयनिस्सिय चउव्विह पण्णत्त, तजहा–

उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ।६८।

सूत्र–२७ पुव्व-मदिट्ठमस्सुयमवेइयतक्खणविसुद्ध-गहियत्था।
अव्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम।६९।

भरहसिल, पणिय, रुक्खे, खुड्डुग, पड, सरड काय उच्चारे।
गय, घयण, गोल, खंभे, खुड्डुग, मग्गि, त्थि, पइ, पुत्ते।७०।
भरह, सिल, मिंढ, कुक्कुड, तिल, वालुय, हत्थि, अगड, वणसडे।
पायस, अइया, पत्ते, खाडहिला, पंच पियरो य,।७१।

महुसित्थ, मुद्दि, अंके य, नाणए, भिक्खू, चेडगनिहाणे।
सिक्खा य, अत्थसत्थे, इच्छा य मह, सयसहस्से ७२।
भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला।
उभओ लोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी।७३।
निमित्ते, अत्थसत्थे य, लेहे, गणिए य, कूव, अस्से य।
गद्दभ, लक्खण, गठी, अगए, रहिए य, गणिया य।७४।
सीया साडी दीहं च, तण अवसव्वयं च कुचस्स।

निव्वोदए य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाश्रो ।७५।
उवश्रोगदिट्ठसारा, कम्मपसगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ।७६।
हेरण्णिए, करिसए, कोलिय, डोवे य, मुत्ति, घय, पवए ।
तुण्णाए, वड्ढइय, पूयइ, घड, चित्तकारे य ।७७।
श्रणुमाणहेउदिट्ठतसाहिया, वयविवागपरिणामा ।
हियनिस्सेयसफलवई, वुद्धी परिणामिया नाम ।७८।
अभए, सिट्ठि, कुमारे, देवी, उदिश्रोदए, हवइ राया ।
साहू य नदिसेणे, धणदत्ते, सावग, श्रमच्चे ।७९।
खमए, श्रमच्चभुत्ते, चाणक्के, चेव थूलभद्दे य ।
नासिकसुदरिनंदे, वइरे, परिणामिया बुद्धी ।८०।
चलणाहण, आभंडे, मणी य, सप्पे य, खग्गि, थूभिंदे ।
परिणामियवुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ।८१।

से त्त श्रस्सुयनिस्सिय। से किं त सुयनिस्सियं ? सुयनिस्सियं चउव्विह पण्णत्त, तजहा–उग्गहे, ईहा, श्रवाश्रो, धारणा ।

सूत्र–२८ से किं त उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तजहा–श्रत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य ॥

सूत्र–२९ से किं तं वजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तजहा–सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिदियवजणुग्गहे जिब्भिदियवंजणुग्गहे फासिंदियवजणुग्गहे । से तं वंजणुग्गहे ।

सूत्र–३० से किं त श्रत्थुग्गहे ? श्रत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–सोइंदियश्रत्थुग्गहे, चक्खिदियश्रत्थुग्गहे, घाणिदियश्रत्थुग्गहे, जिब्भिदियअत्थुग्गहे, फासिंदियश्रत्थुग्गहे, नोइदियश्रत्थुग्गहे ।

सूत्र-३१ तस्स ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पच नामधिज्जा भवति, तंजहा-ओगेण्हया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा। से त्त उग्गहे।

सूत्र-३२ से किं त ईहा ? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइदियईहा, चक्खिदियईहा, घाणिदियईहा, जिब्भिदियईहा, फासिदियईहा, नोइदियईहा, तीसे ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावजणा पच नामधिज्जा भवति, तंजहा-आभोगणया, मग्गणया, गवेसणया, चिता, वीमंसा। से त्तं ईहा।

सूत्र-३३ से किं त अवाए ? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइदियअवाए, चक्खिदियअवाए, घाणिदियअवाए, जिब्भिदियअवाए, फासिदियअवाए नोइंदियअवाए, तस्स ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावजणा पच नामधिज्जा भवति, तंजहा-आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे। से त्त अवाए।

सूत्र-३४ से किं त धारणा ? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइदियधारणा, चक्खिदियधारणा, घाणिदियधारणा, जिब्भिदियधारणा, फासिदियधारणा, नोइदियधारणा। तीसे ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पच नामधिज्जा भवति, तंजहा-धारणा, साधारणा, ठवणा, पइट्ठा, कोट्ठे, से त्त धारणा।

सूत्र-३५ उग्गहे इक्कसमइए, अतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा सखेज्जं वा काल असखेज्जं वा काल।

सूत्र-३६ एव अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स

वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिवोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण य। से किं तं पडिवोहगदिट्ठंतेण? पडिबोहगदिट्ठंतेण से जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुतं पडिबोहिज्जा, अमुगा अमुगत्ति, तत्थ चोयगे पन्नवय एव वयासि—किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति? असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहण मागच्छंति? एवं वयंत चोयगं पण्णवए एवं वयासी—नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, से तं पडिवोहगदिट्ठंतेण। से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेण से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेग उदगबिंदू पक्खेविज्जा, से णट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि णट्ठे एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू। जे णं तं मल्लगं भरिहिति, होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ, ताहे हुं त्ति करेइ, नो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ,

तओण धारेइ सखिज्ज वा कालं, असखिज्ज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सद्द सुणिज्जा, तेण सद्दात्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सद्दाइ, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ–अमुगे एस सद्दे, तओ ण अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ णं धारेइ सखेज्ज वा कालं असंखेज्ज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूव पासिज्जा, तेण रूवत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रूवत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ–अमुगे एस रूवेत्ति, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा कालं, असखेज्जं वा कालं । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त गधं अग्घाइज्जा तेण गंधत्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गधेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा कालं असखेज्ज वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रस आसाइज्जा, तेण रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रसोत्ति । तओ ईहं पविमइ, तओ जाणइ–अमुगे एस रसे, तआ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखिज्ज वा कालं असखिज्ज वा कालं । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फास पडिसवेइज्जा तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ–अमुगे एस फासे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ

सखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सुमिण पासिज्जा, तेण सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस सुमिणे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्जं वा काल, असंखेज्जं वा काल।

से तं मल्लगदिट्ठतेण।

सूत्र-३७ त समासओ चउव्विह पण्णत्तं, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण आभिणिबोहिय-नाणी आएसेण सव्वाइ दव्वाइ जाणइ. न पासइ। खेत्तओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ। कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ, न पासइ। भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुंति चत्तारि।
आभिणिवोहियनाणस्स, भेयवत्थू समासेण।८२।
अत्थाण उग्गहणम्मि, उग्गहो तह वियालणे ईहा।
ववसायम्मि अवाओ, धरण पुण धारण विंति।८३।
उग्गह इक्क समय, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु।
कालमसख संख च, धारणा होइ नायव्वा।८४।
पुट्ठ सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु।
गंध रसं च फास च, बद्धपुट्ठं वियागरे।८५।
भासासमसेढीओ, सद्द ज सुणइ मीसिय सुणइ।

वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ।८६।
ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिबोहियं ।।८७।।
से तं आभिणिबोहियनाणपरोक्ख । सेतं मइनाण ।

सूत्र-३८ से किं तं सुयनाणपरोक्खं ? सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविह पण्णत्तं, तंजहा-अक्खरसुयं, अणक्खरसुयं, सण्णिसुय, असण्णिसुयं, सम्मसुयं, मिच्छसुयं, साइयं, अणाइयं, सपज्जवसियं, अपज्जवसिय, गमियं, अगमियं, अंगपविट्ठं, अणंगपविट्ठं ।

सूत्र-३९ से किं तं अक्खरसुयं ? अक्खरसुयं तिविह पण्णत्तं, तंजहा-सन्नक्खरं, वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं । से किं तं सन्नक्खर ? सन्नक्खर अक्खरस्स सठाणागिई, से त सन्नक्खर । से किं तं वजणक्खरं ? वंजक्खर अक्खरस्स वंजणाभिलावो, से तं वंजणक्खर । से किं त लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खर-लद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पजई, तजहा-सोइंदियलद्धिअक्खर, चक्खिदियलद्धिअक्खरं, घाणिदियलद्धिअक्खरं, रसणिदियलद्धि-अक्खरं, फासिंदियलद्धिअक्खरं, नोइंदियलद्धिअक्खरं, से तं लद्धिअक्खरं, से त अक्खरसुयं ।

से किं तं अणक्खरसुय ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं,तजहा-
ऊससियं नीससियं, निच्छूढ खासियं च छीयं च ।
निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ।८८।
से तं अणक्खरसुयं ।

सूत्र-४० से किं त सण्णिसुयं ? सण्णिसुय तिविहं पण्णत्त, तजहा-कालिओवएसेण, हेऊवएसेण, दिट्ठिवाओवएसेण ।

से किं त कालिग्रोवएसेण ? कालिग्रोवएसेण जस्स ण ग्रत्थि ईहा, ग्रवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से ण सण्णीति लब्भइ, जस्स ण णत्थि ईहा, ग्रवोहो, मग्गणा गवेसणा, चिंता, वीमसा, से णं ग्रसण्णीति लब्भइ, से त्त कालिग्रोवएसेण। से कि त हेऊवएमेणं ? हेऊवएसेण जस्सणं ग्रत्थि ग्रभिसधारणपुव्विया करणसत्ती से ण सण्णीति लब्भइ। जस्स ण नत्थि ग्रभिसधारणपुव्विया करणसत्ती से ण ग्रसण्णीति लब्भइ। से त हेऊवएसेण। से किं तं दिट्ठिवाग्रोवएसेण ? दिट्ठिवाग्रोवएसेण सण्णिसुयस्स खग्रोवसमेण सण्णी लब्भइ, ग्रसण्णिसुयस्स खग्रोसमेण ग्रसण्णी लब्भइ। से त दिट्ठिवाग्रोवएसेण। से त सण्णिसुयं। से तं असण्णिसुयं।

सूत्र–४१ से किं त सम्ममुय ? सम्मसुयं ज इम ग्ररहतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णनाणदसणधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खयमहियपूइएहिं तीयपडुप्पण्णमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीग्र दुवालसंग गणिपिडगं, तजहा–ग्रायारो, सुयगडो, ठाण, समवाग्रो, विवाहपण्णत्ती, नायाधम्मकहाग्रो, उवासगदसाग्रो, ग्रंतगडदसाग्रो, अणुत्तरोववाइयदसाग्रो, पण्हावागरणाइं, विवागसुय, दिट्ठिवाग्रो, इच्चेय दुवालसगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुय, ग्रभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं, तेण पर भिण्णेसु भयणा। से त सम्मसुय।

सूत्र–४२ से किं त मिच्छासुयं ? मिच्छासुयं ज इमं ग्रण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छदवुद्धिमइविगप्पिय, तजहा–भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लय, सगडभद्दियाग्रो,

खोड (घोडग) मुहं, कप्पासिय, नागसुहुम, कणगसत्तरी, वइ-सेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, काविलिय, लोगायय, सट्ठितत, माढर, पुराण, वागरण, भागवयं, पायजली, पुस्सदेवयं, लेह, गणियं, सउणरुय, नाडयाइं, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवगा, एयाइ मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइ मिच्छासुय एयाइ चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइ सम्म-सुय, अहवा मिच्छदिट्ठिस्सवि एयाइ चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठिओ चयति। से त मिच्छासुयं।

सूत्र–४३ से किं त साइय सपज्जवसिय, अणाइयं अपज्जवसिय च ? इच्चेइयं दुवालसगं गणिपिडग वुच्छित्तिनय-ट्ठयाए साइय सपज्जवसिय, अवुच्छित्तिनयट्ठयाए आणाइयं अप-ज्जवसिय। त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा–दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं सम्मसुय एगं पुरिस पडुच्च साइय सपज्जवसिय, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणा-इयं अपज्जवसियं, खेत्तओ ण पच भरहाइ पचेरवयाइं पडुच्च साइय सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्ज-वसिय, कालओ ण उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइय सपज्जवसिय, नोउस्सप्पिणिं नोओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसिय, भावओ ण जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघवि-ज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जति, दसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदसिज्जंति, ते तया भावे पडुच्च साइय सपज्जवसिय खाओव-समियं पुण भाव पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, अहवा भवसिद्धि-

यस्स सुय साइयं सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स सुय अणाइय अपज्जवसियं च सव्वागासपएसग्ग सव्वागासपएसेहिं अणतगुणिय पज्जवक्खरं निप्फज्जइ, सव्वजीवाणपि य ण अक्खरस्स अणत-भागो, निच्चुग्घाडियो जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्त पाविज्जा,–सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चंदसूराण। से त साइयं सपज्जवसिय। से त अणाइय अपज्जवसियं।

सूत्र–४४ से किं तं गमियं? गमिय दिट्ठिवाओ। से किं तं अगमिय? अगमियं कालियं सुयं। से तं गमियं। से त अग-मिय। अहवा त समासओ दुविह पण्णत्तं, तजहा–अंगपविट्ठं, अगबाहिर च। से किं त अगबाहिर? अगबाहिर दुविह पण्णत्त, तजहा–आवस्सय च, आवस्सयवइरित्त च। से किं तं आव-स्सयं? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्त, तजहा–सामाइयं, चउवी-सत्थओ, वदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाण, से तं आवस्सयं। से किं तं आवस्सयवइरित्त? आवस्सयवइरित्त दुविहं पण्णत्त, तंजहा–कालिय च, उक्कालियं च। से किं तं उक्कालियं? उक्कालिय, अणेगविह पण्णत्तं, तंजहा–दसवेया-लियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुय, उववाइय, रायपसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्प-मायं, नदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तदुलवेयालिय, चंदा-विज्झय सूरपण्णत्ती, पोरिसिमंडल, मडलपवेसो, विज्जाचरण-विणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आय-विसोही, वीयरागसुयं, सलेहणासुय, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ, से त्तं उक्कालियं।

से किं तं कालियं ? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं, जम्बूदीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती खुड्डिया-विमाणपविभत्ती, महल्लिया-विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ, निरयावलियाओ, कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिणभावणाणं महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं, एवमाइयाइं चउरासीइं पइण्णगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइं पइण्णगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दसपइण्णगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव। से त्तं कालियं। से तं आवस्सयवइरित्तं। से तं अणंगपविट्ठं।

सूत्र—४५ से किं तं अंगपविट्ठं ? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तंजहा—आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ, विवाहपण्णत्ती, नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओ।

सूत्र—४६ से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं

निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जायामायावित्तीओ आघविज्जंति, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–नाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा, अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगं, दो सुयक्खधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइ उद्देसणकाला, पचासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, सखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकड-निबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ। से तं आयारे (१)।

सूत्र–४७ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ, सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा, अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ संगहणीओ, सखिज्जाओ-

पडिवत्तीओ, से ण अंगट्ठायाए बिइए अगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीस उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीस पयसहस्साइं पयग्गेण, सखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति परूविज्जति, दंसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एवं आया, एव नाया एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त सूयगडे (२)

सूत्र–४८ से कि त ठाणे ? ठाणे ण जीवा ठाविज्जति, अजीवा ठाविज्जति, जीवाजीवा ठाविज्जति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे ण टका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुडाइ, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जति। ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ। ठाणे ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ; संखेज्जाओ पडिवत्तीओ से ण अंगट्ठयाए तइए अंगे एगे सुयक्खंधे, दसअज्झयणा एगवीस उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि पयसहस्सा पयग्गेण सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कड-निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदंसिज्जति। से एवं

आया एव नाया, एवं विण्णाया एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से तं ठाणे (३)।

सूत्र-४९ से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति जीवाजीवा समासिज्जति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ अलोए समासिज्जइ लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाण एगुत्तरियाण ठाणसयविवड्ढियाण भावाण परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवगे समासिज्जइ, समवायस्स ण परित्ता वायणा सखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ सखिज्जाओ संगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकड-निवद्ध निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति दसिज्जति निदसिज्जति, उवदसिज्जंति, से एव आया, एवं नाया, एव विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से तं समवाए (४)।

सूत्र-५० से किं त विवाहे? विवाहे ण जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जति, जीवाजीवा विआहिज्जति, ससमए विआहिज्जइ, परसमए विआहिज्जइ, ससमए परसमए विआहिज्जइ, लोए विआहिज्जइ अलोए विआहिज्जइ, लोयालोए,

विआहिज्जइ विवाहस्स ण परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओग-दारा, सखिज्जा वेढा सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जु-त्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए पचमे अगे, एगे सूयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्जयणसए, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरण-सहस्साइ, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेण, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कडनिबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा, आघ-विज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जंति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदंसिज्जति, से एवं आया, एवं नाया, एव विण्णाया, एवं-चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ । से तं विवाहे (५)।

सूत्र—५१ से किं तं नायाधम्मकहाओ ? नायधम्मकहासु ण नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसर-णाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इह-लोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ परि-आया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खा-णाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चायाईओ, पुण बोहिलाभा, अतकिरियाओ य आघविज्जंति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच-पंच-अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पच-पंच-उवक्खाइगा-सयाइ, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच-पंच-अक्खाइय-उवक्खाइयासयाइ, एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति समक्खायं । नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा सखिज्जा अणुओगदारा,

संखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाश्रो निज्जुत्तीश्रो, सखिज्जाश्रो संगहणीश्रो, संखिज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो । से णं श्रगट्ठयाए छट्ठे श्रगे, दो सुयक्खधा, एगूणवीस श्रज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा श्रक्खरा, श्रणता गमा, श्रणता पज्जवा, परित्ता तसा, श्रणता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति से एवं आया, एवं नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा श्राघविज्जइ । से तं नायाधम्मकहाश्रो (६)।

सूत्र–५२ से किं तं उवासगदसाश्रो ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइ, चेइयाइं, वणसडाइं, समोसरणाइ, रायाणो, श्रम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाश्रो इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाश्रो, परिश्रागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-पडिवज्जणया, पडिमाश्रो, उवसग्गा, संलेहणाश्रो, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाश्रोवगमणाइ, देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चायाईश्रो, पुण वोहिलाभा, श्रतकिरिश्रो य आघविज्जंति, उवासगदसाण परित्ता वायणा, संखेज्जा श्रणुश्रोगदारा, सखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाश्रो निज्जुत्तीश्रो, सखेज्जाश्रो संगहणीश्रो, संखेज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो । से णं श्रंगट्ठयाए सत्तमे श्रगे एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दससमुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, श्रणंता पज्जवा, परित्ता तसा, श्रणता

थावरा, सासय-कड निबद्ध निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जति, से एवं आया, एव नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त उवासगदसाओ (७)।

सूत्र–५३ से किं तं अंतगडदसाओ ? अतगडदसासु ण अंतगडाणं नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ, वणसडाइ समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ, अतकिरियाओ, आघविज्जति, अतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणी, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ से ण अगट्ठयाए अट्ठमे अगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा अणता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जति परूविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जंति, उवदसिज्जंति, से एव आया, एव नाया, एव विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से तं अतगडदसाओ (८)।

सूत्र–५४ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणुत्तरोववाइयाण नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइ, वणसडाइ, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मा-

यरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववाइयत्ति उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुण बोहिलाभा, अतकिरियाओ, आघविज्जंति, अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अगट्ठयाए नवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जंति, निदसिज्जति उवदसिज्जति, से एवं-आया, एव नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ। से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ (९)।

सूत्र–५५ से किं त पण्हावागरणाइं? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तर पसिणसयं, अट्ठुत्तर अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसय, तंजहा–अगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अन्नेवि विचित्ता विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा सवाया आघविज्जति, पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ सगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तिओ. से ण अगट्ठयाए दसमे अगे एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा,

पणयालीस उद्देसणकाला. पणयालीसं समुद्देसणकाला, सखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा. अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जति, दसिज्जंति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया एवं विण्णाया, एव चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त पण्हावागरणाइं (१०)।

सूत्र–५६ से किं तं विवागसुय ? विवागसुए ण सुकड-दुक्कडाण कम्माण फलविवागे आघविज्जइ, तत्थ ण दस दुह-विवागा, दस सुहविवागा। से किं त दुहविवागा ? दुह-विवागेसु ण दुहविवागाण नगराइं, उज्जाणाइं, वणसडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, निरयगमणाइं। संसारभवपवचा दुहपरपराओ, दुकुलपच्चायाईओ, दुल्लहबोहियत्तं, आघविज्जइ, से तं दुहविवागा। से किं त सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुहविवागाण नगराइं, उज्जणाइ, वणसडाइं, चेइयाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इह-लोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, सलेहणाओ, भत्तपच्च-क्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुयपरपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुण बोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघवि-ज्जंति, विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखि-

ज्जाओसगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अंगट्ठयाए इक्कारसमे अगे, दो सुयक्खधा, वीसं अज्झयणा, वीस उद्देसण-काला, वीस समुद्देसणकाला, सखिज्जाइं पयसहस्साइ पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दंसिज्जति, उवदसि-ज्जंति से एव आया, एवं नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ । से त विवागसुय (११)।

सूत्र–५७ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए णं सव्वभाव-परूवणा आघविज्जइ, से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा–परिकम्मे, सुत्ताइ, पुव्वगए, अणुओगे, चूलिया । से कि त परि-कम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तंजहा–सिद्धसेणिया परि-कम्मे, मणुस्ससेणिया-परिकम्मे, पुट्ठसेणिया-परिकम्मे, ओगाढ-सेणिया-परिकम्मे,' उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे, विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे, चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे । से किं त सिद्ध-सेणिया-परिकम्मे ? सिद्धसेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा–माउगापयाइं, एगट्ठियपयाइं, अट्ठ पयाइ, पाढोआगासप-याइं केउभूय, रासिबद्धं, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूय, पडि-ग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, सिद्धावत्तं, से तं सिद्धसेणिया-परिकम्मे (१)।

से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तजहा–माउयापयाइ, एगट्ठिय-पयाइं अट्ठपयाइ, पाढोआगासपयाइ केउभूयं, रासिबद्ध, एगगुणं

दुगुण, तिगुण, केउभूय पडिग्गहो ससारपडिग्गहो, नदावत्तं, मणुस्सावत्त । से त मणुस्ससेणिया-परिकम्मे (२)।

से किं त पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा—पाढाग्रागासपयाइ, केउभूय, रासिबद्धं एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूय, पडिग्गहो, ससार-पडिग्गहो, नदावत्तं, पुट्ठावत्तं । से त पुट्ठसेणिया-परिकम्मे (३)।

से किं त ओगाढसेणिया-परिकम्मे ? ओगाढसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते तजहा—पाढोग्रागासपयाइ, केउ-भूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूय, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नदावत्तं, ओगाढावत्त । से त ओगाढसेणिया-परिकम्मे (४)।

से किं त उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे ? उवसपज्ज-णसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा—पाढोआगास पयाई, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूयं, पडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, उवसपज्जणावत्तं । से त उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे (५)।

से किं त विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ? विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तजहा—पाढोआगास-पयाइ, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुणं, तिगुण, केउभूय, पडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्तं, विप्पजहणावत्त । से त विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे (६)।

से किं तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ? चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पन्नत्ते, तजहा—पाढोआगासपयाइ, केउ-

भूय, रासिवद्ध, एगगुण, दुगुण, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्त, चुयाचुयावत्तं। से त चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे।

छ चउक्कनइयाइं, सत्त तेरासियाइं। से तं परिकम्मे (१)।

से किं त सूत्ताइ ? सुत्ताइ बावीस पण्णत्ताइ, तंजहा–उज्जुसुयं, परिणयापरिणयं, वहुभगिय, विजयचरिय, अणतरं, परपर, मासाण, संजूहं। सभिण्ण, आहव्वाय, सोवत्थियावत्तं, नदावत्त, वहुल, पुट्ठापुट्ठं, वियावत्तं एवंभूय, दुयावत्तं वत्तमाणपय, समभिरूढ, सव्वओभद्दं, पस्सास, दुप्पडिग्गह, इच्चेइयाइं बावीस सुत्ताइ छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीस सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ तिगणइयाणि तेरासिय-सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीस सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतित्ति मक्खायं। से त सुत्ताइं (२)।

से किं त पुव्वगए ? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा–उप्पायपुव्वं, अग्गाणीय, वीरिय, अत्थिनत्थिप्पवायं, नाणप्पवाय, सच्चप्पवायं, आयप्पवाय, कम्मप्पवाय, पच्चक्खाणप्पवाय (पच्चक्खाण) विज्जाणुप्पवायं, अवझं पाणाऊ, किरियाविसालं, लोकविंदुसार। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू, पण्णत्ता। अग्गाणीयपुव्वस्स ण चोद्दस वत्थू, दुवालस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स ण अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू

पण्णत्ता। सच्चप्पवायपुव्वस्स ण सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स ण तीस वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणपुव्वस्स ण वीस वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स ण पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। अवंभपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स ण तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसाल पुव्वस्स ण तीस वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदुसारपुव्वस्स ण पणवीसं वत्थू पण्णत्ता,

दस, चोद्दस, अट्ठ, अट्ठारसेव, बारस, दुवे य, वत्थूणि।
सोलस, तीस, वीसा, पन्नरस, अणुप्पवायम्मि।८९।
बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि।
तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ।९०।
चत्तारि, दुवालस, अट्ठ चेव दस चेव चुल्लवत्थूणि।
आइल्लण चउण्हं, सेसाण चूलिया नत्थि। से त पुव्वगए (३)।९१।

से किं त अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तजहा—मूलपढमाणुओगे, गडियाणुओगे य। सेकिं तं मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे ण अरहताण भगवताण पुव्वभवा, देवगमणाइं, आउं, चवणाइ, जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरीओ, पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणा, गणहरा, अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाण, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य वाई, अणुत्तरगई य उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिर च कालं, पाओवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघविप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते, एवमन्ने य

एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से तं मूलपढमाणुओगे।

से किं त गडियाणुओगे ? गडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ, चक्कवट्टिगडियाओ, दसारगंडियाओ, वलदेवगंडियाओ वासुदेवगडियाओ गणधरगंडियाओ, भद्दवाहुगंडियाओ, तवोकम्मगडियाओ, हरिवंसगडियाओ उस्सप्पिणीगडियाओ, ओसप्पिणीगडियाओ चित्तंतरगडियाओ अमर-नर-तिरिय-निरय-गइ-गमण-विविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति। से त गंडियाणुओगे, से तं अणुओगे (४)। से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्ह पुव्वाणं, चूलिया, सेसाइं पुव्वाइ अचूलियाइं। से तं चूलियाओ (५)। दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से ण अंगट्ठयाए वारसमे अगे, एगे सुयक्खधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जति। से तं दिट्ठिवाए।१२।

सूत्र—५८ इच्चेइयंमि दुवालसगे गणिपिडगे अणंता भावा अणता अभावा अणता हेऊ, अणता अहेऊ, अणता कारणा,

अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भव-सिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता—

भावमभावा हेऊमहेऊ कारणमकारणे चेव।
जीवाजीवा भवियमभविया, सिद्धा असिद्धा य।६२।

इच्चेयं दुवालसगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चे-इयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवाल-संगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति। इच्चेइयं दुवालसगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउ-रंतं संसारकंतारं वीईवइंसु। इच्चेइयं दुवालसगं गणिपिडगं पडुप्पणकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवयंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्संति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे। से जहानामए पंचत्थिकाए न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ

न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए सासए, अक्खए, अव्वए अवट्ठिए, निच्चे। से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–दव्वओ, खित्तओ, कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्व खेत्त जाणइ पासइ, कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्व कालं जाणइ पासइ, भावओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ।

सूत्र–५९ अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमिय अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ।९३।
आगमसत्थग्गहण, ज बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठ।
विंति सुयनाणलभं, तं पुव्वविसारया धीरा ।९४।
सुस्सूसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ य, ईहए याऽवि।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं ।९५।
मूअ हुंकार वा, बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा।
तत्तो पसंगपारायण च, परिणिट्ठ सत्तमए ।९६।
सुत्तत्थो खलु पढमो, वीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ।९७।

से तं अंगपविट्ठ. से त सुयनाण। से तं परोक्खनाण। से तं नंदी।

।। नंदीसुत्तं समत्तं ।।

श्री अणुत्तरोववाइयदसा सूत्र

तेणं काले ण, तेण समए ण, रायगिहे णाम णयरे होत्था, सेणियणामं राया होत्था चेलणा देवी, गुणसिलए चेइए वण्णश्रो।

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, अज्जसुहम्मस्स समोसरण, परिसा णिग्गया, धम्मोकहिश्रो, परिसा पडिगया।२।

जबू जाव पज्जुवासइ एव वयासी—जइ ण भते! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स श्रगस्स श्रतगडदसाण श्रयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भते! अंगस्स श्रणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव सपत्तेणं के श्रट्ठे पण्णत्ते? ।३।

तएण से सुहम्मे श्रणगारे, जंबू श्रणगारं एवं वयासी—एव खलु जंबू! समणेण जाव संपत्तेणं नवमस्स श्रंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता।४।

जइ ण भते! समणेणं जाव सपत्तेण नवमस्स श्रगस्स श्रणुत्तरोववाइयदसाणं तश्रो वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते! वग्गस्स श्रणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव सपत्तेण कइ श्रज्झयणा पण्णत्ता? ।५।

एवं खलु जबू! समणेण जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस श्रज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

जालि, मयालि, उवयालि, पुरिससेणे य, वारिसेणे य,।
दीहदते य, लट्ठदते य, वेहल्ले, वेहासे, अभयेति य कुमारे।१।६।

जइ ण भते! समणेणं जाव सपत्तेणं श्रणुत्तरोववाइय-

दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।७।

एव खलु जम्बू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नयरे रिद्धित्थिमिय समिद्धे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारणी देवी, सीहसुमिण पासित्ताण पडिबुद्धा, जाव जालि कुमारे जाए, जहा मेहो जाव अट्ठट्ठओ दाओ, जाव उप्पिपासाए जाव विहरइ ।८।

तेण कालेण तेण समएणं समण भगव महावीरे जाव समोसढे, सेणिओ णिग्गओ, जाली जहा मेहो तहा जाली वि णिग्गओ, तहेव णिक्खतो, जहा मेहो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ ।

तएणं से जाली अणगारे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयण संवच्छरं तवोकम्मं उवसंपजित्ता णं विहरित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया ! मापडिबध करेह ।१०।

तएण से जाली अणगारे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुणाए समाणे समण भगव महावीर वदइ नमसइ वंदित्ता णमसित्ता गुणरयण सवच्छरं तवोकम्म उवसपजित्ता ण विहरइ । तं जहा—

पढमं मास चउत्थ चउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ।

दोच्चं मास छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य।

तच्च मासं अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे, आयावण-भूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य।

चउत्थ मासं दसम दसमेण अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य।

पंचमं मासं वारसमं बारसमेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य।

छट्ठ मास चउदस चउदसमेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दियाठाणुक्कडुए सुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य।

सत्तम मासं सोलसमं सोलमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणे अवाउडेण य।

अट्ठम मासं अट्ठारसमं अट्ठारसमेणं अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण दियाट्ठाणुक्कडुए सुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य।

णवमं मास वीसइमं वीसइमेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए, रत्ति वीरासणेणं

से ण भते ! ताम्रो देवलोगाम्रो म्राउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण कहिं गच्छहिइ कहि उववज्जिजहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिभिस्सइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सइ ।१८।

एवं खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण म्रणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स म्रज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

एव सेसाण वि म्रट्ठण्हं भाणियव्वं । नवर छ धारिणि-सुया वेहल्ल-वेहासा चेल्लणाए । म्रभयस्स णाणत्तं, रायगिहे णगरे, सेणिए राया, णंदादेवी माया, सेस तहेव । म्राइल्लाणं पचण्हं सोलस वासाइ सामण्णपरियाम्रो, तिण्हं बारस वासाइं, दोण्ह पच वासाइं । म्राइल्लाण पचण्ह म्राणुपुव्वीए उववायो विजए विजयते जयते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । दीहदते सव्व-ट्ठसिद्धे, म्रणुक्कमेण सेसा । म्रभम्रो विजये । सेसं जहा पढमे ।

एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण म्रणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स म्रयमट्ठे पण्णत्ते ।

॥ इति पढम वग्गस्स दस अज्झयणा समत्ता ॥

द्वितीय वर्ग

जइ ण भंते ! समणेण जाव संपत्तेण म्रणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स म्रयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भते ! वग्गस्स म्रणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ।१।

एव खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स वग्गस्स तेरस म्रज्झयणा पण्णत्ता । तं जहा–

दीहसेणे महासेणे, लट्ठदंते य गुढदंते य ।
सुद्धदंते य हल्ले, दुमे दुमसेणे महादुमसेणे य आहिए ।१।
सीहे य सीहसेणे य, महासीहसेणे य आहिए ।
पुन्नसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे ।२।

जइ ण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

एवं खलु जम्बू ! तेण कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्म, बालत्तणं कलाओ, णवर दीहसेणे कुमारे सव्वे वत्तव्वया, जहा–जालिस्स जाव अंतं काहिति।१।

एवं तेरसवि, रायगिहे नयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया तेरसण्हवि सोलसवासाए परियाय मासियाए संलेहणाए आणुपुव्वीए उववाओ विजए दोन्नि, वेजयंते दोन्नि, जयंते दोन्नि, अपराजिते दोन्नि, सेसा महादुमसेणमाइए पंच सव्वट्ठसिद्धे ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, मासियाए संलेहणाए दोसुवि वग्गेसु ।

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

तृतीय वर्ग

जइ ण भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-

अवाउडेण य ।

दसम मासं बावीसाए बावीसईमेण अनिक्खित्तेण दियट्ठाणूक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणेणं रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

एकारसमं मास चउवीसाए चउवीसईमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयामणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।

बारसम मास छव्वीसाए छव्वीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

तेरसमं मासं अट्ठावीसाए अट्ठावीसईमेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

चउदसमं मास तीसइ तीसईमेण अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।

पन्नरसम मासं बत्तीसइमं बत्तीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।

सोलमं मासं चोत्तीसइमं चोत्तीसईमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।११।

तएणं से जाली अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं

आहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं समकाएण फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तिरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहित्ता ।१२।

जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता बहुहिं चउत्थ छट्ठ अट्ठम दसम दुवालसेहिं मासेहिं अद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवो कम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।१३।

तएणं से जाली अणगारे तेण उरालेणं विउलेण पयत्तेण पग्गहिएणं एव जा चेव जहा खदगस्स वत्तव्वया सा चेव चिंतणा आपुच्छणा थेरेहिं सद्धि विउल तहेव दुरूहइ, णवरं सोलस्स वासाइ साम्मण्ण परियाग पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उड्ढ चदिमाई सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नव य गेवेज्जे विमाणपत्थडे उड्ढं दूर वीईवइत्ता विजयविमाणे देवत्ताए उवण्णे ।१४।

तएणं ते थेरा भगवंतो जालिं अणगारं कालगय जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेंति । पत्तचीवराइं गिण्हंति तहेव उत्तरंति जाव इमे से आयारभडए ।१५।

भंते त्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जाली नामं अणगारे पगइभद्दए, से ण जाली अणगारे कालगए कहिं गए कहिं उववण्णे ? एव खलु गोयमा ! मम अंतेवासी तहेव जहा खदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिमाई जाव विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।१६।

जालिस्स ण भते ! देवस्स केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।१७।

से ण भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिस्सइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सइ।१८।

एवं खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

एव सेसाण वि अट्ठण्ह भाणियव्वं। नवरं छ धारिणि-सुया वेहल्ल-वेहासा चेल्लणाए। अभयस्स णाणत्तं, रायगिहे णगरे, सेणिए राया, णंदादेवी माया, सेसं तहेव। आइल्लाण पंचण्हं सोलस वासाइं सामण्णपरियाओ तिण्हं बारस वासाइं, दोण्हं पंच वासाइं। आइल्लाण पंचण्ह आणुपुव्वीए उववायो विजए विजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे। दीहदंते सव्व-ट्ठसिद्धे, अणुक्कमेण सेसा। अभओ विजये। सेसं जहा पढमे।

एव खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

॥ इति पढम वग्गस्स दस अज्झयणा समत्ता ॥

द्वितीय वर्ग

जइ ण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते।१।

एव खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा-

दीहसेणे महासेणे, लट्ठदते य गुढदते य ।
सुद्धदते य हल्ले, दुमे दुमसेणे महादुमसेणे य आहिए ।१।
सीहे य सीहसेणे य, महासीहसेणे य आहिए ।
पुन्नसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे ।२।

जइ ण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

एवं खलु जम्बू ! तेण कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्म, बालत्तणं कलाओ, णवर दीह-सेणे कुमारे सव्वे वत्तव्वया,जहा–जालिस्स जाव अतं काहिति ।१।

एव तेरसवि. रायगिहे नयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया तेरसण्हवि सोलसवासाए परियाय मासियाए सलेहणाए आणुपुव्वीए उववाओ विजए दोन्नि, वेजयंते दोन्नि, जयंते दोन्नि, अपराजिते दोन्नि, सेसा महादुमसेणमाइए पंच सव्वट्ठसिद्धे ।

एव खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरो-ववाइयदसाण दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, मासियाए सलेहणाए दोसुवि वग्गेसु ।

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

तृतीय वर्ग

जइ ण भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-

दसाण दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।१।

एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा—

धण्णे य सुनक्खत्ते य, इसिदासे य आहिए ।
पेल्लए रामपुत्ते य, चदिमा, पिट्ठिमाइ य ।१।
पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पोट्टिल्ले इ य ।
वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया ।२।

जइ णं भंते ! समणेण जाव संपत्तेण अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?।३।

एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण काकदी नाम नयरी होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धा, सहस्संबवणे उज्जाणे सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे जाव पासाइए, जियसत्तू राया ।४।

तत्थ णं काकदीए नयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया ।५।

तीसे ण भद्दए सत्थवाहीए पुत्ते धन्ने नामं दारए होत्था अहीण जाव सुरूवे, पचधाई-परिग्गहिए, तजहा—खीरधाइए जहा महब्बलो जाव बावत्तरिं कलाओ अहिए जाव अल भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।६।

तए ण सा भद्दा सत्थवाही धण्णदारयं उम्मुक्कबालभाव जाव भोगसमत्थ जाणित्ता, वत्तीस पासायवडिसए कारेइ

अब्भुग्गयमूसिए जाव तेसिं मज्झे अणेग-भवण-खंभ-सय-सन्नि-विट्ठं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसे ण पाणिगिण्हा-वेइ गिण्हावित्ता बत्तीसाओ दाओ जाव उप्पि पासायवडिंसए फुट्टतेहिं मुइगमत्थएहिं जाव विहरइ ।७।

तेण कालेणं तेणं समएण समणे भगव महावीरे समो-सढे, परिसा निग्गया, जहा कोणिओ तहा जियसत्तू णिग्गओ ।८।

तए णं तस्स धण्णस्स त महया जणसद्द जहा जमाली तहा णिग्गओ णवरं पायचारेण जाव जं णवर अम्मय भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अंतिए जाव पव्वयामि, जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया, वुत्त-पडिवुत्तया, जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाइया, जहा थाव-च्चापुत्ते तहा जियमत्तू आपुच्छइ, छत्तचामराओ, सयमेव जिय-सत्तू निक्खमण करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए, ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ।९।

तएण से धण्णे अणगारे, ज चेव दिवसं मुडे भवित्ता जाव पव्वइए त चेव दिवसं समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–एव खलु इच्छामि णं भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठ-छट्ठेणं अणि-क्खित्तेणं आयबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरित्तए, छट्ठस्सवि य ण पारणगसि कप्पइ मे आयविलं पडिग्गहित्तए, णो चेव ण अणायबिल, तंपि य संसट्ठेण णो चेव ण असंसट्ठेण, त पि य ण उज्झियधम्मय णो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं, तपि य णं जं अन्ने बहवे समणमाहण-अतिहि-किवण-

वणिमगा णावकखति। अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह।१०।

तएण से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णायसमाणे हट्ठ-तुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठ-छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ।११।

तएण से धण्णे अणगारे पढम छट्ठखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ जाव जेणेव काकदी णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता काकंदीए णयरीए उच्चनीय जाव अडमाणे आयबिलं जाव नावकखइ।१२।

तए ण से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जताए पययथाए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्त लभइ तो पाणं ण लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ।१३।

तए ण धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंतजोगी जयणघडण-जोग-चरित्ते अहापज्जत्तं समुदाण पडिगाहेइ पडिगाहित्ता काकदीओ णयरीओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता जहा गोयमे तहा पडिदसेइ।१४।

तए णं से धण्णे अणगारे, समणेण भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेण आहार आहारेइ आहारित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।१५।

तए णं समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ काकंदीओ णयरीओ सहस्सम्बवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ पडिणि-

क्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ।१६।

तए ण से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।१७।

तए णं से धण्णे अणगारे तेण ओरालेणं जहा खदओजाव सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलते उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।

धन्नस्स ण अणगारस्स पयाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए सुक्खछल्लीइ वा, कट्ठपाउयाइ वा, जरग्गओवाहणाइ वा, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया सुक्का भुक्खा लुक्खा णिम्मसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मससोणियत्ताए ।१९। ०

धन्नस्स ण अणगारस्स पायगुलियाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से जहानामए—कलसंगलियाइ वा मुग्गसंगलियाइ वा माससगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स पायंगुलियाओ सुक्काओ जाव णो मंससोणियत्ताए ।२०।

धन्नस्स ण अणगारस्स जघाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—काकजवाइ वा, ककजघाइ वा, ढेणियालियाजंघाइ वा, एव जाव सोणियत्ताए ।२१।

धन्नस्स ण जाणूण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-कालिपोरेइ वा, मयूरपोरेइ वा, ढेणियालियापोरेइ वा, एव जाव सोणियत्ताए ।२२।

धन्नस्स ण उरुणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—सामकरिल्लेइ वा, वोरी करिल्लेइ वा, सल्लइय-करिल्लेइ वा, मामलिकरिल्लेइ वा, तरुणिया छिन्ना उण्हे दिण्णा जाव चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स उरुणं जाव सोणियत्ताए ।२३।

धन्नस्स ण कडिपत्तस्स इमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—उट्टपाएइ वा, जरग्गपाएइ वा, महिसपाएइ वा, जाव सोणियत्ताए ।२४।

धन्नस्स ण उदरभायणस्स अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—सुक्कदिएइ वा, भज्जणय-कभल्लेइ वा, कट्ठकोलवएइ वा, एवामेव उदरमुक्क ।२५।

धन्नस्स ण पामुलियकडयाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—थासयावलीइ वा, पाणावलीइ वा, मुडा-वलीइ वा, एवामेव पामुलियाकडयाण जाव सोणियत्ताए ।२६।

धन्नस्स पिट्ठकरंडगाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—कन्नावल्लीइ वा, गोलावलीइ वा, वट्टावलीइ वा एवामेव पिट्ठकरंडगाण जाव सोणियत्ताए ।२७।

धन्नस्स उरकडयस्स अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—चित्तकट्टरेइ वा, वियणपत्तेइ वा, तालियंटपत्तेइ वा, एवामेव उरकडयस्स जाव सोणियत्ताए ।२८।

धन्नस्स वाहाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए—समिसगलियाइ वा वाहायासंगलियाइ वा, अगत्थिव-संगलियाइ वा, एवामेव वाहाण जाव सोणियत्ताए ।२९।

धन्नस्स हत्थाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से

जहानामए-सुक्कछगणियाइ वा, वडपत्तेइ वा एवामेव हत्थाण जाव सोणियत्ताए ।३०।

धन्नस्स हत्थगुलियाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-कलायसंगलियाइ वा, मुग्गसगलियाइ वा मास-संगलियाइ वा, तरुणिया छिन्ना आयवे दिण्णा सुक्का समाणी एवामेव हत्थगुलियाण जाव सोणियत्ताए ।३१।

धन्नस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-करगगीवाइ वा, कुडियागीवाइ वा, (कोत्थवणाइ वा) उच्चट्ठवणएइ वा एवामेव गीवाए जाव सोणियत्ताए ।३२।

धन्नस्स ण हणुयाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-लाउयफलेइ वा, हकुवफलेइ वा अवगट्ठियाइ वा एवामेव हणुयाए जाव सोणियत्ताए ।३३।

धन्नस्स ण ओट्ठाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-सुक्कजलोयाइ वा, सिलेसगुलियाइ वा, अलत्तग-गुलियाइ वा, (अबाडगपेसीयाइ वा) एवामेव ओट्ठाण जाव सोणियत्ताए ।३४।

धन्नस्स णं जिब्भाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा (उबरपत्तेइ वा) सागपत्तेइ वा एवामेव जिब्भाए जाव सोणियत्ताए ।३५।

धन्नस्स नासाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-अंबगपेसियाइ वा, अबाडगपेसियाइ वा, माउलिंग-पेसियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवामेव नासाए जाव सोणियत्ताए ।

धन्नस्स अच्छीण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से

जहानामए–वीणाछिड्डेइ वा बद्धीसगछिड्डेइ वा,पाभाइयतारिगाइ वा, एवामेव अच्छीण जाव सोणियत्ताए ।३७।

धन्नस्स ण अणगारस्स कन्नाण अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था,से जहानामए–मूलाछल्लियाइ वा, वालुकच्छल्लियाइ वा, कारेल्लयच्छल्लियाइ वा, एवामेव कन्नाण जाव सोणियत्ताए ।

धन्नस्स ण अणगारस्स सीसस्स अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए–तरुणगलाउएइ वा, तरुणगएलालुयइ वा, सिण्हालएइ वा तरुणए जाव चिट्ठइ एवामेव धन्नस्स अणगारस्स सीस सुक्कं-भुक्क-लुक्खं-निम्मंसं अट्ठिचम्मछिरत्ताए पन्नायइ नो चेवण मंससोणियत्ताए ।३९।

एव सव्वत्थ नवर उदरभायण कन्नजीहाउट्ठा एएसि अट्ठी न भण्णइ, चम्मछिरत्ताए पन्नायइ त्ति भण्णइ ।

धन्ने ण अणगारे सुक्केण भुक्खेणं पायजंघोरुणा विगयतडिकरालेण कडिकडाहेणं पिट्ठमवस्सिएण उदरभायणेण जोइज्जमाणेहि पंसुलियकडएहि अक्खमुत्तमालाइ वा गणिज्जमालाइ वा गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं गंगातरंगभूएणं, उरकडगदेसभाएणं सुक्क-सप्पसमाणाहि बाहाहि सिढिलकडाली विव चलतेहिं य अग्गहत्थेहिं कपणवाइओ विव वेवमाणीए सीसघडीए पव्वायवदण-कमले उब्भडघडामुहे उव्वुड्डणयणकोसे ।४१।

जीव जीवेण गच्छइ, जीव जीवेणं चिट्ठइ भासं भासिस्सामित्ति गिलायइ से जहानामए–इंगालसगडियाइ वा, जहा खदओ तहा हुयासणे इव भास-रासिपलिच्छन्ने, तवेण तेएणं तवतेयसिरीए उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।४२।

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा णिग्गया सेणिश्रो णिग्गश्रो, धम्मकहा, परिसा पडिगया।४३।

तए ण से सेणिए राया समणस्स भगवश्रो महावीरस्स श्रंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म समण भगव महावीर वंदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–इमेसि णं भते! इदभूइपामोक्खाण चोद्दसण्ह समणसाहस्सीणं कयरे श्रणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव?।४४।

एव खलु सेणिया! इमेसिं इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्ह समणसाहस्सीणं धन्ने श्रणगारे महादुक्करकारए चेव, महाणिज्जरतराए चेव।४५।

से केणटठेण भते! एव वुच्चइ इमेसिं चउद्दसण्हं समणसाहस्सीण धन्ने श्रणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव।४६।

एव खलु सेणिया! तेण कालेण तेण समएण काकदी नाम नयरी होत्था, जाव उप्पिपासायवडिसए विहरइ। तए णं अहं श्रण्णया कयाइं पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव काकदी नयरी जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तणेव उवागए उवागइत्ता श्रहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हित्ता सजमेण तवसा जाव विहरामि। परिसा णिग्गया, तं चेव जाव पव्वइए जाव बिलमिव जाव आहारेइ। धन्नस्स ण श्रणगारस्स पायाणं सरीरवन्नश्रो सव्वो जाव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ। से तेणट्ठेण सेणिया! एवं वुच्चइ इमेसिं चोद्दसण्हं समणसाह-

स्सीण धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जरतराए चेव।

तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ करित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव धन्ने अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धन्नं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तए णं तस्स धन्नस्स अणगारस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि धम्म जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, एवं खलु अहं इमेणं ओरालेण जहा खदओ तहेव चिंता आपुच्छणं, थेरेहिं सद्धिं विउलं दुरुहइ। मासियाए संलेहणाए नवमासा परियाओ जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम जाव णव य गेविज्ज विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं विइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥४९॥

थेरा तहेव ओयरंति जाव इमे से आयारभंडए ॥५०॥

भंते त्ति, भगवं गोयमे तहेव पुच्छइ जहा खंदयस्स

भगवं वागरेइ जाव सवट्ठसिद्धे विमाणे उववन्ने ॥५१॥

धन्नस्सण भंते ! देवस्स केवइय कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता ॥५२॥

सेण भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिई क्खएण कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्व दुक्खाणमंत करेहिइ ॥५३॥

एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥५४॥

॥ पढम अज्झयण सम्मत्त ॥

जइणं भंते ! उक्खेवओ एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेण समएण काकंदी नयरी होत्था भद्दा सत्थवाही परिवसइ ।१।

तीसेण भद्दाए सत्थवाही पुत्ते सुनक्खत्ते नामं दारए होत्था, अहिण जाव सुरूवे, पंचधाइ-परिक्खित्ते जहा धन्ने तहेव बत्तीस्सओ दाओ जाव उप्पि पासायवडिसए विहरइ ॥२॥

तेण कालेण तेणं समएण सामी समोसड्ढे जहा धन्ने तहा सुणक्खत्तेवि णिक्खत्ते जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्त बभयारी ॥३॥

तएण से सुनक्खत्ते अणगारे ज चेव दिवस समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुडे जाव पव्वइए त चेव दिवसं अभिग्गह तहेव विलमिव-पणगभूएणं आहारं आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ, एक्कारस

अंगाई अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तएण से सुनक्खत्ते अणगारे तेण उरालेण जहा खदओ।

तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया सामीसमोसढे, परिसा णिग्गया, राया निग्गओ धम्मकहा राया पडिग्गओ परिसा पडिगया।७।

तएण तस्स सुनक्खत्तस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता वरत्तकाल-समयंसि धम्म जागरिय जहा खदयस्स बहुवासाओ परियाओ।८।

गोयम पुच्छा जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिइ।९।

। इति वीय अज्झयण सम्मत्त।

एव खलु जम्वू ! सुनक्खत्तगमेण सेसावि अट्ठ भाणि-यव्वा, णवर आणुपुव्वीए-दोन्नि रायगिहे, दोन्नि साएए, दोन्नि वाणियग्गामे, नवमो हत्थिणापुरे, दसमो रायगिहे।१।

नवण्ह भद्दाओ जणणीओ, नवण्हवि बत्तीसओ दाओ नवण्ह निक्खमण थावच्चापुत्तस्स सरिस, वेहल्लस्स पिया करेइ, नवमास धण्णे वेहल्ल छमासापरियाओ, सेसाण वहुवासाइं, मासं संलेहणा सव्वट्ठसिद्धे महाविदेहवासे सिज्झिहिति। एव दस अज्झयणाणि।

एवं खलु जम्वू ! समणेण भगवया महावीरेण आइग-रेण तित्थयरेण सयंसवुद्धेण लोगनाहेण लोगप्पदीवेण लोग-पज्जोयगरेण अभयदएण सरणदएण चक्खुदएण मग्गदएण धम्मदएणं धम्मदेसएण धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडि-हयवरनाणदसणधरेण जिणेण जावएणं वुद्धेण वोहएण मुक्केणं

मोयगेणं तिन्नेण तारएण सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबा-हमपुणरावत्तियं सिद्धिगइनामधेयं ठाण संपत्तेण अणुत्तरोववा-इयदमाण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। अणुत्तरोववाइय-दसाओ सम्मत्ताओ। अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयखधो तिण्णि वग्गा तिसु दिवसेसु उद्दिसिज्जति, पढमे वग्गे दस उद्देसगा, बीए वग्गे तेरस उद्देसगा, तइये वग्गे दस उद्देसगा, सेस जहा धम्मकहा नायव्वा ॥इति॥

॥ चउसरण पइण्णा ॥

१ सावज्जजोगविरई, २ उक्कित्तण, ३ गुणवओ य पडिवत्ती।
४ खलिअस्स निंदणा, ५ वणतिगिच्छ, ६ गुणधारणा चेव।१।
चारित्तस्स विसोही, कीरइ सामाइएण किल इहय।
सावज्जेअरजोगाण, वज्जणासेवणत्तणओ।२।
दंसणायारविसोही, चउवीसत्थएण किच्चइ य।
अच्चब्भुअगुणकित्तणरूवेण जिणवरिंदाणं।३।
नाणाईआ उ गुणा, तस्सपन्नपडिवत्तिकरणाओ।
वंदणएण विहिणा, कीरइ सोही उ तेसि तु।४।
खलिअस्स य तेसि पुणो, विहिणा ज निंदणाइ पडिक्कमणं।
तेण पडिक्कमणेणं, तेसिपि अ कीरए सोही।५।
चरणाईयारा ण जहक्कम्मं वणतिगिच्छरूवेण।
पडिक्कमणासुद्धाण, सोही तह काउसग्गेण।६।
गुणधारणरूवेण, पच्चक्खाणेण तवइआरस्स।
विरिआयारस्स पुणो, सव्वेहि वि कीरए सोही।७।

गय वसह सीह अभिसेअ, दाम ससि दिणयरं झय कुंभ ।
पउमसर सागर, विमाण-भवण रयणुच्च य सिहिं च ।८।
अमरिंदनरिंदमुणिंदवंदिअ, वंदिउं महावीरं
कुसलाणुबंधि बंधुरमज्झयणं कित्तइस्सामि ।६।
चउसरणगमण दुक्कडगरिहा, सुकडाणुमोअणा चेव ।
एस गणो अणवरयं, कायव्वो कुसलहेउत्ति ।१०।
अरहंत सिद्ध साहू, केवलिकहिओ मुहावहो धम्मो ।
एए चउरो चउगइहरणा, सरण लहइ धन्नो ।११।
अह सो जिणभत्ति-भरुच्छरंत-रोमच-कुचुअ-करालो ।
पहरिसवण-उम्मीस, सीसमी कयंजली भणइ ।१२।
रागद्दोसारीण हंता, कम्मट्ठगाइ अरिहता ।
विसय-कसायारीण, अरिहता हुतु मे सरण ।१३।
रायसिरिमुवक्कमित्ता, तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ।
केवल सिरिमरिहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।१४।
थुइ--वंदणमरिहंता, अमरिंद-नरिंदपूअमरिहता ।
सासयमुहमरहंता, अरिहता हुंतु मे सरण ।१५।
परमणगयं मुणता, जोइंदमहिंदझाणमरहंता ।
धम्मकह अरहंता, अरिहता हुतु मे सरणं ।१६।
सव्व जिआणमहिंसं, अरहता सच्चवयणमरहता ।
बंभव्वयमरहता, अरिहता हुतु मे सरण ।१७।
ओसरणमवसरित्ता, चउतीस अइसए निसेवित्ता ।
धम्मकहं च कहता, अरिहता हुतु मे सरण ।१८।
एगाइ गिराऽणेगे, सदेहे देहिण समच्छित्ता ।

तिहुयणमणुसासता, अरिहता हुतु मे सरण ।१९।
वयणामएण भुवण, निव्वाविता गुणेसु ठावता ।
जिअलोअमुद्धरता, अरिहता हुतु मे सरण ।२०।
अच्चब्भुयगुणवते, निअजससससहरपसाहि अदिअते ।
निअयमणाई अणते, पडिवन्नो सरणमरिहते ।२१।
उज्झिअजरमरणाणं, समत्तदुक्खत्तसत्त-सरणाण ।
तिहुअणजणसुहयाणं, अरिहताण नमो ताणं ।२२।
अरिहंत-सरण-मल-सुद्धिलद्ध सुविसुद्ध-सिद्धवहुमाणो ।
पणय-सिर-रइय-कर-कमल-सेहरो सहरिसं भणइ ।२३।
कम्मट्ठक्खयसिद्धा, साहाविअनाणदंसण समिद्धा ।
सव्वट्ठलद्धिसिद्धा, ते सिद्धा हुंतु मे सरण ।२४।
तिअलोअमत्थयत्था, परमपयत्था अचितसामत्था ।
मगलसिद्धपयत्था, सिद्धा सरण सुहपसत्था ।२५।
मूलुक्खयपडिवक्खा, अमूढलक्खा सजोगिपच्चक्खा ।
साहाविअत्त सुक्खा, सिद्धा सरण परममुक्खा ।२६।
पडिपिल्लिअपडिणीया, समग्गझाणग्गिदड्ढभवबीआ ।
जोईसरसरणीया, सिद्धा सरणं सुमरणीया ।२७।
पावियपरमाणंदा, गुणनीसदा विभिन्न (विइण्ण) भवकदा ।
लहुईकय-रविचदा, सिद्धा सरणं खविअदंदा ।२८।
उवलद्धपरमबभा, दुल्लहलंभा विमुक्कसरभा ।
भुवणघरधरणखभा, सिद्धा सरण निरारंभा ।२९।
सिद्धसरणेण नवबभ, हेउसाहुगुणजणिअ-वहुमाणो ।
मेइणिमिलत-सुपसत्थपत्थओ तत्तियमं भणइ ।३०।

जिअलोअबंधुणो कुगइसिंधुणोपारगा महाभागा ।
नाणाइएहिं सिवसुक्खसाहगा साहूणो सरण ।३१।
केवलिणो परमोही, विउलमई सुअहरा जिणमयंमि ।
आयरिय उवज्झाया, ते सव्वे साहूणो सरण ।३२।
चउदस-दस-नवपुव्वी, दुवालसिक्कारसगिणो जे य ।
जिणकप्पाहालदिअ, परिहार-विसुद्धि-साहू य ।३३।
खीरासवमहु-आसव ,संभिन्नस्सोअकुट्ठबुद्धी य ।
चारणवेउव्विपयाणुसारिणा साहुणो सरण ।३४।
उज्झियवइरविरोहा, निच्चमदोहा पसतमुहसोहा ।
अभिमयगुणसदोहा, हयमोहा साहुणो सरण ।३५।
खडिअसिणेहदामा, अकामधामा निकामसुहकामा ।
सुपुरिसमणाभिरामा, आयारामा मुणी सरण ।३६।
मिल्हिअ विसयकसाया, उज्झियघरघरणिसगसुहसाया ।
अकलिअहरिसविसाया, साहू सरण गयपमाया ।३७।
हिंसाइदोससुन्ना, कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना (प्पुण्णा) ।
अजरामरपहखुन्ना, साहू सरणं सुकयपुन्ना ।३८।
कामविडवणचुक्का, कलिमलमुक्का विमुक्कचोरिक्का ।
पावरय-सुरयरिक्का, साहू गुणरयणचच्चिक्का ।३९।
साहुत्तसुट्ठिया जं, आयरिआई तओ य ते साहू ।
साहूभणिएण गहिया, तम्हा ते साहुणो सरण ।४०।
पडिवन्नसाहुसरणो, सरण काउ पुणोवि जिणधम्मं ।
पहरिसरोमंचपवंचकुचुअचिअतणु भणइ ।४१।
पवरसुकएहिं पत्त, पत्तेहिवि नवरि केहिवि न पत्त ।

तं केवलि पन्नत्त, धम्म सरण पवन्नोऽहं ।४२।
पत्तेण अपत्तेण य पत्ताणि अ, जेण नरसुरसुहाइं ।
मुक्खसुह पुण पत्तेण, नवरि धम्मो स मे सरण ।४३।
निद्दलिअकलुसकम्मो, कयसुहजम्मो खलीकय-अहम्मो ।
पमुहपरिणामरम्मो, सरण मे होउ जिणधम्मो ।४४।
कालत्तएवि न मय, जम्मण-जरमरणवाहिसय-समयं ।
अमय व बहुमयं, जिणमयं च सरणं पवन्नोऽहं ।४५।
पसमिअकामपमोह, दिट्ठादिट्ठेसु नकलिअविरोह ।
सिवसुहफलयममोह, धम्मं सरण पवन्नोऽह ।४६।
नरय-गइ-गमणरोह, गुणसदोह पवाइनिक्खोह ।
निहणिअवम्महजोह, धम्म सरण पवन्नोऽहं ।४७।
भासुर-सुवन्न-सुदर-रयणालंकार-गारव-महग्घं ।
निहिमिव दोगच्चहर, धम्म जिणदेसिअ वदे ।४८।
चउसरणगमण सचिअ, सुचरिअरोमच अचियसरीरो ।
कयदुक्कडगरिहा, असुहकम्मक्खयकखिरो भणई ।४९।
इहभविअमन्नभविअ, मिच्छत्तपवत्तण जमहिगरण ।
जिणपवयणपडिकुट्ठ, दुट्ठ गरिहामि तं पावं ।५०।
मिच्छत्ततमंधेण, अरिहताइसु अवन्नवयण जं ।
अन्नाणेण विरइयं, इण्हि गरिहामि त पावं ।५१।
सुअधम्म-सघसाहुसु, पाव पडिणीअयाइ जं रइअं ।
अन्नेसु अ पावेसु, इण्हि गरिहामि त पाव ।५२।
अन्नेसु अ जीवेसु, मित्ती-करुणाइ-गोयरेसु कयं ।
परिआवणाइ दुक्ख, इण्हि गरिहामि तं पावं ।५३।

जं मणवयकाएहिं, कयकारिअ-अणुमईहिं आयरियं ।
धम्मविरुद्धमसुद्धं, सव्व गरिहामि तं पावं ।५४।
अह सो दुक्कडगरिहादलिउक्कडदुक्कडो फुड भणइ ।
सुकडाणुरायसमुइन्नपुन्नपुलयं कुरकरालो ।५५।
अरिहत्तं अरिहतेसु, जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु ।
आयारं आयरिए, उज्झायत्तं उवज्झाए ।५६।
साहूण साहुचरिअ च, देसविरइ च सावयजणाण ।
अणुमन्ने सव्वेसिं, सम्मत्त समदिट्ठीण ।५७।
अहवा सव्व चिअ, वीयरायवयणाणुसारि ज सुकयं ।
कालत्तएवि तिविहं, अणुमोएमो तयं सव्वं ।५८।
सुहपरिणामो निच्चं, चउसरणगमाइआयरे जीवो ।
कुसलपयडीउ बधई, बद्धाउ सुहाणु बंधाउ ।५९।
मदणुभावा बद्धा, तिव्वणुभावाउ कुणइ ता चेव ।
असुहाउ निरणुबधाउ, कुणइ तिव्वाउ मंदाउ ।६०।
ता एयं कायव्वं, वुहेहि निच्चपि संकिलेसम्मि ।
होइ तिकालं सम्मं, असंकिलेसम्मि सुकयफलं ।६१।
चउरंगो जिणधम्मो, न कओ चउरंगसरणमवि न कयं ।
चउरंगभवुच्छेओ, न कओ हा हारिओ जम्मो ।६२।
इअजीवपमायमहारिवीरभद्दंतमेअमजझयणं ।
झाएसु तिसझमवंझ-कारण निव्वुइसुहाणं ।६३।

॥ चउसरण समत्त ॥

वैराग्य कुलकम्

जम्मजरामरणजले, नाणाविहिवाहिजलयराइन्ने ।
भवसायरे असारे, दुलहो खलु माणुसो जम्मो ।१।
तम्मिवि आयरियखित्तं, जाइ कुलरूवसंपयाउय ।
चिंतामणिसारित्थो, दुलहो धम्मो य जिणभणिओ ।२।
भवकोडिसएहिं परिहिंडिऊण सुविसुद्धपुन्नजोएण ।
इत्तियमित्ता सपइ सामग्गी पाविया जीव ! ।३।
रूवमसासयमेयं विज्जुलयाचचल जए जीय ।
सझाणुरागसरिस, खणरमणीय च तारुण्णम् ।।
गयकन्नचचलाओ, लच्छीओ तियसचाउसारिच्छं ।
विसयसुह जीवाण, बुज्झसु रे जीव ! मा मुज्झ ।५।
किंपाकफलसमाणा, विसयहालाहलोवमा पावा ।
मुहमुहुरत्तणसारा, परिणामे दारुणसहावा ।६।
भुत्ता दिव्वभोगा, सुरेसु असुरेसु तहय मणुएसु ।
न य जीव ! तुज्झ तित्ती जलणस्सव कट्ठनियरेहिं ।७।
जह सझाएसउणाण सगमो जह पहे य पहियाण ।
सयणाण सजोगो, तहेव खणभगुरो जीव ! ।८।
पियमाइभाइभइणी, भज्जापुत्तत्तणेवि सव्वेवि ।
सत्ता अणतवार, जाया सव्वेसिं जीवाणं ।९।
ता तेसिं पडिबध, उवरिं मा त करेसु रे जीव !
पडिबध कुणमाणो, इहयं चिय दुक्खिओ भमिसि ।१०।
जाया तरुणी आभरणवज्जिया, पाढिओ न मे तणओ ।

धूया नो परिणीया, भइणी नो भत्तुणो गमिया ।११।
थोवो विहवो संपइ, वट्टई य रिणं बहुव्वओ गेहे ।
एव चितासतावदुमिओ दु खमणुहवसि ।१२।
काउणवि पावाइ, जो अत्थो सचिओ तए जीव !
सो तेसिं सयणाण, सव्वेसिं होइ उवओगी ।१३।
जं पुण असुहं कम्मं, इक्कुच्चिय जीव त समणुहवसि ।
न य ते सयणा सरण, कुगइए गच्छमाणस्स ।१४।
कोहेण माणेण, मायालोभेहिं रागदोसेहिं ।
भवरंगओ सुइरं, नडुव्व नच्चाविओ तसि ।१५।
पचेहि इदिएहिं, मणवयकाएहि दुट्ठजोगेहिं ।
बहुसो दारुणरूवं, दुक्ख पत्तं तए जीव !।१६।
ता एअन्नाऊण, संसारसायरं तुम जीव !।
सयलसुहकारणम्मि, जिणधम्मे आयरं कुणसु ।१७।
जाव न इंदियहाणी, जाव न जररक्खसी परिप्फुरइ ।
जाव न रोगवियारो, जाव न मच्चु समुल्लियइ ।१८।
जह गेहम्मि पलित्ते, कूव खणिय न सक्कई कोवि ।
तह संपत्ते मरणे, धम्मो कह कीरए जीव !।१९।
पत्तम्मि मरणसमए, डज्झसि सोअग्गिणा तुमं जीव !
वग्गुरपडिओव मओ, संवट्टमिउ जहवि पक्खी ।२०।
ता जीव ! संपयं चिय, जिणधम्मे उज्जमं तुमं कुणसु ।
मा चितामणि सम्मं, मणुयत्तं निप्फल णेसु ।२१।
ता मा कुणसु कसाए, इदियवसगोय मा तुमं हांसु ।
देविंदसाहुमहियं, सिवसुक्खं जेण पावहिसि ।२२। ।।इति।।

सुभाषित

पंच-महव्वय-सुव्वयमूल, समण-मणाइल साहू सुचिण्ण ।
वेरविरामणपज्जवसाण, सव्वसमुद्दमहोदही तित्थं ।१।
तित्थकरेहिं सुदेसियमग्ग, नरग-तिरिय विवज्जियमग्ग ।
सव्व-पवित्त सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण अवगुयदार ।२।
देव नरिंद नमसिय-पूइय, सव्वजगुत्तम-मंगल-मग्गं ।
दुद्धरिसं गुण-नायगमेग, मोक्खपहस्स-वडिसगभूय ।३।
धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइम धम्म-सारही ।
धम्मारामे रया-दते, बभचेर-समाहिए ।४।
देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस्स-किण्णरा ।
वंभयारिं नमंसति, दुक्कर जे करति तं ।५।
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झति चाणेण, सिज्झिस्सति तहावरे ।६।
अरहत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु ।
वच्छल्लया य तेसि, अभिक्खनाणोवओगे य ।७।
दसण विणय आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारे ।
खणलव तव च्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ।८।
अपुव्वनाणग्गहणे, सुयभत्ती पव्वयणपभावणया ।
एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो ।६।
जिणवयणे-अणुरत्ता, जिणवयण जे करंति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा, ते हुति परित्तससारि ।१०।
एव खु नाणीणो सार, ज न हिंसइ किंचण ।

अहिंसा-समयं चेव, एयावन्त वियाणिया ।११।
जाइ च वुड्ढि च इहेज्ज-पासं, भूतेहिं जाणे पडिलेह सायं ।
तम्हातिविज्जो-परमति णच्चा, सम्मत्तदसी न करेइ पावं ।१२।
उम्मुच्च पास इह मच्चिएहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी ।
कामेसु गिद्धा णिचय करति, संसिचमाणा पुणरेति गब्भं ।१३।
सवणे नाणे य विन्नाणे, पच्चक्खाणे य सजमे ।
अण्णहए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धि ।१४।
एगोहं नत्थि मे कोइ, नाह मन्नस्स कस्सई ।
एवं अदीणमणस्सा, अप्पाणमणुसासइ ।१५।
एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वसजोग लक्खणा ।१६।
जीवियं नाभिगच्छेज्जा, मरणं नो वि पत्थए ।
दुहओ वि न इच्छेज्जा, जीवियं मरणं तहा ।१७।
सारं दंसण नाण, सार तव नियम संजम सीलं ।
सारं जिणवर धम्म, सार सलेहणा पडियमरणं ।१८।
कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिठवणी ।
ससारजलही तारणी, एगत होइ जीवदया ।१९।
आरभे नत्थि दया, महिलासंगेण नासइ बम्भ ।
सकाए नासइ सम्मत्तं, पव्वज्जाअत्थग्गहणेण ।२०।
मज्जविसयकसाया, निंदाविकहायपचमी भणिया ।
एए पचप्पमाया, जीवा पाडति ससारे ।२१।
लब्भंति विउलाभोए, लब्भति सुरसपया ।
लब्भति पुत्तमित्तं च, एगो धम्मो न लब्भइ ।२२।

न वि सुही देवता देवलोए, न वि सुही पुढवीपइराया ।
न वि सुही सेठि सेणावइ य, एगंत सुही मुणी वीयरागी ।।
नगरी सोहति जलमूलबागे, नारीसोहतिपरपुरुषत्यागे ।
राजासोहता सभा पुराणी, साधुसोहंता अमृतवाणी ।२४।
चलतिमेरुचलंतिमदिरं चलतितारारविचद्रमडलं ।
कदापि काले पृथ्वी चलति, साहुपुरुषवाक्य न चलंति धर्मं ।२५।
अशोकवृक्ष सुरपुष्पवृष्टि-र्दिव्यध्वनिश्चामरमासन च ।
भामण्डलं दुदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ।२६।
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कुडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नदण वण ।२७।
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ।२८।
जो सहस्स सहस्साण, संगामे दुज्जए जिए ।
एग जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ।२९।
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
समो निंदापससासु, तहा माणावमाणओ ।३०।

× × × × ×

चोवीस तीर्थंकर नो परिवार, चउदासो बावन गणधार ।
लाख अठावीस सहस्र अडताल, एहवा जे मुनि वंदु त्रिकाल ।।

तत्त्वार्थ सूत्र

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग ।१। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।२। तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।३। जीवाऽजीवाऽस्रव बन्धसवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।४। नामस्थापनाद्रव्यभावत-स्तन्न्यास. ।५। प्रमाणनयैरधिगम ।६। निर्देशस्वामित्वसाधनाधि-करणस्थितिविधानत ।७। सत्सख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभा-वाल्पवहुत्वैश्च ।८। मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवलानि ज्ञानम् ।९। तत्प्रमाणे ।१०। आद्ये परोक्षम् ।११। प्रत्यक्षमन्यत् ।१२। मति. स्मृति सज्ञा चिन्ताऽभिनिवोध इत्यनर्थान्तरम् ।१३। तदिन्द्रिया-निन्द्रियनिमित्तम् ।१४। अवग्रहेहाऽवायधारणा ।१५। वहुवहु-विध-क्षिप्रानिश्रिताऽसंदिग्ध-ध्रुवाणा सेतराणाम् ।१६। अर्थस्य । व्यञ्जनस्याऽवग्रह ।१८। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।१९। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ।२०। द्विविधोऽवधिः ।२१। तत्र भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् ।२२। यथोक्तनिमित्त पड्विकल्पः शेषाणाम् ।२३। ऋजुविपुलमती मन पर्यय. ।२४। विशुद्ध्य-प्रतिपाताभ्या तद्विशेष ।२५। विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविपयेभ्योऽवधि-मन पर्यययो. ।२६। मतिश्रुतयोर्निवन्ध. सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्या-येपु ।२७। रूपिष्ववधे ।२८। तदनन्तभागे मन पर्ययस्य ।२९। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।३०। एकादीनि भाज्यानि युगप-देकस्मिन्ना चतुर्भ्य ।३१। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।३२। सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलव्धेरुन्मत्तवत् ।३३। नैगमसङ्ग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र शब्दा (शब्द संमभिरूढैवभूता) नया. ।३४। आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ ।।३५।। ।। इति प्रथमोऽध्याय ।।

॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ।१। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ।२। सम्यक्त्वचारित्रे ।३। ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदा यथाक्रम सम्यक्त्वचारित्रसयमाऽसंयमाश्च ।५। गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाऽज्ञानासयताऽसिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदा ।६। जीवभव्याभव्यत्वादीनि च ।७। उपयोगो लक्षणम् ।८। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेद ।९। संसारिणो मुक्ताश्च ।१०। समनस्काऽमनस्का ।११। ससारिणस्त्रसस्थावारा. ।१२। पृथिव्यम्बुवनस्पतय. स्थावरा. ।१३। तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसा· ।१४। पञ्चेन्द्रियाणि ।१५। द्विविधानि ।१६। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।१८। उपयोगः स्पर्शादिषु ।१९। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुश्रोत्राणि ।२०। स्पर्शरसगन्धरूपशब्दास्तेषामर्थाः ।२१। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।२२। वाय्वन्तानामेकम् ।२३। कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२४। संज्ञिन समनस्का ।२५। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।२६। अनुश्रेणि गति ।२७। अविग्रहा जीवस्य ।२८। विग्रहवती च संसारिण. प्राक् चतुर्भ्य ।२९। एकसमयोऽविग्रह· ।३०। एकं द्वौ वाऽनाहारक ।३१। सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म ।३२। सचित्तशीतसवृत्ता सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनय ।३३। जराय्वण्डपोतजाना गर्भ. ।३४। नारकदेवानामुपपात. ।३५। शेषाणा सम्मूर्च्छनम् ।३६। औदारिकवैक्रियाऽऽहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि

।३७। पर परं सूक्ष्मम् ।३८। प्रदेशतोऽसङ्ख्येयगुण प्राक्तैजसात् ।३९। अनन्तगुणे परे ।४०। अप्रतिघाते ।४१। अनादिसम्बन्धे च ।४२। सर्वस्य ।४३। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याऽऽचतुर्भ्यः ।४४। निरुपभोगमन्त्यम् ।४५। गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ।४६। वैक्रियमौपपातिकम् ।४७। लब्धिप्रत्यय च ।४८। शुभ विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव ।४९। नारकसम्मूर्छिनो नपुसकानि ।५०। न देवा: ।५१। औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुष. ।५२।

॥ इति द्वितीयोऽध्याय ॥

॥ तृतीयोऽध्यायः ॥

रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातम.प्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठा सप्ताधोऽध पृथुतरा. ।१। तासु नारका: ।२। नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया. ।३। परस्परोदीरितदु खा. ।४। सक्लिष्टासुरोदीरितदु खाश्च प्राक् चतुर्थ्या ।५। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिशत्सागरोपमा सत्त्वाना परा स्थिति ।६। जबूद्वीपलवणादय. शुभनामानो द्वीपसमुद्रा. ।७। द्विर्द्विर्विष्कम्भा पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतय: ।८। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीप. ।९। तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षा. क्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिन पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वता ।११। द्विर्धातकीखण्डे ।१२। पुष्करार्धे च ।१३। प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्या: ।१४। आर्या म्ले-

च्छाश्च ।१४। भरतैरावतविदेहा कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तर-कुरुभ्य ।१६। नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।१७। तिर्यग्योनीना च ।१८।

॥ इति तृतीयोऽध्याय ॥

॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥

देवाश्चतुर्निकाया ।१। तृतीय पीतलेश्यः ।२। दशाष्ट-पञ्चद्वादशविकल्पा कल्पोपपन्नपर्यन्ता ।३। इन्द्रसामानिकत्राय-स्त्रिशपारिषद्यात्मरक्षलोक-पालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषि-काश्चैकश ।४। त्रायस्त्रिशलोकपालवर्ज्या व्यतरज्योतिष्का ।५। पूर्वयोर्द्वीन्द्रा ।६। पीतान्तलेश्या ।७। कायप्रवीचारा आ ऐशा-नात् ।८। शेपा स्पर्शरूपशब्दमन प्रवीचारा द्वयोर्द्वयो ।९। परेऽप्रवीचारा ।१०। भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाऽग्निवात-स्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमारा ।११। व्यतरा किन्नरकिम्पुरुष-महोरगगान्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचा ।१२। ज्योतिष्का. सूर्याश्च-न्द्रमसो ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च ।१३। मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।१४। तत्कृत कालविभाग ।१५। बहिरवस्थिता: ।१६। वैमानिका ।१७। कल्पोपपन्ना कल्पातीताश्च ।१८। उपर्युपरि ।१९। सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलातकमहाशुक्रसह-स्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजय-न्तजयन्ताऽपराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च ।२०। स्थितिप्रभावसुखद्युति-लेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविपयतोऽधिका ।२१। गतिशरीरपरि-ग्रहाऽभिमानतो हीना ।२२। (उच्छ्वासाहारेवेदनोपपातानु-

भावतश्च साध्या) ।२३। पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ।२४। प्राग्ग्रैवेयकेभ्य कल्पा. ।२५। ब्रह्मलोकालया लोकान्तिका ।२६। सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतोऽरिष्टाश्च ।२७। विजयादिषु द्विचरमा: ।२८। औपपातिकमनुष्येभ्य. शेषास्तिर्यग्योनय· ।२९। स्थिति ।३०। भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीना पल्योपममध्यर्धम् ।३१। शेषाणा पादोने ।३२। असुरेन्द्रयो सागरोपमधिक च ।३३। सौधर्मादिषु यथाक्रमम् ।३४। सागरोपमे ।३५। अधिके च ।३६। सप्त सानत्कुमारे ।३७। विशेषस्त्रिसप्तदशैकादशद्वादशत्रयोदशचतुर्दशपञ्चदशभिरधिकानि च ।३८। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च ।३९। अपरापल्योपममधिकं च ।४०। सागरोपमे ।४१। अधिके च ।४२। परत परत पूर्वापूर्वाऽनन्तरा ।४३। नारकाणा च द्वितीयादिषु ।४४। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।४५। भवनेषु च ।४६। व्यन्तराणा च ।४७। परा पल्योपमम् ।४८। ज्योतिष्काणामधिकम् ।४९। ग्रहाणामेकम् ।५०। नक्षत्राणामर्द्धम् ।५१। तारकाणा चतुर्भाग. ।५२। जघन्या त्वष्टभाग: ।५३। चतुर्भाग शेषाणाम् ।५४।

॥ इति चतुर्थोऽध्याय: ॥

॥ पञ्चमोऽध्याय: ॥

अजीवकाया धर्माऽधर्माकाशपुद्गला ।१। द्रव्याणि जीवाश्च ।२। नित्यावस्थितान्यरूपाणी ।३। रूपिण पुद्गला· ।४। आकाशादेकद्रव्याणि ।५। निष्क्रियाणि च ।६। असङ्ख्येया: प्रदेशा धर्माऽधर्मयो ।७। जीवस्य च ।८। आकाशस्यऽनन्ता. ।९।

सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।१०। नाणो. ।११। लोकाकाशेऽवगाह ।१२। धर्माऽधर्मयो कृत्स्ने ।१३। एकप्रदेशादिषु भाज्य पुद्गलानाम् ।१४। असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ।१५। प्रदेशसहारविसर्गाभ्या प्रदीपवत् ।१६। गतिस्थित्युपग्रहो धर्माऽधर्मयोरुपकार ।१७। आकाशस्याऽवगाह ।१८। शरीरवाङ्मन.-प्राणापाना पुद्गलानाम् ।१९। सुखदु खजीवितमरणोपग्रहाश्च ।२०। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।२१। वर्त्तना परिणाम क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य ।२२। स्पर्शरसगन्धवर्णवन्त. पुद्गला: ।२३। शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवन्तश्च ।२४। अणव स्कन्धाश्च ।२५। सघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते ।२६। भेदादणु ।२७। भेदसघाताभ्या चाक्षुषाः ।२८। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत् ।२९। तद्भावाव्यय नित्यम् ।३०। अर्पितानर्पितसिद्धे ।३१। स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्ध ।३२। न जघन्यगुणानाम् ।३३। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।३४। द्व्यधिकादिगुणानां तु ।३५। बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ ।३६। गुणपर्यायवद् द्रव्यम् ।३७। कालश्चेत्येके ।३८। सोऽनन्तसमय ।३९। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा ।४०। तद्भाव. परिणाम ।४१। अनादिरादिमाश्च ।४२। रूपिष्वादिमान् ।४३। योगोपयोगौ जीवेषु ।४४।

॥ इति पञ्चमोऽध्याय ॥

॥ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवाङ्मन कर्म योग ।१। स आस्रव ।२। शुभः

पुण्यस्य ।३। अशुभ पापस्य ।४। सकषायाकषाययो साम्परायिकेर्यापथयो ।५। इन्द्रियकषायाव्रतक्रिया पञ्चचतु पञ्चपञ्चविंशतिसङ्ख्या पूर्वस्य भेदा ।६। तीव्रमदज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेष ।७। अधिकरण जीवाऽजीवा ।८। आद्य संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारिताऽनुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकश ।९। निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदा परम् ।१०। तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयो ।११। दु ख-शोकतापा-क्रन्दन-वध-परिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्य-सद्वेद्यस्य ।१२। भूतव्रत्यनुकम्पा दान सरागसंयमादियोग क्षान्ति शौचमिति सद्वेद्यस्य ।१३। केवलि-श्रुत-सङ्घ-धर्म-देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।१४। कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।१५। बह्वारम्भ-परिग्रहत्व च नारकस्यायुष ।१६। माया तैर्यग्योनस्य ।१७। अल्पारम्भपरिग्रहत्व स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य ।१८। नि शीलव्रतत्वं च सर्वेषा ।१९। सरागसंयमसंयमासंयमाऽकामनिर्जरा-बालतपांसि दैवस्य ।२०। योगवक्रता-विसंवादन चाशुभस्य नाम्न ।२१। विपरीतं शुभस्य ।२२। दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी सङ्घ-साधु-समाधि-वैयावृत्त्यकरण-मर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिरावश्यकापरिहाणि-र्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकृत्त्वस्य ।२३। परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।२४। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।२५। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।२६।

॥ इति षष्ठोऽध्याय ॥

॥ सप्तमोऽध्यायः ॥

हिंसाऽनृतस्तेया-ब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।१। देश-सर्वतोऽणुमहती ।२। तत्स्थैर्यार्थं भावना पञ्च पञ्च ।३। हिंसा-दिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् ।४। दुःखमेव वा ।५। मैत्रीप्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्यमानाऽविनेयेषु ।६। जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् ।७। प्रमत्तयोगात्-प्राण-व्यपरोपणं हिंसा ।८। असदभिधानमनृतम् ।९। अदत्तादानं स्तेयम् ।१०। मैथुनमब्रह्म ।११। मूर्च्छा-परिग्रहः ।१२। निःशल्यो व्रती ।१३। अगार्यनगारश्च ।१४। अणुव्रतोऽगारी ।१५। दिग्देशा-ऽनर्थदण्डविरतिसामायिकपौषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणाऽ-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।१६। मारणान्तिकी संलेखना जोषिता ।१७। शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्य-ग्दृष्टेरतिचाराः ।१८। व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।१९। बन्धवधच्छविच्छेदाऽतिभारारोपणाऽन्नपाननिरोधाः ।२०। मिथ्यो-पदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूटलेखक्रियान्यासापहार-साकारमंत्रभेदाः ।२१। स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिक-मानोन्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः ।२२। परविवाहकरणेत्वरपरि-गृहीताऽपरीगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडातीव्रकामाभिनिवेशाः ।२३। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।२४। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तर्धानानि ।२५। आनयन-प्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलप्रक्षेपाः ।२६। कन्दर्पकौत्कुच्य-मौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि ।२७। योगदुष्प्रणि-

धानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ।२८। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ।२९। सचित्तसम्बद्धसम्मिश्राऽभिपवदुष्पक्वाहारा. ।३०। सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमा ।३१। जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानकरणानि ।३२। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।३३। विधिद्रव्यदातृपात्रविशेपात्तद्विशेप: ।३४।

॥ इति सप्तमोऽध्याय ॥

॥ अष्टमोऽध्याय: ॥

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कपाय-योगा बन्धहेतव: ।१। सकपायत्वाज्जीव कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते ।२। स बन्ध. ।३। प्रकृति-स्थित्यनुभाव-प्रदेशास्तद्विधय ।४। आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयाऽयुष्क-नाम-गोत्राऽन्तराया ।५। पञ्चनवद्वयष्टाविंशति-चतु-र्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्चभेदा यथाक्रमम्।६। मत्यादीना ।७। चक्षुरचक्षुरवधिकेवलाना निद्रा-निद्रानिद्राप्रचलाप्रचला प्रचला-स्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च ।८। सदसद्वेद्ये ।९। दर्शनचारित्रमोहनीयकपायनोकपायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विपोडशनवभेदा: सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कपायनोकपायावनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकश क्रोधमानमायालोभा हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुनपुसकवेदा· ।१०। नारकतैर्यग्योनमानुपदैवानि ।११ गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसङ्घातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतय प्रत्येकशरीरत्रस-

सुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशासि सेतराणि तीर्थकृत्त्वं च ।१२। उच्चैर्नीचैश्च ।१३। दानादीनाम् ।१४। आदितस्तिसृणा-मन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोटच परा स्थिति ।१५। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।१६। नामगोत्रयोर्विंशति ।१७। त्रयस्त्रि-शत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य ।१८। अपरा द्वादशमुहूर्त्ता वेदनीयस्य ।१९। नामगोत्रयोरष्टौ ।२०। शेषाणामन्तर्मुहूर्त्तम् ।२१। विपा-कोऽनुभाव ।२२। स यथानाम ।२३। ततश्च निर्जरा ।२४। नामप्रत्यया सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिता सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशा. ।२५। सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेद-शुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।२६।

॥ इति अष्टमोऽध्याय ॥

॥ नवमोऽध्यायः ॥

आस्रवनिरोध· सवर ।१। स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-परिषहजयचारित्रै ।२। तपसा निर्जरा च ।३। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।४। ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गा. समितय ।५। उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाऽऽकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्म ।६। अनित्याशरणससारैकत्वान्यत्वाशुचित्वाऽऽस्रवसंवरनिर्ज-रालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षा ।७। मार्गा-च्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्या परीषहा ।८। क्षुत्पिपासाशीतोष्ण-दंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवध-याचनाऽलाभ-रोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ।९। सूक्ष्म-सम्परायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।१०। एकादश जिने ।११।

बादरसम्पराये सर्वे ।१२। ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ।१३। दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।१४। चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ।१५। वेदनीये शेषाः ।१६। एकादयो भाज्या युगपदेकोनविंशतेः ।१७। सामायिक-छेदोपस्थाप्य-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसम्पराय-यथाख्यातानि चारित्रम् ।१८। अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ।१९। प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ।२०। नव-चतुर्दश-पञ्चद्विभेदं यथाक्रम प्राग्ध्यानात् ।२१। आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनानि ।२२। ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ।२३। आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगणकुलसंघसाधुसमनोज्ञानाम् ।२४। वाचनाप्रच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः ।२५। बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।२६। उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम् ।२७। आ मुहूर्त्तात् ।२८। आर्त्तरौद्रधर्म्मं शुक्लानि ।२९। परे मोक्षहेतू ।३०। आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ।३१। वेदनायाश्च ।३२। विपरीतं मनोज्ञानाम् ।३३। निदानं च ।३४। तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ।३५। हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ।३६। आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य ।३७। उपशान्तक्षीणकषाययोश्च ।३८। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।३९। परे केवलिनः ।४०। पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियाऽनिवृत्तीनि ।४१। तत् त्र्येककाययोगाऽयोगानाम् ।४२। एकाश्रये सवितर्के पूर्वे ।४३। अविचारं द्वितीय-

यम् ।४४। वितर्क श्रुतम् ।४५। विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसक्रान्तिः ।४६। सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीण-मोहजिना क्रमशोऽसख्येयगुणनिर्जरा. ।४७। पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ।४८। संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपातस्थानविकल्पतः साध्या ।४९।

॥ इति नवमोऽध्याय ॥

॥ दशमोऽध्यायः ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ।१। बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् ।२। कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्ष ।३। औपशमिकादिभव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्य. ।४। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।५। पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्चतद्गति ।६। क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसख्याल्पबहुत्वत. साध्या ।७। ॥ इति दशमोऽध्याय ॥

॥ इति तत्त्वार्थ सूत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ भक्तामर स्तोत्रम् ॥

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-

वालम्वन भवजले पतता जनानाम् ।१।
य सस्तुत सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा–
दुद्भूतवुद्धिपटुभि सुरलोकनाथै. ।
स्तोत्रैर्गतृत्रितयचित्तहरैरुदारैः ।
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथम जिनेन्द्रम् ।२।
वुद्धया विनाऽपि विवुधार्चितपादपीठ !
स्तोतु समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
वालं विहाय जलसस्थितमिन्दुविम्व-
मन्य. क इच्छति जन' सहसा ग्रहीतुम् ।३।
वक्तु गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षम. सुरगुरो प्रतिमोऽपि वुद्धया ।
कल्पातकालपवनोद्धतनक्रचक्र,
को वा तरीतुमलमम्वुनिधिं भुजाभ्याम् ।४।
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्र,
नाभ्येति किं निजशिशो' परिपालनार्थम् ।५।
अल्पश्रुत श्रुतवता परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिल किल मधौ मधुर विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु. ।६।
त्वत्सस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।

आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ।७।
मत्वेति नाथ तव सस्तवन मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दु. ।८।
आस्ता तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्सकथाऽपि जगता दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरण कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ।९।
नात्यद्भुत भुवनभूषणभूत नाथ !,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्त. ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन कि वा,
भूत्याश्रित य इह नात्मसमं करोति ।१०।
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीय,
नान्यत्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षु. ।
पीत्वा पय शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धो ,
क्षारं जल जलनिधेरशितु क इच्छेत् ।११।
यै शान्तरागरुचिभि परमाणुभिस्त्व,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव पृथिव्या,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ।१२।
वक्त्र क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,

नि शेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
विम्बं कलङ्कमलिन क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ।१३।
सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप !
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लघयन्ति ।
ये सश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ।१४।
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाभि-
र्नीत मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलित कदाचित् ।१५।
निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्न जगत्त्रयमिद प्रकटीकरोपि ।
गम्यो न जातु मरुता चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाश. ।१६।
नास्त कदाचिदुपयासि न राहुगम्य.,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव.,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ।१७।
नित्योदय दलितमोहमहान्धकारं,
गम्य न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ।१८।

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ।१९।
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ।२०।
मन्ये वर हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य,
कश्चिन्मनोहरति नाथ भवान्तरेऽपि ।२१।
स्त्रीणा शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्यासुत त्वदुपमं जननी प्रसूते ।
सर्वादिशोदधतिभानिसहस्ररश्मि,
प्रच्येवदिग्जनयति-स्फुरदशुजालम् ।२२।
त्वामामनन्ति मुनयः परम पुमास-
मादित्यवर्णममल तमस परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु;
नान्य शिव शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्था ।२३।
त्वामव्यय विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम् ।
योगीश्वर विदितयोगमनेकमेकं,

ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्त ।२४।
वुद्धस्त्वमेव विवुधार्चितवुद्धिवोधात्,
त्व शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुपोत्तमोऽसि ।२५।
तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नम· क्षितितलामलभूपणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय.
तुभ्य नमो जिन ! भवोदधिशोपणाय ।२६।
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेपै-
स्त्वसश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोपैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वै,
स्वप्नातरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ।२७।
उच्चैरशोकतरुसश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
विम्वं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ।२८।
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपु कनकावदातम् ।
विम्वं वियद्विलसदशुलतावितानं,
तुगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मे ।२९।
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपु. कलधौतकान्तम ।

उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्जरवारिधार-
मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।३०।
छत्रत्रय तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चै. स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभ–
प्रख्यापयत्त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ।३१।
[गम्भीरताररवपूरितदिग्विभाग–
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्ष ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषक सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशस प्रवादी ।३२।
मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात–
सतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिव पतति ते वचसा ततिर्वा ।३३।
शुभ्रप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमता द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसख्या,
दीप्त्याजयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ।३४।
स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्ट-
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्या ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व–
भाषास्वभावपरिणामगुणै प्रयोज्य'] ।३५।
उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ति,

पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधा. परिकल्पयन्ति ।३६।
इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृत प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ।३७।
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल–
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धमापतन्त,
दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ।३८।
भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त–
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभाग. ।
बद्धक्रम क्रमगत हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसश्रितं ते ।३९।
कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्प ।
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्त्तनजल शमयत्यशेषम् ।४०।
रक्तेक्षण समदकोकिलकण्ठनील,
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुस ।४१।

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-
माजौ वल बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्ध,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपेति ।४२।
कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ।४३।
अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवत· स्मरणाद्व्रजन्ति ।४४।
उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना,
शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशा. ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा. ।४५।
आपादकण्ठमुरुशृखलवेष्टितांगा·,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघा ।
त्वन्नाममत्रमनिशं मनुजा. स्मरन्त,
सद्य स्वय विगतबधभया भवन्ति ।४६।
मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-
सग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भय भियेव,

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ।४७।
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुर्णनिवद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्र,
तं मानतुगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ।४८। ॥ इति ॥

॥ कल्याणमन्दिरस्त्रोतम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमध्रिपद्मम् ।
ससारसागरनिमज्जदषेषजतु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ।१।
यस्य स्वय सुरगुरुर्गरिमाम्वुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवन करिष्ये ।२।
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितु स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवत्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्रपयति किं किल धर्मरश्मेः ।३।
मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितु न तव क्षमेत ।

कल्पान्तवान्तपयस: प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशि ? ।४।
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ? ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुग वितत्य ।
विस्तीर्णता कथयति स्वधियाऽम्बुराशे ? ।५।
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तुं कथ भवति तेषु ममावकाश: ? ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ।६।
आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! सस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहृतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरस सरसोऽनिलोऽपि ।७।
हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जतो. क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धा: ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग–
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ।८।
मुच्यत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चोरैरिवाशु पशव प्रपलायमानै· ।९।
त्व तारका जिन ! कथं भविना त एव,

त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्त ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेप नून-
मन्तर्गतस्य मरुत स किलानुभाव ।१०।
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावा',
सोऽपि त्वया रतिपति' क्षपित. क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुज पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ।११।
स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वा जन्तव कथमहो हृदये दधाना' ? ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महता यदि वा प्रभाव ।१२।
क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथम निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वत कथं किल कर्मचौरा. ?
प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ।१३।
त्वा योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
मन्वेपयन्ति हृदयाम्वुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकाया' ।१४।
ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविन. क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशा व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदा' ।१५।

अन्त सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्व,
भव्यैः कथ तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रह प्रशमयन्ति महानुभावाः ।१६।
आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभाव. ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ।१७।
त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नून विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्ना ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शखो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ।१८।
धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा–
दास्ता जनो भवति ते तरुरप्यशोक ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ।१९।
चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टि ? ।
त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश !,
गच्छन्ति नूनमध एव हि वन्धनानि ।२०।
स्थाने गभीरहृदयोदधिसभवायाः,
पीयूषता तव गिर समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यत. परमसम्मदसंगभाजो,

भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ।२१।
स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचय. सुरचामरौघा: ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुगवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतय. खलु शुद्धभावा. ।२२।
श्याम गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ।२३।
उद्गच्छता तव शितिद्युति मंडलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !,
नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि ।२४।
भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभ सुरदुन्दुभिस्ते ।२५।
उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकार ।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेत· ।२६।
स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन ।

माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ।२७।
दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ।२८।
त्व नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजष्टष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्र विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्य ।२९।
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्व,
किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! ।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञान त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु ।३०।
प्राग्भारसभृतनभासि रजासि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ।३१।
यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रमीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमासलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ।३२।
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-

प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो य,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभव भवदु खहेतु' ।३३।
धन्यास्त एवभुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य–
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः !,
पादद्वय तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ।३४।
अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविध समेति ।
जन्मातरेऽपि तव पादयुग न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ।३६।
नून न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतय कथमन्यथैते ? ।३७।
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रिया. प्रतिफलन्ति न भावशून्या ।३८।

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधेय,
दुःखाकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ।३९।
निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ।४०।
देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसार तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ।४१।
यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ।४२।
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र,
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ।४३।
जननयनकुमुदचन्द्र-प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ।४४।

॥ रत्नाकरपञ्चविंशतिः ॥

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! ।
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरञ्जयज्ञानकलानिधान ! ।१।
जगत्त्रयाधार ! कृपावतार !, दुर्वारसंसारविकारवैद्य !
श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्धभावा द्विज्ञ प्रभो विज्ञपयामिकिंचित् ।२।
किं वाललीलाकलितो न वाल, पित्रो पुरो जल्पति निर्विकल्प. ।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ।३।
दत्त न दान परिशीलितं च, न शालि शील न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्, विभो मया भ्रातमहो मुधैव।
दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ॥
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन वद्धोऽस्मि कथ भजे त्वां ।५।
कृत मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत् ।
अस्मादृशा केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ।६।
मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त !, त्वदास्यपीयूपमयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरस कठोर-मस्मादृशा देव तदश्मतोऽपि ।७।
त्वत्त सुदुष्प्राप्यमिद मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ।
प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याऽग्रतो नायक ! पूत्करोमि ।८।
वैराग्यरग परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ।
वादाय विद्याऽध्ययन च मेऽभुत्,कियद् ब्रुवे हास्यकर स्वमीश ! ।९।
परापवादेन मुख सदोपं, नेत्र परस्त्रीजनवीक्षणेन ।
चेतः परापायविचिन्तनेन, कृत भविष्यामि कथं विभोऽहं ।१०।
विडम्बितं यत्स्मरघस्मरार्त्ति-दशावशात्स्व विषयाधलेन ।

प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ।११।
ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः ।
कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगा-दवाञ्छि हि नाथ ! मतिभ्रमो मे ।१२।
विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ।१३।
लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक कारणं किं ।१४।
अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च कापि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ।१५।
आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ।१६।
नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं ।
अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव धिग्माम् ।१७।
न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ।
लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यं ।१८।
चक्रे मया सत्स्वऽपि कामधेनु-कल्पद्रुचिन्तामणिषु स्पृहार्त्तिः ।
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश मे पश्य विमूढभावं ।१९।
सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन ।२०।
स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म ।२१।
वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव, तार्यः कथङ्कारमयम्भवाब्धिः ।२२।

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य–मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
यदीदृशोऽहं ममतेन नष्टा, भूतोद्भवद्भावित्रिभवत्रयीश ! ।२३।
किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रे चरित स्वकीयं ।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ।२४।
दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्य कृपा-
पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येता न याचे श्रियं ।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्न शिवं ।
श्रीरत्नाकर मंगलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ।२५।

॥ प्रार्थना पञ्चविंशतिः ॥

सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोद, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभाव विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव ! ।१।
शरीरत. कर्तुमनन्तशक्ति. विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोपादिव खड्गयष्टि, तव प्रसादेन ममास्तु शक्ति· ।२।
दु खे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताऽशेषममत्वबुद्धे, समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ! ।३।
य स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दै, य स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रै ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रै, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।४।
यो दर्शनज्ञानसुखस्वभाव समस्तसंसारविकारबाह्य. ।
समाधिगम्य परमात्मसंज्ञ, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।५।
निषूदते यो भवदु खजालं, निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीय, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।६।

विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद्व्यतीतः ।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्क, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।७।
क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा, रागादयो यस्य न सन्ति दोषा. ।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपाय, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।८।
यो व्यापको विश्वजनीनवृत्ति, सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्ध. ।
ध्यातो धुनीते सकल विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।९।
न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषै, यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मि ।
निरञ्जन नित्यमनेकमेकं, तं देवमाप्तं शरण प्रपद्ये ।१०।
विभासते यत्र मरीचिमालि, न्यविद्यमाने भुवनावभासि ।
स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं, तं देवमाप्त शरणं प्रपद्ये ।११।
विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं, विलोक्यते स्पष्टमिद विविक्तम् ।
शुद्ध शिवं शान्तमनाद्यनन्त, तं देवमाप्त शरणं प्रपद्ये ।१२।
येन क्षता मन्मथमानमूर्च्छा–विषादनिद्राभयशोकचिन्ता ।
क्षय्योऽनलेनेव तरुप्रपञ्च–स्त देवमाप्त शरण प्रपद्ये ।१३।

प्रतिक्रमण–(प्रभु समीपे स्वात्मचिन्तन)

विनिन्दनालोचनगर्हणैरह, मनोवच कायकषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पाप भवदु खकारणं,भिषग्विष मन्त्रगुणैरिवाखिलम् ।१४।
अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनाऽतिचार सुचरित्रकर्मणः ।
व्यधामनाचारमपि प्रमादत , प्रतिक्रम तस्य करोमि शुद्धये ।१५।
न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी,विधानतो नो फलको विनिर्मित ।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विष ,सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ।१६।
न संस्तरो भद्र ! समाधिसाधन, न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतोभवाऽनिश,विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ।।

न सन्ति बाह्या मम केचनार्था., भवामि तेषा न कदाचनाहम् ।
इत्थ विनिश्चित्य विमुच्य बाह्य, स्वस्थ सदा त्वं भव भद्र ! मुक्त्यै ।।
आत्मानमात्मन्यविलोक्यमान--स्त्व दर्शनज्ञानमयो विशुद्ध
एकाग्रचित्त खलु यत्र तत्र. स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम् ।१६।
एक सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मल साधिगमस्वभाव,
वहिर्भवा सन्त्यपरे समस्ता ,न शाश्वता कर्मभवा· स्वकीया ।२०।
यस्यास्ति नैक्य वपुपापि सार्द्धं, तस्यास्ति कि पुत्रकलत्रमित्रै,
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपा , कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ।२१।
संयोगतो दु खमनेकभेद, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी,
ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् ।२२।
सर्वं निराकृत्य विकल्पजाल, ससारकान्तारनिपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्व परमात्मतत्त्वे ।२३।
स्त्रय कृतं कर्म यदात्मनापुरा, फलं तदीय लभते शुभाशुभम्,
परेण दत्त यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयकृतं कर्म निरर्थकं तदा ।२४।
विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया,
चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपन, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृत प्रभो ! २५

।। चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

कि कर्पूरमय सुधारसमय्र कि चन्द्ररोचिर्मयं ।
कि लावण्यमय महामणिमयं, करुण्यकेलिमयम् ।।
विश्वानन्दमय महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं ।
शुक्लध्यानमय वपुर्जिनपतेर्भूयाद्भवालम्बनम् ।१।

पाताल कलयन् धरा धवलयन्नाकाशमापूरयन् ।
दिक्चक्र क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ।।
ब्रह्माण्ड सुखयन् जलानि जलधे. फेनच्छलालोलयन् ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वसंभवयशोहंसश्चिर राजते ।२।
पुण्याना विपणिस्तमोदिनमणि. कामेभकुम्भे सृणि–
र्मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योति प्रकाशारणि. ।।
दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणि कृपासारिणी ।
विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणि. ।३।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया ।
दृष्टस्तात ! तत· श्रिय· समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ।।
मुक्ति क्रीडति हस्तयोर्बहुविध सिद्धं मनोवाञ्छित ।
दुर्दैवं दुरित च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्ट मम ।४।
यस्य प्रौढतमप्रतापतपन प्रोद्दामधामा जग–
ज्जघाल· कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वसक. ।।
नित्योद्योतपद समस्तकमलाकेलिगृहं राजते ।
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणि पातु माम् ।५।
विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पाकुरो ।
दारिद्राणि गजावली हरिशिशु काष्ठानि वह्ने· कणः ।
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवह यद्वत्तथा ते विभो ।
मूर्ति स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ।६।
श्रीचिन्तामणिमन्त्रमोंकृतियुत ह्रीँ कारसाराश्रित ।
श्रीमर्हन्नमिऊणपाशकलित त्रैलोक्यवश्यावहम् ।।
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेय प्रभावाश्रयं ।

सोल्लासं वसहाङ्कित जिनफुल्लिंगानन्दद देहिनाम् ।७।
ह्रीं श्रीं कारवर नमोक्षरपर ध्यायन्ति ये योगिनो-
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिप चिन्तामणिसंज्ञकम् ।
भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे ।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ।८।
स्रग्धरा-नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारा-
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला-
जायन्ते पार्श्वचिंतामणिनतिवशत.प्राणिना भक्तिभाजाम् ।९।
शार्दूल -गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्यागणे रंगिणो-
देवा दानवमानवा सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिना ब्रह्माण्डसंस्थायिनी ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशं सस्तौति यो ध्यायति ॥
मालिनी-इति जिनपतिपार्श्व. पार्श्वपार्श्वाख्ययक्ष
प्रदलितदुरितौघ. प्रीणितप्राणिसार्थ ।
त्रिभुवनजनवाञ्छादानचिन्तामणिकः ।
शिवपदतरुबीजं बोधिबीज ददातु ।११।

अर्हंतो भगवन्त इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा. पूज्या उपाध्यायका ।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका,
पचैते परमेष्ठिन प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मगलम् ॥

वीर सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो, वीर बुधा. संश्रिता ।
वीरेणाभिहत स्वकर्म निचयो, वीरा य नित्य नम· ॥
वीरात्तीर्थमिद प्रवृत्तमतुल वीरस्य घोरं तपो ।
वीरे श्री धृति कीर्ति कान्तिनिचय, श्री वीर । भद्रदिश ॥

॥ मेरी भावना ॥

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया ।
सब जीवो को मोक्ष मार्ग का, निष्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी मे लीन रहो ॥
विषयो की आशा नही जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं ।
निज पर के हित साधन मे जो, निशिदिन तत्पर रहते हैं ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते है ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दु ख समूह को हरते है ॥
रहे सदा सत्संग उन्ही का, ध्यान उन्ही का नित्य रहे ।
उन्ही जैसी चर्या मे यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नही सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नही कहा करूँ ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥
अहकार का भाव न रक्खूँ, नही किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरो की बढती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
बने जहाँ तक इस जीवन मे, औरो का उपकार करूँ ॥
मैत्री भाव जगत् मे मेरा, सब जीवो से नित्य रहे ।

दीन दुखी जीवो पर मेरे, उर से करुणा स्रोत वहे ॥
दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतो पर, क्षोभ नही मुझको आवे ।
साम्य भाव रखूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥
गुणी जनो को देख हृदय मे, मेरे प्रेम उमड आवे ।
वने जहा तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नही कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषो पर जावे ॥
कोई वुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
लाखो वर्षो तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥
होकर सुख मे मग्न न फूले, दु.ख मे कभी न घवरावे ।
पर्वत नदी स्मशान भयानक, अटवी से नही भय खावें ॥
रहे अडोल अकम्प निरतर, यह मन दृढतर वन जावे ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग मे, सहन शीलता दिखलावे ॥
सुखी रहे सव जीव जगत् के, कोई कभी न घवरावे ।
वैर पाप अभिमान छोड जग, नित्य नये मगल गावे ।
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे ।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सव पावे ॥
ईति भीति व्यापे नही जग मे, धर्म समय पर हुआ करे ।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे ।
परम अहिंसा धर्म जगत् मे, फैल सर्व हित किया करे ॥

फैले प्रेम परस्पर जग मे, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहि, कोई मुख से कहा करे।।
बनकर सब 'युग वीर" हृदय से देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दु ख सकट सहा करे।। ।।इति।।

॥ लघु साधु वन्दना ॥

साधुजी ने वदना नित नित कीजे, प्रात उगते सूर रे प्राणी।
नीच गति माँ ते नही जावे. पावे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी। साधु।१।
मोटा ते पच महाव्रत पाले, छह कायारा प्रतिपाल रे प्राणी।
भ्रमर भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बियालीस टाल रे प्राणी।२।
ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणी, दीधी ससार ने पूठ रे प्राणी।
या पुरुषा री सेवा करता, आठ करम जाय टूट रे प्राणी। साधु।३।
एक एक मुनिवर रसना त्यागी एक एक ज्ञान भण्डार रे प्राणी।
एक एक मुनिवर वैयावच वैरागी, जेना गुणानो नावे पार रे प्राणी।।
गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परीसा बावीस रे प्राणी।
बावन तो अनाचार जो टाले, तेने नमावुं मारूँ शीश रे प्राणी।।५।
जहाज समान ते संत मुनिश्वर, भव्य जीव बैठे आय रे प्राणी।
पर उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुक्ति पहुचाय रे प्राणी।६।
इण चरणे जीव साता पावे, पावे ते लीलविलास रे प्राणी।
जन्म जरा ने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावास रे प्राणी। साधु।७।
एक वचन श्रीसतगुरु करो, जो पैठे दिल माँय रे प्राणी।
नरक निगोद मां ते नही जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी।८।
प्रात उठी ने उत्तम प्राणी, सुणे साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी।

एहवा पुरुषा री सेवा करतां, पावे अमर विमान रे प्राणी । साधु ।६।
सवत अठार ने वर्ष अडतीसे, वूसी गांव चौमास रे प्राणी ।
मुनि आसकरणजी इण पर जपे, हुं उतम साधां रो दासरे ।१०।

वड़ी साधु वन्दना

नमुं अनन्त चोवीसी, ऋषभादिक महावीर ।
आरज क्षेत्रमां, घाली धर्म नी शीर ।१।
महा अतुल वली नर, शूर वीर ने धीर ।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुंच्या भवजल तीर ।२।
सीमधर प्रमुख, जघन्य तीर्थकर वीश ।
छे अढी द्वीप मां, जयवंता जगदीश ।३।
एक सो ने सित्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश ।
धन्य म्होटा प्रभुजी, तेह ने नमावुं शीश ।४।
केवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नवकोड़ ।
मुनि दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्टा नव सहस्र कोड ।५।
विचरे विदेहे, म्होटा तपसी घोर ।
भावे करी वन्दू, टाले भवनी खोड ।६।
चोवीसे जिनना, सघला ही गणधार ।
चोदसे ने बावन, ते प्रणमुं सुखकार ।७।
जिन शासन नायक, धन्य श्रीवीर जिनंद ।
गोतमादिक गणधर, वर्ताया आनन्द ।८।
श्री ऋषभदेव ना, भरतादिक सो पूत ।
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भूत ।९।

पछि इन्द्र हटायो, दियो छ. काय अभयदान ।२१।
करकण्डू प्रमुख, चारे प्रत्येक वुद्ध ।
मुनि मुक्ति पहुत्या, जीत्या कर्म महाजुद्ध ।२२।
धन्य म्होटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश ।
मुनिवर अनाथी,जीत्या राग ने रीश ।२३।
वलि समुद्रपाल मुनि, राजमति रहनेम ।
केशी ने गौतम, पाम्या शिवपुर क्षेम ।२४।
धन्य विजयघोष मुनि, जयघोप वलि जाण ।
श्री गर्गाचार्य पहुत्या छे निर्वाण ।२५।
श्री उत्तराध्ययन माँ, जिनवर करया वखाण ।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन माँ धीरज आण ।२६।
वलि खदक सन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह ।
महावीर समीपे, पच महाव्रत लेह ।२७।
तप कठिन करीने, झौसी अपणी देह ।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसे भव-छेह ।२८।
वलि ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शन सार ।
शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गागेय अणगार ।२९।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार ।
ये चारे मुनिवर, पहुंत्या मोक्ष मँझार ।३०।
भगवन्त नी माता धन्य धन्य सती देवानदा ।
वलि सती जयन्ती, छोड दिया घर फंदा ।३१।
सती मुक्ति पहुत्या, वलि ते वीरनी नन्द ।
महासती सुदर्शना, घणी सतियो ना वृन्द ।३२।

वलि कार्तिक सेठे, पड़िमा वही शूरवीर ।
जम्यो महोरा ऊपर, तापस बलतीर खीर ।३३।
पछी चारित्र लीधूँ, मित्र एक सहस्र आठ धीर ।
मरी हुआ शक्रेन्द्र, च्यवि लेसे भव तीर ।३४।
वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज ।
पछी चारित्र लेइने, सारचा आतम काज ।३५।
गगदत्त मुनि आनन्द, तारण तरण जहाज ।
कोशल मुनि रोहा, दियो घणाने साज ।३६।
धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार ।
आराधक होइ ने, गया देवलोक मंझार ।३७।
चवि मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार ।
बीजा पण मुनिवर, भगवती माँ अधिकार ।३८।
श्रेणिक ना बेटा, म्होटा मुनिवर मेघ ।
तजि आठ अन्तेउर, आण्यो मन सवेग ।३९।
वीर पै व्रत लइने, बाँधी तप नी तेग ।
गया विजय विमाने, चवि लेसे शिव वेग ।४०।
धन्य थावच्चा पुत्र, तजी बत्तीसे नार ।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ।४१।
शुकदेव सन्यासी, एक सहस शिष्य लार ।
पचशय सु शैलक, लीधो संजमभार ।४२।
सब सहस्र अढाई, घणा जीवो ने तार ।
पुँडरिक गिरि ऊपर, कियो पादपोपगमन संथार ।४३।
आराधक हुई ने, किधो खेवो पार ।

वलि कार्तिक सेठे, पडिमा वही शूरवीर ।
जम्यो महोरा ऊपर, तापस बलतीर खीर ।३३।
पछी चारित्र लीधूं, मित्र एक सहस्र आठ धीर ।
मरी हुआ शक्रेन्द्र, च्यवि लेसे भव तीर ।३४।
वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज ।
पछी चारित्र लेइने, सारचा आतम काज ।३५।
गगदत्त मुनि आनन्द, तारण तरण जहाज ।
कोशल मुनि रोहा, दियो घणाने साज ।३६।
धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार ।
आराधक होइ ने, गया देवलोक मंझार ।३७।
चवि मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार ।
बीजा पण मुनिवर, भगवती माँ अधिकार ।३८।
श्रेणिक ना बेटा, म्होटा मुनिवर मेघ ।
तजि आठ अन्तेउर, आण्यो मन सवेग ।३९।
वीर पै व्रत लइने, बाँधी तप नी तेग ।
गया विजय विमाने, चवि लेसे शिव वेग ।४०।
धन्य थावच्चा पुत्र, तजी बत्तीसे नार ।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ।४१।
शुकदेव सन्यासी, एक सहस शिष्य लार ।
पचशय सु शैलक, लीधो संजमभार ।४२।
सब सहस्र अढाई, घणा जीवो ने तार ।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पादपोपगमन संथार ।४३।
आराधक हुई ने, किधो खेवो पार ।

हुआ म्होटा मुनिवर, नाम लिया निस्तार ।४४।
धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध ।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध ।४५।
मल्लिनाथ ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय ।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, म्होटी पदवी पाय ।४६।
वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान ।
पोते चारित्र लईने, पाम्या मोक्ष निधान ।४७।
धन्य तेतली मुनिवर, दियो छकाय अभयदान ।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवल ज्ञान ।४८।
धन्य पाँचे पाँडव, तजी द्रोपदी नार ।
थेवरनी पासे, लीधो संयम भार ।४६।
श्री नेमि वन्दन नो, एहवो अभिग्रह कीध ।
मास मास खमण तप, शत्रुजय जई सिद्ध ।५०।
धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार ।
कीड़ियो नी करुणा, आणी दया अपार ।५१।
कडवा तुंबा नो, कीधो सगलो आहार ।
सर्वार्थ सिद्ध पहुँच्या, चवि लिधो भवपार ।५२।
वलि पुंडरीक राजा, कुँडरीक डगियो जाण ।
पोते चारित्र लईने, न घाली धर्म माँ हाण ।५३।
सर्वार्थ सिद्ध पहुच्या, चवि लेशे निर्वाण ।
श्री ज्ञातासूत्र माँ, जिनवर कर्‌या वखाण ।५४।
गोतमादिक कुँवर, सगा अठारे भ्रात ।
सत्र अधक विष्णु सुत, धारिणि ज्यारी मात ।५५।

तजी आठ अन्तेउर, काढी दीक्षा नी आत ।
चारित्र लईने कीधो मुक्ति नो साथ ।५६।
श्री अनीकसेनादिक, छये सहोदर भाय ।
वसुदेव ना नन्दन,देवकी ज्यारी माय ।५७।
भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण ।
सुलसा घेर वधिया, साँभली नेम नी वाण ।५८।
तजी बत्तीस बत्तीस अन्तेउर, निकलिया छिटकाय ।
नल कूबर समाणा, भेटचा श्री नेम ना पाय ।५९।
करी छठ छठ पारणा, मन मे वैराग्य लाय ।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय ।६०।
वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय ।
कुँवर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ माय ।६१।
वसुदेवना नन्दन, धन्य धन्य गजसुकुमाल ।
रूपे अति सुन्दर, कलावन्त वय बाल ।६२।
श्री नेमि समीपे, छोडचो मोह जंजाल ।
भिक्षु नी पडिमा, गया मसाण महाकाल ।६३।
देखी सोमल कोप्यो, मस्तक बाँधी पाल ।
खेराना खीरा, शिर ठविया असराल ।६४।
मुनि नजर न खडी, मेटी मननी झाल ।
परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल ।६५।
धन्य जाली मयाली, उवयालादिक साध ।
शाम्ब ने प्रद्युम्न, अनिरुद्ध साधु अगाध ।६६।
वलि सत्यनेमि दृढनेमि, करणी कीधी अगाध ।

दशे मुक्ति पहुचा, जिनवर वचन आराध ।६७।
धन्य अर्जुनमाली, कियो कदाग्रह दूर ।
वीर पै व्रत लईने, सत्यवादी हुआ शूर ।६८।
करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर ।
छह मासा माही, कर्म किया चकचूर ।६९।
कुँवर अइमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम ।
सुणी वीर नी वाणी, कीधो उत्तम काम ।७०।
चारित्र लईने, पहुच्या शिवपुर ठाम ।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम ।७१।
वलि कृष्णराय नी, अग्रमहिषी आठ ।
पुत्र-वहू दोये, सँच्या पुण्य ना ठाठ ।७२।
जादव कुल सतियाँ, टाली दुःख उच्चाट ।
पहुची शिवपुर माँ, ए छे सूत्र नो पाठ ।७३।
श्रेणिक नी राणी, काली आदिक दश जाण ।
दशे पुत्र वियोगे, साँभली वीरनी वाण ।७४।
चन्दन बाला पै, सयम लेई हुई जाण ।
तप करी देह् झोसी, पहुची छे निर्वाण ।७५।
नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृप नी नार ।
सघली चन्दनबाला पै, लीधो संयम भार ।७६।
एक मास सथारे, पहुची मुक्ति मझार ।
ए नेवुं जणा नो, अन्तगड माँ अधिकार ।७७।
श्रेणिक ना बेटा, जालियादिक तेवीश ।
वीर पै व्रत लेईने, पाल्यो विश्वा वीश ।७८।

तप कठिन करी ने, पुरी मन जगीश ।
देवलोके पहुंच्या, मोक्ष जासे तजी रीश ।७९।
काकन्दी नो धन्नो, तजी बत्तीसे नार ।
महावीर समीपे, लीधो सयम भार ।८०।
करी छठ छठ पारणा, आयम्बिल उच्छिष्ट आहार ।
श्री वीर वखाण्यो, धन धन्नो अणगार ।८१।
एक मास संथारे, सर्वार्थ सिद्ध पहुत ।
महा विदेह क्षेत्र माँ, करसे भव नो अन्त ।८२।
धन्नानी रीते, हुआ नवे ही संत ।
श्री अनुत्तरोववाई माँ, भाँखी गया भगवंत ।८३।
सुबाहु प्रमुख, पाँच पाँचसौ नार ।
तजी वीर पै लीधा, पाँच महाव्रत सार ।८४।
चारित्र लेई ने, पाल्यो निरतिचार ।
देवलोके पहुच्या, सुखविपाके अधिकार ।८५।
श्रेणिक ना पौत्रा, पौमादिक हुआ दस ।
वीर पै व्रत लेईने, काढ्यो देह नो कस ।८६।
सयम आराधी, देवलोक माँ जइ वस ।
महाविदेह क्षेत्र माँ, मोक्ष जासे लेई जस ।८७।
बलभद्र ना नन्दन, निषधादिक हुआ बार ।
तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो ससार ।८८।
सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध ।
सर्वार्थसिद्ध पहुच्या, होशे विदेहे सिद्ध ।८९।
धन्नो ने शालिभद्र, मुनीश्वरो नी जोड ।

नार्यां ना वन्धन, तत्क्षण नाख्या तोड़ ।९०।
घर कुटुम्ब कविलो, धन कचन नी कोड ।
मास मास खमण तप, टालसे भव नी खोड़ ।९१।
श्री सुधर्मा स्वामी ना शिष्य, धन धन जम्बू स्वामी ।
तजी आठ अन्तेउरी, मात पिता धन धाम ।९२।
प्रभवादिक तारी, पहुंच्या शिवपुर ठाम ।
सूत्र प्रवर्तावी, जग माँ राख्युं नाम ।९३।
धन्य ढढण मुनिवर, कृष्ण राय ना नन्द ।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ।९४।
वलि खन्दक ऋषि नी, देह उतारी खाल ।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल ।९५।
वलि खन्दक ऋषि ना, हुआ पाँचसौ शिष्य ।
घाणी माँ पील्या, मुक्ति गया तज रीश ।९६।
संभूतिविजय-शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय ।
चौदह पूर्वधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय ।९७।
वलि आर्द्र कुमार मुनि, स्थूलिभद्र नन्दिषेण ।
अरणक अइमुत्तो, मुनीश्वरो नी श्रेण ।९८।
चौवीसे जिनना, मुनिवर सख्या अठावीश लाख ।
ऊपर सहस अडतालीस, सूत्र परम्परा भाख ।९९।
कोई उत्तम वाँचो, मोढे जयणा राख ।
उघाड़े मुख बोल्याँ, पाप लगे इम भाख ।१००।
धन मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल ध्यान ।
गज होदे पायो, निर्मल केवलज्ञान ।१०१।

धन्य आदिश्वर नी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय ।
चारित्र लेईने, मुक्ति गई सिद्ध होय ।१०२।
चौवीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौवीस ।
सती मुक्ति पहुच्या, पूरी मन जगीश ।१०३।
चौवीसे जिनना, सर्व साधवी सार ।
अडतालीस लाखने, आठसे सित्तर हजार ।१०४।
चेडा नी पुत्री, राखी धर्म सु प्रीत ।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत ।१०५।
पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयन्ती सीत ।
इत्यादिक सतियाँ, गई जमारो जीत ।१०६।
चौवीसे जिनना, साधु साधवी सार ।
गया मोक्ष देवलोके, हृदये राखो धार ।१०७।
इण अढी द्वीप माँ, घरड़ा तपसी बाल ।
शुद्ध पच महाव्रत धारी, नमो नमो त्रिकाल ।१०८।
इण जतियो सतियो ना, लीजे नित्य प्रति नाम ।
शुद्ध मन थी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम ।१०९।
इण जतियो सतियो शुं, राखो उज्ज्वल भाव ।
इम कहे ऋषि जयमल, एह तिरणो नो दाव ।११०।
सवत अठारने, वर्ष साते सिरदार ।
गढ जालोर माँ, एह कह्यो अधिकार ।१११।

।। इति बडी साधु वदना ।।

वृहदालोयणा

दोहा

सिद्ध श्री परमातमा, अरिगजन अरिहंत ।
इष्टदेव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत ।१।
अरिहंत सिद्ध समरू सदा, आचारज उवज्झाय ।
साधु सकल के चरन को, वंदू शीश नमाय ।२।
शासन नायक सुमरिये, भगवंत वीर जिनंद ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानंद ।३।
अगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार ।४।
श्रीगुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यू घन वरसत वेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध ।५।
पंच परमेष्ठी देव को, भजनपुर पंचान ।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण ।६।
श्रीजिन युग पद कमल में, मुझ मन भमर बसाय ।
कब ऊगे वो दिन करूँ, श्रीमुख दरिसन पाय ।७।
प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगजन अरिहंत ।
कथन करूँ अब जीव को, किंचित मुझ विरतंत ।८।
आरंभ विषय कषाय वस, भमियो काल अनंत ।
लख चोराशी योनि से, अब तारो भगवंत ।९।
देव गुरु धर्म सूत्र मे, नवतत्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कड मोय ।१०।

मोह् अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग ।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग ।११।
जे मै जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार ।
प्रभु तुम्हारी साख से,वारवार धिक्कार ।१२।
बुरा बुरा सब को कहू, बुरा न दीसे कोय ।
जो घट शोधू आपणो, तो मोसु बुरो न कोय ।१३।
कहेवा मे आवे नही अवगुण भरचा अनंत ।
लिखवा मे क्यु कर लिखू, जानो श्री भगवत ।१४।
करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद ।
मोह् अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रथीभेद ।१५।
पतित उद्धारन नाथजी, अपनो विरुद विचार ।
भूल चूक सब माह्री, खमिये वारवार ।१६।
माफ करो सब माह्रा, आज तलक ना दोष ।
दीनदयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील संतोष ।१७।
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवत वदन भाव ।
रागद्वेष पतला करी, सबसे खमत खमाव ।१८।
छूटूँ पिछला पाप से, नवा न बाँधु कोय ।
श्रीगुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ।१९।
परिग्रह ममता तजी करी, पंच महाव्रत धार ।
अत समय आलोयणा, करू संथारो सार ।२०।
तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन्न ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ।२१।
अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु, सवर निर्जरा धर्म ।

केवली भाषित शास्त्र, यहि जैन मत मर्म ।२२

आरभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार ।
जिन आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार ।२३।

क्षण निकमो रहनो नही, करनो आतम काम ।
भणनो गुणनो शीखनो, रमनो ज्ञान आराम ।२४।

अरिहत सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार ।
मंगलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार ।२५।

घड़ी घडी पल पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव ।
नरभव सफलो जो करे, दान शील तप भाव ।२६।

२

सिद्धा जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय ।
कर्म मेल का आतरा, बूझे विरला कोय ।१।

कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान ।
दो मिलकर बहु रूप है, विछडचा पद निर्वाण ।२।

जीव करम भिन्न भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय ।
ज्ञानातम वैराग्य से, धीरज ध्यान जगाय ।३।

द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असख्य प्रमाण ।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान ।४।

गर्भित पुद्गल पिंड मे, अलख अमूर्ति देव ।
फिरे सहज भव चक्र मे, यह अनादि की टेव ।५।

फूल अतर घी दूध मे, तिल मे तेल छिपाय ।
यू चेतन जड करम संग, बध्यो ममत दुःख पाय ।६।

जो जो पुद्गल की दिशा, ते निज माने हंस ।
याही भरम विभावते, बढे करम को वस ।७।
रतन बंध्यो गठडी विषे, सूर्य छिप्यो घन माहि ।
सिंह पिंजरा मे दियो, जोर चले कछु नाहि ।८।
ज्यु बंदर मदिरा पियाँ, विच्छू डकित गात ।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यू कर्मां को उत्पात ।९।
कर्म संग जीव मूढ है, पावे नाना रूप ।
कर्मरूप मल के टले, चेतन सिद्ध स्वरूप ।१०।
शुद्ध चेतन उज्ज्वल दरब, रह्यो कर्म मल छाय ।
तप सयम सु धोवता, ज्ञान ज्योति बढ जाय ।११।
ज्ञान थकी जाने सकल दर्शन श्रद्धा रूप ।
चरित्र से ग्रावत रुके, तपस्या क्षपन स्वरूप ।१२।
कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चादी रूप ।
निर्मल ज्योति प्रगट भया, केवल ज्ञान अनूप ।१३।
मूसी पावक सोहगी, फूंका तणो उपाय ।
रामचरण चारो मिल्या, मैल कनक को जाय ।१४।
कर्मरूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चंद ।
ज्ञानरूप गुण चाँदनी, निर्मल ज्योति अमंद ।१५।
राग द्वेष दो बीज से, कर्म बंध की व्याध ।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध ।१६।
अवसर बीत्यो जात है, अपने वस कछु होत ।
पुण्य छता पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ।१७।
कल्पवृक्ष चिंतामणि, इण भव मे सुखकार ।

ज्ञान वृद्धि इन से अधिक, भवदु.ख भंजनहार ।१८।
राइ मात्र घट वध नही. देख्या केवलज्ञान ।
यह निश्चय कर जानके, तजिये प्रथम ध्यान ।१९।
दूजा भी नहि चितिये, कर्म वध वहु दोष ।
त्रीजा चौथा ध्याय के, करिये मन सतोष ।२०।
गई वस्तु सोचे नही, आगम वाछा नांहि ।
वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग माही ।२१।
अहो समदृष्टि जीवड़ा, करे कुटुव प्रतिपाल ।
अतर्गत न्यारो रहे, ज्यु धाय खिलावे वाल ।२२।
सुख दु ख दोनु बसत है, ज्ञानी के घट माहि ।
गिरि सर दीसे मुकर मे, भार भीजवो नाहि ।२३।
जो जो पुद्गल फरसना, निश्चे फरसे सोय ।
ममता समता भाव से, करम वंध क्षय होय ।२४।
वाध्या सोही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव ।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित्त चाव ।२५।
वाध्या विन भुगते नही, विन भुगत्या न छुडाय ।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ।२६।
पथ कुपथ घट वध करी, रोग हानि वृद्धि थाय ।
यूं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दु ख जग मे पाय ।२७।
सुख दिया सुख होत है, दु ख दिया दु ख होय ।
आप हणे नही अवर को, तो आपको हणे न कोय ।२८।
ज्ञान गरीवी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष ।
इन को कभी न छोड़िये, श्रद्धा शील सतोष ।२९।

सत मत छोड़ो हो नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय ।
सुख दुःख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय ।३०।
गोधन गज धन रतन धन, कंचन खान सुखान ।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूल समान ।३१।
शील रतन महोटो रतन, सब रतना की खान ।
तीन लोक की संपदा, रही शील मे आन ।३२।
शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग ।
शीले अरि करि केसरी, भय जावे सब भाग ।३३।
शील रतन के पारखु, मीठा बोले वैन ।
सब जग से ऊँचा रहे, जो नीचा राखे नैन ।३४।
तन कर मन कर वचन कर, देत न काहु दुःख ।
कर्म रोग पातक झडे, देखत वा का मुख ।३५।
पान खरंतो इम कहे, सुन तरुवर बनराय ।
अब के बिछुडे कब मिले, दूर पडेगे जाय ।३६।
तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र एक बात ।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ।३७।
वरस दिना की गाठ को, उत्सव गाय बजाय ।
मूरख नर समझे नही, वरस गाठ को जाय ।३८।

सोरठा—पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ कियो ।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नही ॥

दोहा

करज बिराना काढ के, खरच किया बहु नाम ।
जब मुद्दत पूरी हुवे, देना पडशे दाम ।१।

विन दिया छूटे नही, यह निश्चय कर मान ।
हँस हँस के क्यु खरचिये, दाम बिराना जान ।२।
जीव हिंसा करता थका, लागे मिष्ट अज्ञान ।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान ।३।
काम भोग प्यारा लगे, फल किम्पाक समान ।
मीठी खाज खुजावता, पीछे दुःख की खान ।४।
जप तप संजम दोहिलो, औषध कडवी जान ।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निर्वाण ।५।
डाभ अणी जल विंदुवो, सुख विषयन को चाव ।
भवसागर दुःख जल भर्यो, यह ससार स्वभाव ।६।
चढ उत्तग जहा से पतन, शिखर नही वो कूप ।
जिम सुख भीतर दुःख वसे, सो सुख भी दुःख रूप ।७।
जव लग जिसके पुण्य का, पहोचे नही करार ।
तव लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार ।८।
पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप ।
दाजे वन की लाकडी, प्रजले आपोआप ।९।
पाप छिपाया ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग ।
दावी दुबी ना रहे, रुई पलेटी आग ।१०।
वहु बीती थोडी रही, अब तो सुरत सभार ।
पर भव निश्चय जावनो, वृथा जन्म मत हार ।११।
चार कोस ग्रामान्तरे, खरची वांधे लार ।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार ।१२।
रज विरज ऊँची गई, नरमाइ के पान ।

पत्थर ठोकर खात है, करडाइ के तान ।१३।
अवगुन उर धरिये नही, जो होवे वृक्ष बबूल ।
गुण लीजे 'कालू' कहे नही छाया मे शूल ।१४।
जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय ।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन कहा से जाय ।१५।
गुरु कारीगर सारीखा टाचीं वचन विचार ।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार ।१६।
सतन की सेवा कियां, प्रभु रीझत है आप ।
जाका बाल खिलाइये ताका रीझत बाप ।१७।
भवसागर ससार मे, दीपा श्रीजिनराज ।
उद्यम करी पहोचे तीरे, बैठी धर्म जहाज ।१८।
निज आतम को दमन कर, पर आतम को चीन ।
परमातम को भजन कर, सो ही मत परवीन ।१९।
समझु शके पाप से, अणसमझू हरपत ।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म बधत ।२०।
समझ सार ससार मे, समझू टाले दोष ।
समझ समझ कर जीवडा, गया अनता मोक्ष ।२१।
उपगम विषय कषाय नो, सवर तीनो योग ।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दुख रोग ।२२।
रोग मिटे समता वधे, समकित व्रत आराध ।
निर्वैरी सब जीव को, पामे मुक्ति समाध ।२३।

॥ इति भूल चूक मिच्छामि दुक्कड ॥

सिद्ध श्री परमात्मा अरिगंजन अरिहंत ।
इष्टदेव वंदु सदा, भयभंजन भगवंत ।१।
अनंत चौवीशी जिन नमु, सिद्ध अनंता क्रोड़ ।
वर्तमान जिनवर सवे, केवली दो कोड़ी नव कोड़ ।२।
गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार ।
यथायोग्य वंदन करूँ, जिन-आज्ञा अनुसार ।३।

यहां एक बार नमस्कार मन्त्र का स्मरण करना चाहिए।

पंच परमेष्टी देवनो, भजन पुर पचान ।
कर्म अरि भाजै सभी, शिव सुख मंगल थान ।४।
अरिहंत सिद्ध सुमरु सदा, आचारज उवझाय ।
साधु सकल के चरन को, वंदू शीश नमाय ।५।
शासन नायक सुमरिये, वर्धमान जिनचंद ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानंद ।६।
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
जय गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार ।७।
श्रीजिन युगपद कमल में, मुज मन अलिय वसाय ।
कब उगे वो दिन करूँ, श्रीमुख दरिसन पाय ।८।
प्रणमी पदपंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत ।
कथन करूँ अब जीव को, किंचित् मुझ विरतंत ।९।

गाथा

हुं अपराधी अनादि को, जनम जनम गुना-किया भरपूर के ।
लूटिया प्राण छकाय नां, सेविया पाप अठारे करूर के ।
श्रीमुनिसुव्रत साहिबा ।

आज दिन तक इस भव मे और पहिले सख्यात असंख्यात अनत भवो मे, कुगुरु कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा प्ररूपना फरसना सेवनादिक सबधी पाप दोष लगा, उनका मिच्छामि दुक्कडं। मैंने अज्ञानपन से मिथ्यात्वपन से अव्रतपन से कषायपन से अशुभयोग से प्रमाद करके अपछंदा अविनीतपना किया, श्री अरिहत भगवंत वीतरागदेव, केवलज्ञानी, गणधरदेव, आचार्यजी महाराज, धर्माचार्यजी महाराज, उपाध्यायजी महाराज, साधुजी महाराज, आर्याजी महाराज, तथा सम्यग्दृष्टि स्वधर्मी श्रावक और श्राविका, इन उत्तम पुरुषो की तथा शास्त्र सूत्रपाठ अर्थ परमार्थ और धर्म सबधी समस्त पदार्थों की अविनय अभक्ति आशातना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से, द्रव्य क्षेत्र काल भाव से, सम्यक् प्रकार विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नही की, नही कराई, नही अनुमोदी, तो मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कड। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब मुझे माफ करो। मैं मन वचन काया करके क्षमाता हूँ।

दोहा

मैं अपराधी गुरुदेव को, तीन भवन को चोर।
ठगू बिराना माल मैं, हा हा कर्म कठोर।१।
कामी कपटी लालची, अपछदा अविनीत।
अविवेकी क्रोधी कठिन, महापापी * रणजीत।२।
जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।

* पढने वाचनें वाले यहाँ अपना नाम बोले।

नाथ तुमारी साख से, वारम्बार धिक्कार ।३।

मैने छकायपन से छकाय की विराधना की, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय, सन्नी, असन्नी, गर्भज, चौदह प्रकार के समुच्छिम आदि त्रस थावर जीवो की विराधना, मन वचन काया से की, कराई, अनुमोदी । उठते बैठते, सोते, हालते, चालते, शस्त्र वस्त्र मकानादिक उपकरण उठाते, धरते, लेते, देते, वर्तते वर्त्तावते, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा संबधी, अप्रमार्जना दु-प्रमार्जना सबंधी न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा सबधी और आहार विहार आदि अनेक प्रकार कि कर्त्तव्यो मे सख्यात असं-ख्यात और निगोद आश्रयी अनत जीवो के जितने प्राण लूटे उन सब जीवो का मैं पापी अपराधी हूँ । निश्चय करके बदले का देनदार हूँ । सब जीव मेरे प्रति माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो ।

देवसी राई, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी संबधी वारंवार मिच्छामि दुक्कडं । वारवार मैं क्षमाता हूँ । तुम सब क्षमा करो ।

खामेमी सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणइ ।१।

वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं छ काय का वैर बदला से निवृत्त होऊगा । समस्त चौरासी लाख जीवायोनि को अभय-दान देउगा, वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा ।

सुख दिया सुख होत है, दु ख दिया दु ख होय ।
आप हणे नही अवर को, आपको हणे न कोय ।१।

दूजा पाप मृषावाद–झूठ बोलना। क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, लोभ के वश, हास्य करके, भय के वश, मृषा (झूठ) वचन बोला, निंदा विकथा की, कर्कश कठोर मरम वचन बोला, इत्यादि अनेक प्रकार से मृषावाद (झूठ) बोला, बोलवाया और अनुमोदा, उनका मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कड।

थापनमोसा मैं किया, करी विश्वास घात।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नही जात।१।

मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कड। वह दिन धन्य होवेगा, जिस दिन सर्व प्रकार से मृषावाद का त्याग करूगा। वह दिन मेरा कल्याणरूप होवेगा।२।

तीसरा पाप अदत्तादान–विना दी हुई वस्तु चोरी करके लेना। यह बडी चोरी लौकिक विरुद्ध। अल्प चोरी मकान संबंधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यो मे उपयोग सहित या बिना उपयोग से। अदत्तादान, मन वचन काया से चोरी की, कराई और अनुमोदी तथा धर्म सवधी, ज्ञान दर्शन चारित्र और तप श्री भगवत गुरु-देव की बिना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होगा, जिस दिन सर्व प्रकार से अदत्तादान का त्याग करूँगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा।३।

चौथा मैथुन सेवन करने के लिये मन वचन और काया के योग प्रवर्त्ताया। नववाड सहित ब्रह्मचर्य नही पाला। नववाड मे अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई। मैंने मैथुन सेवन किया, दूसरो से सेवन करवाया और सेवन करने वाले को अच्छा समझा, उसका मन

वचन काया से मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड। वह दिन मेरा धन्य होगा, जिस दिन मैं नववाड सहित ब्रह्मचर्य शीलरत्न आराधूगा, याने सर्वथा सर्वथा प्रकार से काम विकार से निवर्तूंगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा।४।

पाचवां परिग्रह–सचित्त परिग्रह तो दास दासी, द्विपद, चतुष्पद, (पशु) आदि अनेक प्रकार के, और अचित्त परिग्रह–सोना, चादी, वस्त्र, आभूपण आदि अनेक प्रकार के है। उनकी ममता मूर्छा की, क्षेत्र घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के आभ्यन्तर परिग्रह को रक्खा, रखवाया और अनुमोदा, तथा रात्रि-भोजन, अभक्ष्य आहारादि संबधी पाप दोष सेव्या हो, वह मूझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कड। वह दिन मेरा धन्य होवेगा, जिस दिन सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग कर ससार का प्रपंच से निवर्तूंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा।५।

छठा क्रोध–क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दुखी की।६।

सातवा मान–अहंकार भाव लाया, तीन गारव और आठ मद आदि किया।७।

आठवा माया–धर्म सबंधी तथा ससार संबधी अनेक कर्त्तव्यो मे कपट किया।८।

नववा लोभ–मूर्च्छाभाव लाया, आशा तृष्णा वाछा आदि की।९।

दशवां–मनपसद वस्तु से स्नेह किया ।।१० ।

ग्यारहवा द्वेप–अपसद वस्तु देख कर उस पर द्वेष किया ।११।

बारहवा कलह–अप्रशस्त (खराब) वचन बोल कर क्लेश उत्पन्न किया ।१२।

तेरहवा अभ्याख्यान–झूठा कलक दिया ।१३।

चौदहवा पैशून्य–दूसरे की चुगली की ।१४।

पंद्रहवा परपरिवाद–दूसरे का अवगुणवाद (अवर्णवाद) बोला ।१५।

सोलहवा रति अरति–पाच इंद्रिय के २३ विषय और २४० विकार हैं। इनमे मनपसद पर राग किया और अपसंद पर द्वेप किया, तथा संयम तप आदि पर अरति की, तथा आरभादिक असयम और प्रमाद मे रति भाव किया ।१६।

सत्रहवा माया मृपावाद–कपट सहित झूठ बोला ।१७।

अठारहवा मिथ्यादर्शनशल्य–श्री जिनेश्वरदेव के मार्ग में शका कखा आदि विपरीत श्रद्धा परूपणा की ।१८। *

इस प्रकार अठारह पाप का द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से, जानते, अजानते, मन वचन और काया से सेवन किया, कराया और अनुमोदा, दीया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा इस भव मे पहिले के सख्यात असख्यात अनत भवो

* इत्यादि यहा अठारह पापस्थानो की आलोयणा विशेष विस्तार पूर्वक अपने से बने इस प्रकार कहनी ।

मे भवभ्रमण करते आज दिन तक + रागद्वेष, विषय, कषाय, आलस, प्रमाद आदि पौद्‌गलिक प्रपच, परगुण पर्याय की विकल्प भूल की, ज्ञान की विराधना की, दर्शन की विराधना की, चारित्र की विराधना की, चारित्राचारित्र की व तप की विराधना की। शुद्ध श्रद्धा, शील, सतोष, क्षमा आदि निज स्वरूप की विराधना की। उपशम, विवेक, सवर, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणा, ध्यान, मौन आदि व्रत पच्चक्खान दान, शील, तप वगैरह की विराधना की। परम कल्याणकारी इन वोलो की आराधना पालनादिक मन वचन और काया से नही की, नही कराई और नही अनुमोदी। छह आवश्यक सम्यक् प्रकार से विधि उपयोग सहित आराधा नही, पाला नही, फरसा नही, विधि उपयोग रहित निरादरपन से किया, किंतु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नही किया। ज्ञान के चौदह, समकित के पाच, बारह व्रत के साठ, कर्मादान के पद्रह, सलेषणा के पाच, एव निन्नाणवे अतिचार मे, तथा १२४ अतिचार मे, तथा साधुजी के १२५ अतिचार मे, तथा बावन अनाचार का श्रद्धानादिक मे विराधना आदि जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार आदि सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदना की, जानतां, अजानता मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कडं। मैने जीव को अजीव सद्द्‌ह्या परूप्या, अजीवको जीव सद्द्‌ह्या परूप्या, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म सद्द्‌ह्या

+ यहां बोलनें वाले वर्त्तमान जो सवत् महिना और तिथि हो वह कहे।

प्ररूप्या, तथा साधुजी को असाधु और असाधु को साधु सद्द्या प्ररूप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महासतियाजी की सेवा भक्ति मान्यता आदि यथाविधि नही की, नही कराई, नही अनुमोदी, तथा असाधुओ की सेवा भक्ति मान्यता आदि का पक्ष किया, मुक्तिमार्ग मे ससार का मार्ग, यावत् पच्चीस मिथ्यात्व सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, मन वचन और काया से, पच्चीस कषाय सबधी, पच्चीस क्रिया सबंधी, तेतीस आशातना सबंधी, ध्यान के १६ दोष, वदना के ३२ दोष, सामायिक के ३२ दोष, पौषध के १८ दोष सबधी मन वचन और काया से जो कोई पाप दोष लगा लगाया अनुमोदा, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार बारबार मिच्छामि दुक्कडं। महामोहनीय कर्म-बध का तीस स्थानक को मन वचन और काया से सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, शील की नववाड तथा आठ प्रवचन माता की विराधनादि, श्रावक के इक्कीस गुण और बारह व्रत की विराधनादि मन वचन और काया से की, कराई, अनुमोदी, तथा तीन अशुभ लेश्या के लक्षणो की और बोलो की विराधना की, चर्चा वार्त्ता वगैरह मे श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नही माना, अछते की थापना की, छते की थापना नही की और अछते की निषेधना नही की, छते की थापना और अछते की निषेधना करने का नियम नही किया, कलुषता की, तथा छ प्रकार के ज्ञानावरणीय वध का बोल, ऐसे छ प्रकार के दर्शनावरणीय वध का बोल, आठ कर्म की अशुभ प्रकृतिबध का पचपन कारणो से, पाप की बयासी प्रकृत्ति बाधी,

वंधाई, अनुमोदी, मन वचन काया करके उनका मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कडं। एक एक वोल से लगाकर कोडाकोडी यावत् सख्याता असख्याता अनंता वोलो मे से जानने योग्य वोलो को सम्यक् प्रकार जाना नही, सद्दह्या और परूप्या नही, तथा विपरीतपन से श्रद्धा आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से, उनका मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कडं।

एक एक वोल से यावत् अनंता अनता वोलो मे छोडने योग्य वोल को छोडा नही, उनको मन वचन काया से सेवन किया, सेवन कराया और अनुमोदा, उनका मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कडं। एक एक वोल से लगा कर जाव अनता अनंता वोलो मे आदरने योग्य वोलो को आदरा नही, आराधा नही, पाला नही, फरसा नही, विराधना खंडना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से, उनका मुझे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कडं। श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञा मे जो जो प्रमाद किया और सम्यक् प्रकार उद्यम नही किया, नही कराया, नही अनुमोदा, मन वचन काया करके, त । अनाज्ञा मे उद्यम किया, कराया, अनुमोदा। एक अक्षर के अनन्तवे भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न-मात्र मे भी भगवत महाराज आपकी आज्ञा से न्यूनाधिक विपरीत प्रवर्त्ता हूँ, तो उनका मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड ।

दोहा

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करो फरसना सोय ।
अनजाने पक्षपात मे, मिथ्या दुष्कृत मोय ।१।
सूत्र अर्थ जानु नही, अल्प बुद्धि अनजान ।
जिनभाषित सब शास्त्र का, अर्थ पाठ परमान ।२।
देव गुरु धर्म सूत्र को, नव तत्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जो कह्या, मिथ्या दुष्कृत मोय ।३।
हूं मगसेलियो हो रह्यो, नही ज्ञान रस भीज ।
गुरु सेवा न करी शकुं, किम मुझ कारज सीज ।४।
जाने देखे जे सुने, देवे सेवे मोय ।
अपराधी उन सबन को, बदला देशु सोय ।५।
गवन करूँ बुगचा रतन, दरब भाव सब कोय ।
लोकन मे प्रगट करू, सूई पाई मोय ।६।
जैनधर्म शुद्ध पाय के, वरतु विषय कषाय ।
यह अचंभा हो रह्या, जल मे लागी लाय ।७।
जितनी वस्तु जगत मे, नीच नीच से नीच ।
सबसे मैं पापी बुरो, फँसु मोह के बीच ।८।
एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तलवार ।
उठ्यो थो जिन भजन को, बीच मे लिनो मार ।९।

सवैयो

मैं महापापी छाड के संसार छार, छार ही का विहार करूँ, अगला कुछ धोय कोच, फेर कीच बीच रहूं, विषय सुख चारु मन्न प्रभुता वधारी है। करत फकीरी ऐसी अमीरी की

आस करूँ, काहे को धिक्कार सिर पगडी उतारी है ।१०।

दोहा

त्याग-न कर संग्रह-करूँ, विषय वमन जिम आहार ।
तुलसी ए मुझ पतित को, वारवार धिक्कार ।११।
राग द्वेष दो वीज है, कर्म वंध फल देत ।
इनकी फासी मे वध्यो, छूटू नही अचेत ।१२।
रतन वध्यो गठड़ी विषे भानु छिप्यो घन मांहि ।
सिंह पिंजरा मे दियो, जोर चले कछु नाहि ।१३।
वुरा वुरा सवको कहे, वुरा न दीसे कोय ।
जो घट शोधु आपनो, तो मोसम वुरो न कोय ।१४।
कामी कपटी लालची, कठण लोह-को दाम ।
तुम पारस परसंग थी, सुवरण थाशु स्वाम ।१५।

श्लोक

मै जपहीन हूँ तपहीन हूँ, प्रभु हीन सवर समगत ।
हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागतं । प्रभु
आयो तुम शरणागतं ।१६।

दोहा

नही विद्या नहीं वचन वल, नही धीरज गुन ज्ञान ।
तुलसीदास गरीव की, पत राखो भगवान ।१७।
विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाउ चित्त समाध ।१८।
कहेवा मे आवे नही अवगुण भर्या अनंत ।
लिखवा में क्यू कर लिखू, जाणो श्री भगवंत ।१९।

आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि ।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि ।२०।
पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय ।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दु ख जग मे पाय ।२१।
बाध्या बिन भुगते नही, बिन भुगत्या न छूटाय ।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ।२२।
हूं अविवेकी मोहवश, आख मीच अंधियार ।
मकडी जाल बिछाय के, फसु आप धिक्कार ।२३।
सर्व भक्षी जिम अग्नि हू, तपियो विषय कषाय ।
स्वच्छन्दी अविनीत मैं, धर्मी ठग दु खदाय ।२४।
कहा भयो घर छाड के, तज्यो न माया संग ।
नाग तजी जिम काचली, विप नही तजियो अग ।२५।
आलस विपय कषाय वश, आरभ परिग्रह काज ।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज ।२६।
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवत वंदन भाव ।
राग द्वेष उपशम करी; सब से खमत खमाव ।२७।
पुत्र कुपुत्र जो मै हुओ, अवगुण भर्यो अनत ।
अपनो विरुद विचार के, माफ करो भगवत ।२८।
शासनपति वर्द्धमानजी, तुम लग मेरी दोड ।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत और न ठौर ।२९।
भव भ्रमण संसार दु ख, ताका वार न पार ।
निर्लोभी सत गुरु बिना, कौन उतारे पार ।३०।
भवसागर ससार मे, दीपा श्री जिनराज ।

उद्यम करी पहोचे तीरे, बैठी धर्म जहाज ।३१।
पतित उद्धारन नाथजी, अपनो विरुद विचार ।
भूल चूक सब माहरी, खमिये वारवार ।३२।
माफ करो सब माहरा; आज तलक ना दोष ।
दीनदयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सतोष ।३३।
देव अरिहत गुरु निर्ग्रंथ, संवर निर्जरा धर्म ।
केवली भाषित शास्त्र है, येही जैन मत मर्म ।३४।
इस अपार ससार मे, अवर शरण नही कोय ।
या ते तुम पद कमल ही, भक्त सहायी होय ।३५।
छूटू पिछला पाप से, नवा न बाधु कोय ।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ मोय ।३६।
आरभ परिग्रह त्यजी करी, समकित व्रत आराध ।
अन्त समय आलोय के, अनशन चित्त समाध ।३७।
तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्य मन्न ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ।३८।

श्री पच परमेष्टी भगवन गुरुदेव महाराजजी आपकी आज्ञा है, सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, संयम, सवर, निर्जरा और मुक्तिमार्ग यथा शक्ति से शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने, सेवने की आज्ञा है । वारंवार शुभ योग संवधी, सज्भाय ध्यानादिक अभिग्रह, नियम, पच्चक्खाणादिक करने, करावने की, समिति गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारे आज्ञा है ।

निश्चय चित्त शुद्ध मुख पढत, तीन योग थिर थाय ।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित्त भाय ।१।

अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक जो होय ।
अरिहत सिद्ध आतम साख से, मिथ्या दुष्कृत-मोय ।२।
भूल चूक मिच्छामि दुक्कड ।

इति श्री श्रावक लालाजी रणजीतसिंहजी कृत बृहदालोयणा संपूर्ण

बहुश्रुत श्री समर्थ गुणाष्टक

(रचयिता–प० श्री घेवरचन्द्रजी बाँठिया 'वीरपुत्र')

ऐदयुगीनमुनिषु ह्यखिलेषु सत्सु,
प्राप्तं बहुश्रुतपद विमल तु येन ।
ज्ञानादि रत्न चय चञ्चित चेतसं त ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमहं नमामि ।१।
नो दृश्यते तवसमो मुनिमण्डलेऽस्मिन् ।
गूढार्थ त्रिजिनगिरा परमागमज्ञ. ।।
उत्कृष्टसयमधरो गुणसागरश्च ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमह नमामि ।२।
आराधना विदधतोत्कट भाव भक्त्या ।
बद्ध त्वया खलु शुभं जिन नामकर्म ।।
मन्ये त्वहं जिनगिरामवलम्ब्य सुज्ञं ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमह नमामि ।३।
आगत्य तत्र भवता चरणारविन्दे ।

नव्या. पुरातनजना· विबुधा परेच ।।
पृष्ट्वा समाहितधियो नितरा भवन्ति
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमह नमामि ।४।
प्रश्नोत्तरं वितरता भवतामपूर्वाम् ।
शैली विलोक्य विबुधाश्चकिता. भवन्ति ।।
तुष्टा स्तुवन्ति भवतोऽमित शास्त्रबोधम् ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमहं नमामि ।५।
दृष्ट्वा भवन्तमृजुक मदमानिवर्ग· ।
सद्य स्वय भवति खल्वभिमानहीन ।।
श्रीमन्तमेव शरणी कुरुते विनीत. ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमह नमामि ।६।
उग्रं विहारमनिशं विधिवद् विधाय ।
धर्मोपदेशमनिश विधिवत्प्रदाय ।।
भव्यान् करोति जिनमार्गरतान् सदैव ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमहं नमामि ।७।
सशुद्धदर्शनधर परमार्थ विज्ञम् ।
शीलाढ्यमात्मदमिनं गुणिन गुणज्ञम् ।।
शान्तं प्रसन्नवदनं करुणावतारम् ।
प्राज्ञ समर्थगुरुराजमहं नमामि ।८।
भक्तघेवरचन्द्रेण, भृगेण ते पदाब्जयो· ।
रचितं वीरपुत्रेण, श्रीसमर्थगुणाष्टकम् ।
विन्दुमात्रमिदसिन्धोर्भवदीय गुणाष्टकम् ।
य पठेच्छृणुयाद् वापि शिव स लभते ध्रुवम् ।९।

२

पीयूष वर्षि नयन द्वयमास्य पद्मं ।
वाचं विमुञ्चति मधुप्रमिताञ्च यास्य ।
त ज्ञानचन्द्रगणि गच्छ सरोजसूर्यं ।
पूज्य समर्थमुनिराज मह नमामि ।१।
ज्ञान यदीयममलेन्दु विकाशिशुद्धे ।
चित्ते विहायसि विभात्युदितं सदैव ॥
विध्वस्तमोहपटल प्रबलान्धकारं ।
पूज्य समर्थमुनिराजमहं नमामि ।२।
यस्य प्रसादमधिगत्य समस्त ताप–
पाप प्रतापमभिहत्य जनो विभाति ॥
नित्य वितत्य सुखमत्यधिक तमार्यं ।
पूज्य समर्थमुनिराज मह नमामि ।३।
शान्त नितान्तमतिकान्त मुख त्वदीय ।
मालोक्य लोक इहलोकशुच जहाति ॥
प्राप्नोति लोकपरलोकसुखं समर्थं ।
पूज्य समर्थमुनिराजमहं नमामि ।४।
पर्यायतो रवि रिहैत्य तमो निहन्ति ।
चन्द्रोऽपि किन्तु समये न च सर्वदा तु ।
त्व सर्वदा तु जनताजडता निहति ।
मन्ये त्वमत्र भुवनेऽसि नवीन भानु. ।५।
यत्ते पवित्रमति चित्र चरित्रमत्र ।
वित्रासयत्यखिलदोषदल सदैव ।

शक्तो न वक्तुमिह कोऽपि जनो गुणान् ते ।
पूज्य समर्थमुनिराजमहं नमामि ।६।
निर्मोहमानजितसग निरस्त दोष ।
मध्यात्मतत्वनिरतं नितरां सदैव ॥
कन्दर्पदर्पदलनेऽतितरां समर्थं ।
पूज्यं समर्थमुनिराजमहं नमामि ।७।
युक्ति प्रयुक्तिरसयुक्त सुबोध रीति-
माधाय धर्म, विधिबोधविधौ समर्थः ।
एक स्त्वमेव भुवने त्वमिवासि नूनं ।
भवन्तमानमति 'घेवरवीरपुत्र' ।८।

२

चिन्तामणिर्यत्तुलना न धत्ते ।
यन्मूल्यकं पाश्र्वमणिर्न दत्ते ॥
एतादृशं जंगम रत्नमेकम् ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय. ।१।
ज्ञानेन शीलेन गुणेन वाचा ।
ध्यानेन मौनेन च सयमेन ।
शौर्येण वीर्येण पराक्रमेण ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय ।२।
श्रीज्ञानचन्द्रीय विशाल गच्छे ।
महत्सु सत्स्वन्य मुनीश्वरेषु ।
सम्प्राप्तवान् "पण्डितराट्" पदं त्वं ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय. ।३।

शान्तश्च दान्तश्च बहुश्रुतश्च ।
शास्त्रस्य गूढार्थ रहस्य वेदी ।।
अज्ञानहन्ता परमोपदेष्टा ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय ।४।
भ्रान्त्वार्य भूमौ सतत ददाति ।
धर्मोपदेश परमार्थवृत्त्या ।
करोति भव्यान् जिनधर्म रक्तान् ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय. ।५।
द्रव्यान्धकार हरतोऽब्जसूर्यो ।
भावान्धकारं हरसेत्वमेक: ।।
अखण्डधामाऽति सदा प्रकाश ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय: ।६।
सौम्य मनोज्ञ परमं सुशान्तम् ।
भव्य विशालं च मुखारविन्दम् ।
दृष्ट्वात्वदीयं तु भवन्ति भक्त. ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय: ।७।
अलौकिकोऽनुत्तर आशुप्रज्ञ· ।
विनीतको विज्ञतमो विशुद्ध ।।
त्यागी विरागी च गुणी गुणज्ञ. ।
समर्थमल्लो मुनिरद्वितीय. ।८। ।
कृत घेवरचन्द्रेण, श्री समर्थगुणाष्टकम् ।
भक्त्या नित्यं पठेत् यस्तु, शीघ्रं सलभते शिवम् ।९।

४

आए समर्थ मुनि आए, हो भव्यो के हृदय विकसाए ।
जो श्री समर्थ गुण गाए, हो समकित निर्मल हो जाए ।ध्रुव।
आगम ज्ञाता वहुश्रुत पण्डित, सभी आपको कहते ।
सूत्र न्याय से सबके मन का, समाधान नित करते ।
हाँ कोई न खाली जाए । हो० ।१।
तर्क शक्ति अद्‌भूत है ऐसी, कोई न वादी टिकते ।
उदाहरण चुन ऐसे दे कि, फिर प्रति प्रश्न न उठते ।
हाँ कटुता कभी न लाए । हो० ।२।
क्रिया आपकी इतनी ऊँची, क्रिया-पात्र कहलाये ।
दर्शन पा चौथे आरे की, स्मृति सभी को आए ॥
हाँ बाल वृद्ध हुलसाए । हो० ।३।
नाम आपका सुन्दर वैसे, गुण भी आप मे मिलते ।
सेवा विनय क्षमा आदि मे, स्थान अनुपम रखते ।
हाँ गर्व न किंचित् लाए । हो० ।४।
ज्ञान क्रिया दोनो का आप मे, योग मिला है भारी ।
दौड़ दौड सेवा मे आते, श्रद्धालु नर नारी ।
हाँ शीष स्वत झुकजाए । हो० ।५।
जिन शासन के सत्य रूप की, झाकी आप मे मिलती ।
आप सरिखो से ही ऐसी, रीति नीति सब निभती ।
हाँ धर्म दीपने पाए । हो ।६।
दीप्ति अखंडित ब्रह्मचर्य की, ढकी अग्नि ज्यो दमके ।

ज्ञानचन्द्र मुनि सम्प्रदाय मे, सूरज बनकर चमके ।
हाँ कीर्ति बहुत ही पाए ।हो० ।७।
पा कर आपको लगता जैसे, मैंने सब कुछ पाया ।
"पारस" ने चरणो मे आपके, तन मन सभी चढाया ।
हाँ दया आपकी चाहे । हो० ।८।

५

वन्दन हम करते नित उठ कर, श्री समर्थ स्वामी को ।
सन्त शिरोमणि संघ के नायक, ज्ञान-गच्छ स्वामी को ॥
आगम ज्ञाता बहुश्रुत पडित, भव्यो के तारणहारे ।
सूत्र न्याय से समाधान कर, शका दूर निवारे ।
जडावनन्दन, दु खनिकन्दन, मोक्ष पन्थ गामी को ।१।
जिनचरणो मे प्रतिवादी ने, अपना मद विसराया ।
जिन चरणो मे सन्त सती ने, अपना शीष झुकाया ।
मुलतान सुत जाति कुल युक्त, धन्य मोक्ष कामी को ।२।
उत्कृष्ट क्रिया के आराधक, साधक सत्य जिनवाणी ।
ऐसी नीति रीति पालक, नही है कोविद ज्ञानी ।
धर्म दीपावे कीर्त्ति पावे, शिव पदवी कामी को ।३।
जैसा सुन्दर नाम आपका, वैसे गुण के धारी ।
सेवा विनय क्षमा आदि मे, स्थान अनुपम भारी ।
समता धारी ममता मारी, सकल श्रेय कामी को ।४।
युग्म रूप से ज्ञान क्रिया का, योग मिला है भारी ।

जैसी कथनी वैसी करनी, मिली है शक्ति न्यारी ।
महा योगिश्वर गुणरत्नाकर, ब्रह्म तेज धामी को ।५।
मुखारविन्द से जिनवाणी का, जो देते सन्देश ।
आत्मोत्थान मे नही सशय है, जो आवे लवलेश ॥
सत्पथ दर्शक धर्म के रक्षक, भव्य हित कामी को ।६।
ज्ञानचन्द्र मुनि सम्प्रदाय का, गौरव बढ़ता जावे ।
चिरायु हो समर्थ मुनिवर, धर्म की ज्योति जगावे ॥
गावे "रतन" कर जोडी वन्दन, समर्थ गुण कामी को ।७।

॥ जैन स्वाध्यायमाला सम्पूर्ण ॥

卐 संघ के प्रकाशन 卐

	मूल्य	पोस्टेज
१ भगवती सूत्र भाग १	५–००	१–८३
२ मोक्षमार्ग ग्रंथ	५–००	१–६६
३ उत्तराध्ययन सूत्र	२–००	०–४४
४ उववाइय सूत्र	२–००	०–४६
५ जैन स्वाध्यायमाला	२–००	०–४६
६ अंतगडदसा सूत्र	१–००	०–२५
७ नन्दी सूत्र	१–००	०–२०
८ दशवैकालिक सूत्र	१–२५	०–३४
९ सिद्ध स्तुति	०–३५	०–०८
१० स्त्रीप्रधान धर्म	०–२५	०–०८
११ सुखविपाक सूत्र	०–२०	०–०८
१२ प्रतिक्रमण सूत्र	०–१६	०–०८
१३ सामायिक सूत्र	०–०७	०–०५
१४ सूयगडांग सूत्र अप्राप्य	१–००	०–००
१५ आत्मसाधना संग्रह	१–२५	०–३५

(श्री मोतीलालजी मांडोत की)

भगवती सूत्र भाग २ छप रहा है

—ः सम्यग्दर्शन ः—

अ. भारतीय श्री साधुमार्गी जैन संस्कृति रक्षक संघ के मुख-पत्र 'सम्यग्दर्शन' के ग्राहक बने। निर्ग्रंथ संस्कृति के प्रचारक, जैनतत्व ज्ञान के प्रकाशक और विकृति के अवरोधक, इस पत्र को अवश्य पढ़ें। आपके सम्यग्ज्ञान मे वृद्धि होगी, आप संस्कार और विकार का भेद जान सकेंगे। वार्षिक मूल्य केवल ६)
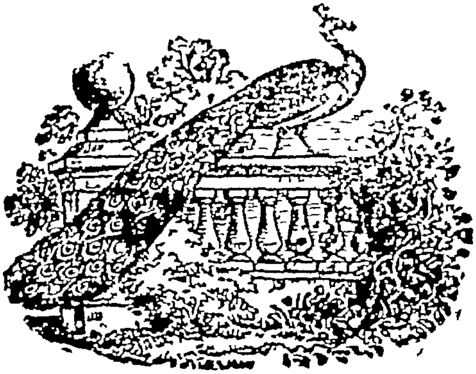
—सम्यग्दर्शन कार्यालय सैलाना (मध्य-प्रदेश)